ॐ

अरुण संहिता - लाल किताब

2021 संस्करण (संशोधित)

HKT Book Shop

Sree Chaitanya Gaudiya Math (Math Mandir)
Sector 20- B Chandigarh 160020
www. astroyoga.org / E-mail: yogacollege@gmail.com
and www.thecognitivesciences.com
160020 भारत (91-(0172) 2707575

ॐ

अरुण संहिता - लाल किताब

2021 संस्करण (संशोधित)

हरे कृष्ण ट्रस्ट

एच.के. टी. प्रकाशन, HKT Book Shop

Sree Chaitanya Gaudiya Math (Math Mandir) Sector 20- B

Chandigarh 160020 भारत

Chant Hare Krishana and Celebrate Life

www. thecognitivesciences.com

e-mail: yogacollege@gmail.com

अरुण संहिता - *लाल किताब*
ज्योतिष

International Standard Book Nunber
ISBN 81-86828-09-5

2021 संस्करण (संशोधित)

1989, 1992,1999, 2005, 2007,2011,2015 संस्करण

वृहद् साईज़ एवं लिपि

19th Edition 2021

© *कापी* राईट
एच.के.टी. प्रकाशन चण्डीगढ़

इस ग्रन्थ को कापी राईट एक्ट के अन्तर्गत रजिस्टर्ड करवाया गया है। इसके पुराने संस्करणों एवं इसको इसी रुप में एवं इसके ले आऊट एवं लाईन झाईंग तथा भाषा को प्रकाशित करने वाले के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की जायेगी ।

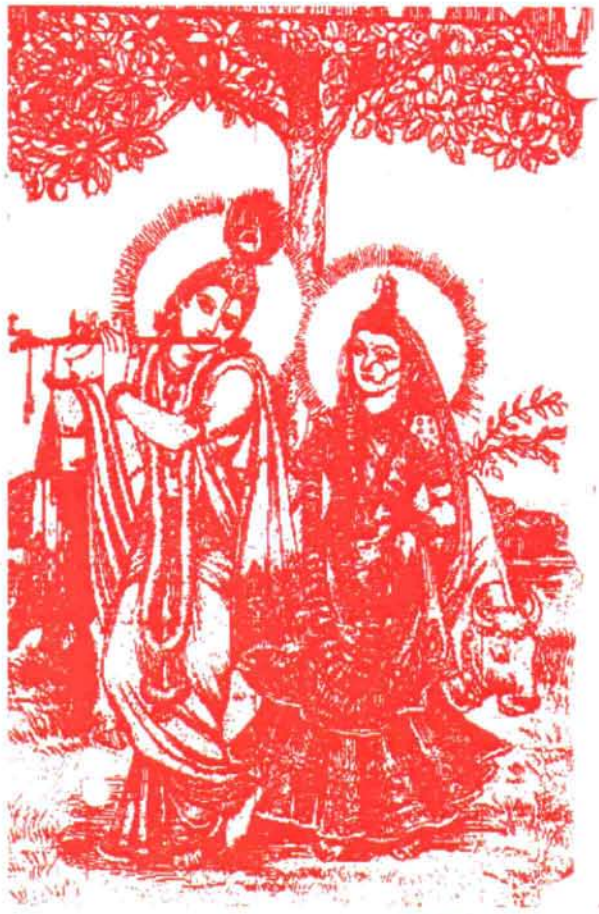

एस. के. टी. प्रकाशन
चण्डीगढ़
☎ + 91 - 9417007075

Font used in this book Chankaya/Natraj and allied legally purchased by the h.k.t. publications.

Price Rs 1200.00
Rs Twelve hundred only.

बीमारी की दवाई भी इलाज़ है,
मगर मौत का कोई इलाज़ नहीं,
दुनियावी हिसाब-किताब है,
कोई दावा खुदाई नहीं ।

इल्म सामुद्रिक की ज्ञान की नीव पर आधारित

ज्योतिष की

सहायता से हाथ रेखा के द्वारा दुरुस्त की हुई जन्म कुण्डली से
ज़िन्दगी के हालात देखने के लिए

अरुण संहिता

लाल किताब

आवाज़ सुनता हर किसी ना ही भुला कोई हो।

सबसे पहले याद उसी की फिर सभी दुनिया की हो॥

Arun Samhita Lal Kitab
CD
can also download from
www.thecognitivesciences.com

अरुण संहिता - लाल किताब

अष्टादश संस्करण

यह हर्ष का विषय है कि अरुण संहिता लाल किताब का पिछले चार दशकों में अष्टादश संस्करण वर्ष 2018 में प्रकाशित किया जा रहा है। पिछले तीन दशकों से अरुण संहिता लाल किताब का software भी निकाला गया। ज्योतिष ग्रन्थों में प्रभु कृपा से यह H.K.T. प्रकाशन की उपलब्धि है कि इस ग्रन्थ का बृहद् लिपि रूप में संस्करण निकाला गया। इस ग्रन्थ में काफी संशोधन करने के उपरान्त H.K.T. मण्डल ने इस ग्रन्थ को प्रकाशित करने में एक C.D. उपलब्ध करवाई । अब इस C.D. में एक जो इस पुस्तक के साथ संलग्न है, एक code दिया गया है इस के माध्यम से व्यक्ति इस web site www. thecognitivesciences.com पर अपनी जन्म वर्ष संबंधी जानकारी देने पर कुछ विशेष प्रश्न पूछ सकता है। इसका उत्तर H.K.T प्रकाशक मण्डल के वरिष्ठ संरक्षक अपने अनुभव एवं इस ग्रुप का सहयोग करने के साथ प्रयत्नशील है, को सप्ताह के अन्दर मेल द्वारा जानकारी दी जायेगी। आवश्यकता अनुसार शंका समाधन का भी प्रवधान है, केवल e-mail के माध्यम द्वारा। विषय केवल साधना संबंधित जैसे आध्यात्मिक विकास एवं जीवन की योग साधना में विकास के लिये उपयोगी तत्व। इसे प्रभु अनुग्रह ही कहें या प्रकृति की लीला कि इस संस्करण के साध इस प्रकार की व्यवस्था की जा रही है। इस तरह जन साधरण को इस विद्या का अवश्य उपयोग प्राप्त हो सकेगा। H.K.T के वरिष्ठ मण्डल संरक्षक जो पिछली लगभग 5 दशकों का अनुभव है उनका जन साधारण उपयोग कर सकता है।

त्रिदण्डी स्वामी भक्ति विचार विष्णु महाराज
स्वामी कृष्ण सत्यार्थी, प्रो0 आर सी वर्मा
अनादी कृष्ण दास, डॉ0 अरुण,
कृष्णा चैतन्य : एच.के.टी. प्रकाशन

प्राक्कथन

सूर्य देव ज्योतिष के आदि आचार्यों में हैं। इन्ही के सारथी अरुण हैं, जिन्होंने इस पुस्तक के मूलसूत्रों की रचना की ऐसी किम्वदन्ती है। अरुण से यह ज्ञान लंकापति रावण ने ग्रहण किया।। रावण से यह अरब देश के एक आद नामक स्थान पर पहुँचा। जहाँ इस ग्रन्थ का अरबी एवं फारसी भाषा में अनुवाद हुआ। अभी भी कुछ लोग यह मानते है कि यह पुस्तक फारसी में आज भी उपलब्ध है। परन्तु कालवश यह ग्रन्थ लुप्त प्रायः हो चुका था।

अन्ततः इस पुस्तक का आविर्भाव इस आधुनिक युग के एक ऋषि द्वारा हुआ। क्योंकि यह पुस्तक उर्दू भाषा में लिखी गई है, इस कारण इस लुप्त-ज्ञान के प्रसार के लिए इसे राष्ट्रभाषा हिन्दी में अनुवादित किया गया है।

इस ज्ञान गंगा को जनहित तक पहुँचाने का कार्य इसलिए भी किया गया क्योंकि कुछ ज्योतिष प्रेमी इस ग्रन्थ के अप्राप्य होने के कारण इसका सदुपयोग नहीं कर पा रहे हैं।

हमारी चेष्टा है कि इस ग्रन्थ को अन्य महान् ग्रन्थ की तरह सभी इच्छुक सज्जनों को उपलब्ध करवाया जाये ताकि इस के रहस्य को समझा जा सके तथा अपने जीवन के भविष्य को सफल एवं उज्जवल बनाया जाये। हमें आशा है कि यदि इस पुस्तक का बार-बार अध्ययन किया जाये तो इसका रहस्य स्वयं ही ज्ञात हो जायेगा जैसे कि इस ग्रन्थ के शुरू में इस बात पर बल दिया गया है "इसको उपन्यास की भांति बार-बार पढ़ने से यह पुस्तक अपना रहस्य स्वयं खोल देगी"। इस प्रकार जन साधारण से अनुरोध है कि यदि इस विषय में आंशिक भी रुचि हो तो इसकी प्रति सुरक्षित रख लें क्योंकि निकट भविष्य में हमारी योजना है कि इस ग्रन्थ पर गोष्ठियाँ भी बुलाई जायेंगी ताकि इसका लाभ जन साधारण को हो सके।

वह महान् पुरुष जिन्होंने इस यज्ञ में अपने भाग की आहुति डाली वे धन्यवाद के पात्र हैं।

लोक कल्याण हेतु समर्पित इस ग्रन्थ में फलित ज्योतिष व सामुद्रिक शास्त्र एवं हस्त रेखा का अपूर्व समन्वय किया गया है। यह ज्ञान का सागर अमूल्य रत्नों को अपने में समाए हुए है।

दो शब्द

अनादि काल से मनुष्य इसी चेष्टा में रहा है कि जीवन को कैसे आनन्दमय बनाया जाये और भविष्य को कैसे जाना जाये, इस प्रकार देखा जाता है कि जो वस्तु मनुष्य को ज्ञात नहीं है, उसको जानने की इच्छा हमेशा से इसमें रही है। विभिन्न समय में विभिन्न पद्धतियों का भी प्रयोग किया गया, इस को कार्यान्वित करने के लिए। जैसे कि ज्योतिष प्रणाली, हस्तरेखा विज्ञान, टैरो कार्ड, डाईस प्रक्रिया, आई चींग एवं प्रभा मण्डल (aura) से समझने की विधि या विभिन्न योगियों द्वारा सुक्ष्म शक्तियों का प्रयोग किया जाना इसका प्रमाण है। महाभारत में इसका उदाहरण भी उपलब्ध है, संजय को दिव्य चक्षु प्रदान किये जाने का, जिससे वह घट रही घटनाओं को देख सका।

ज्योतिष विज्ञान में भाग्य और पुरुषार्थ का समन्वय करते हुये जीवन के विषय को दर्शाया गया है। जैसे कि अरुण संहिता में लिखा है :- *बन्द मुट्ठी का खजाना, बाकी जब रहना नहीं। तदबीर अपनी खुद ही उठती, राज बन आता नहीं।*

अरुण संहिता में यह पक्ष महत्वपूर्ण है कि ज्योतिष प्रणाली से हम भविष्य की घटनाओं को जान सकते हैं। इसके इलावा विपरीत परिस्थितियाँ होने से इसमें उपायों का विधान भी है, जिससे हम प्रतिकूल परिस्तिथि को अनुकूल बना सकें।

यह ज्योतिष की एक स्वतंत्र प्रणाली है जो मानव जीवन के विभिन्न पहलूओं पर जैसे कि विवाह, सन्तान, व्यवसाय, आय, स्वास्थ्य और आयु आदि- आदि पर विस्तृत विचार करती है।

इसे ईश्वर की अनुकम्पा ही कहेंगे कि इस संहिता के प्रथम संस्करण की समित प्रतियों का हाथो हाथ स्वागत हुआ, अब हमें अरुण संहिता - लाल किताब ज्योतिष का दूसरा संस्करण निकालते हुये अति हर्ष हो रहा है। पाठकों के अनेकों पत्रों को पढ़ने से मालूम होता है कि अनेकों लोगों ने इस अरुण संहिता-लाल किताब के द्वारा अपने भविष्य को अनुकूल परिस्थितियो में लाने की चेष्टा की और वे सफल भी हुये। ज्योतिष पर जो कार्य हुये उनके विषय में हमें सूचनायें मिली है जिससे इस बात का सुखद् अनुभव होता है कि इस ग्रंथ का सदुपयोग हुआ है और आशा है कि भविष्य में भी होता रहेगा।

इस ज्ञान का लाचार व्यक्तियों पर तथा चिन्ताजनक परिस्थितियों में आम जनता का शोषण हेतू दुरुपयोग करने से दुरुपयोग करने वाले के मानसिक पटल तथा उसके कर्म विधान पर ही प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है एवं उसका व्यक्तित्व अस्त-व्यस्त हो सकता है।

हमारी यही चेष्टा है कि इसमें वर्णित उपाय तभी बताये जायें जब ज्योतिष के विषय में जानकारी पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाये।

इस ग्रन्थ के विषय में एक और बात स्पष्ट करना चाहेंगे कि इस को प्रकाशित करने में विभिन्न शक्तियों का उपयोग कई योगी- जनों एवं विशेषज्ञों की सहायता से किया गया। इसके पीछे ध्येय केवल यही है कि जन साधारण को इसका लाभ प्राप्त हो सके। इसके अतिरिक्त शीघ्र ही अरुण संहिता - लाल किताब हस्त रेखा विज्ञान का पूर्ण संस्करण ईश्वर अनुकम्पा से जन साधारण तक पहुँच जायेगा।

ॐ नमो नारायणय
अनादि कृष्ण दास
हरे कृष्ण ट्रस्ट चण्डीगढ़
द्वितीय संस्करणसीमित प्रतिलियॉं
हरे कृष्ण ट्रस्ट चण्डीगढ़

नवम् संस्करण

इसे प्रभु की कृपा अनुकम्पा ही कहें कि इस ग्रन्थ की प्रतिलिपियां सीमित समय में पाठकों के पास पहुँच गई हैं। जिसके फलस्वरूप इसका नवम् संशोधित संस्करण निकाला जा रहा है। सम्पादक मण्डल ने इस ग्रन्थ की भाषा को सरल बनाने का यथा सम्भव प्रयास किया है। जिससे पाठकों को ग्रन्थ के समझने में सुविधा होगी।

यहाँ पर हम यह भी कहना चाहेंगें कि इस श्रृंखला में और भी ग्रंथ निकाले गए हैं यथा - सामुद्रिक ज्ञान, हस्त रेखा एवं अरुण संहिता लाल किताब (चथुर्त भाग) यह सब इसी ग्रन्थ से सम्बंधित हैं। इसके अतिरिक्त प्रो०आर० सी० वर्मा ने लाल किताब एवं भारतीय ज्योतिष पर तुलनात्मक अध्ययन भी किया है। जो पुस्तक रूप में उपायों सहित प्रकाशित किया गया है। इसके साथ डा. अरुण द्वारा लिखित ज्योतिष एवं तन्त्र, मन्त्र द्वारा उपाए पुस्तक भी हाल ही में निकाली गई है।

इस ग्रन्थ के विषय में यदि कोई भी शंका का समाधान करना चाहे वह सम्पादक मण्डल से पत्र व्यवहार कर सकता है।

डा. अरुण , अनादी कृष्ण दास

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
अरुण संहिता लाल किताब	iv
दो शब्द	v
नवम संस्करण	vi

व्याकरण

प्रथम ध्यान रखे खास तौर पर	1
पुरानी ज्योतिष और लाल किताब में अन्तर	1
लाल किताब के फरमान	2

फरमान नः 1

1.	**कुदरत से किस्मत किस तरह पाई**	2
2.	**उसकी कुदरत का हुक्मनामा कहाँ पाया गया**	2
3.	**ऊँचे फलक का प्रकाश किधर है**	3
4.	**आलिम को इल्म में शक क्या है**	4
5.	तकदीर पहले या तदबीर	4
6.	**किस्मत की ही गांठों से बाह मण्डल बनेगा**	5
	हाथ में कुण्डली के खाने एवं ग्रह	6
	कुण्डली के ग्रहों का पक्का घर	6
	ग्रहों की मित्रता एवं शत्रुता	7
	शरीर व ग्रह का संबंध	8
	ग्रहों की अवधि	8
	ग्रहों का समय	8
	मध्यम ग्रह	8
	ग्रह की आयु का प्रभाव	9
	रियायती 40 दिन	9
	ग्रहफल और राशिफल	10
	35 साला चक्कर	10
	जन्म दिन का ग्रह और जन्म समय का ग्रह	11
	ग्रहों की किस्में –	
	अंधे ग्रह, रतांध ग्रह, धर्मी ग्रह, साथी ग्रह आदि-आदि	12
	उच्च ग्रह, नीच या पक्के घर का ग्रह	13
	कायम ग्रह, बालिग ग्रह, नाबालिग ग्रह	13
7.	**बुत से रुह ने अपना घर क्यों पूछ लिया**	14
	ग्रह राशि का आपसी संबंध ग्रह उच्च नीच घरों में इसी प्रकार होते हैं	14
	हथेली की किस्मे	15

8. 12 पक्के घर 16
कुण्डली का पक्का लग्न का घर- **खाना नं 1** 17
धर्म स्थान, उम्र बुढ़ापा - **खाना नं 2** 18
धर्म स्थान का दरवाज़ा 18
इस दुनिया से कूच का समय - **खाना नं 3** 20
माता की गोद - **पेट का जमाना खाना नं 4** 20
औलाद - भविष्य **खाना नं 5** *पाताल की दुनिया* **खाना नं 6** 21
***गृहस्थी चक्की अकाश*- खाना नं 7,** 22
मौत अदल **खाना नं 8** 23
किस्मत का आरम्भ - **खाना नं 9,** 24
किस्मत की बुनियाद का मैदान - **खाना नं 10** 24
गुरु स्थान - **न्याय स्थल - खाना नं 11** 25
इन्साफ - **मगर न्याय करने की जगह नहीं - खाना नं 12** 28
सोए हुए पक्के घर या पक्के घरों में बैठे सोए हुए ग्रह 29
सोया ग्रह खुद कब जागेगा 30
ग्रह दृष्टि/आम हालत 30
ग्रहों की आपसी दृष्टि का राशियों से संबंध, कुण्डली के खानों का संबंध 31
100 प्रतिशत और अपने से सातवें को देखने का अन्तर 31
विशेष-विशेष चीज़ों के लिए दृष्टि, सेहत, बीमारी, शादी, औलाद, मकान आदि। 33
योग की दृष्टि, भाव दृष्टि0 टकराव, आपसी मदद, बुनियाद 34
ग्रहों का आपसी सहायता, आम हालत, टकराव, नींव, धोखा 34
ग्रहों की आपसी दृष्टि के वक्त उनके आपसी प्रभाव की मिकदार 35
खानों की दृष्टि - योग दृष्टि आपसी सहायता, धोखा अचानक 36
कुण्डली में पहले या बाद के घरों के ग्रह 36
उलझन के ग्रह 37
ऋण पितृ के ग्रह 37
ऋणों की किस्में 38
किस प्रभाव से ऋण पितृ दृष्टिगोचर होगी और उनका उपाय 39
वृहस्पति, मंगल, बुध, शनि 39
सूर्य, चन्द्र, शुक्र , मंगल 40
बुध, शनि, 41
राहू, केतु 42
लाल किताब की चन्द्र कुण्डली 44
किस ग्रह की चल के वक्त महादशा होगी 45
धोखे के ग्रह 46

किस्मत का ग्रह 48
9. सहायता के लिए उपाय 48
यदि आम उपाय काम न दें तो घंटों में प्रभाव देने वाले उपाय 49
विवाह के समय के उपाय, जन्म दिन के हिसाब से उपाय 49
ग्रह - उपाय जो सहायता देगा 51
स्त्री पुरुष की कुण्डली का फर्क 52
10. ग्रह का प्रभाव 53
मसनुई ग्रहों का असर विशेष बातों का होगा 55
नेक ग्रह का मंदा प्रभाव 55
ग्रहचाल में चीजों पर रंग का प्रभाव 56
सांझे घरों का प्रभाव देखने का ढंग 57
मुश्तरका घरों का आपसी संबंध 57
विशेष असर 60
हर ग्रह के अच्छे - मंदे जाने की निशानी 61
11. ब्राह्मण्ड में ग्रहचाली बच्चे की बदलती हुई अवस्था 62
12. कुण्डली की बनावट और दुरुस्ती 64
हस्त रेखा से जन्म कुण्डली बनाने का ढंग 65
हाथ पर जन्म कुण्डली के खाने 65
वृहस्पति का खाना, सूर्य का खाना 66
चन्द्र, शुक्र, का खाना 67
मंगल,मंगल-बद, बुध का खाना 68
हथेली पर शनि का निशान 69
बंद मुट्ठी व कुण्डली का आपसी संबंध 70
फलादेश देखने का ढंग 70
कुण्डली के खाके की रेखाएँ 71
ग्रह कुण्डली की मकान कुण्डली की दुरुस्ती 72
मकान के ग्रह और खाना किन दिशाओं में 72
मकान कुण्डली के पक्के घर 73
13. वर्षफल 74
आम वर्षफल 74
14. कुण्डली के प्रकार 78
कुण्डली पुरुष की प्रबल होगी या स्त्री की 78
15. फलादेश देखने का ढंग 79
वर्षफल चार्ट 80

वृहस्पति

वृहस्पति - विधाता जगत् गुरु ब्रह्मा जी 83

विभिन्न भावों में वृहस्पति की दोहरी चालें 84

वृहस्पति 12 घर आम हालत 85

वृहस्पति का ग्रहों से सम्बंध 85

वृहस्पति खाना नं 1 *फकीरी पूर्ण* 88

वृहस्पति खाना नं 2 *जगत् का धर्म गुरु और विद्या का स्वामी* 91

वृहस्पति खाना नं 3 *ज्योतिष व आशीष का स्वामी* 94

वृहस्पति खाना नं 4 *चन्द्र की राजधानी* 95

वृहस्पति खाना नं 5 *ब्रह्मज्ञानी परन्तु आग का बांस, गुस्से वाला* 96

वृहस्पति खाना नं 6 *साधु स्वभाव* 98

वृहस्पति खाना नं 7 *पिछले जन्म का साधु, राजा जनक की तरह सन्यासी* 99

वृहस्पति खाना नं 8 *मुसीबत के समय परमात्मा की सहायता का मालिक* 101

वृहस्पति खाना नं 9 *योगी एवं धन का त्यागी, सनहरी खानदान* 103

वृहस्पति खाना नं 10 *पहाड़ी इलाके का गृहस्थी* 104

वृहस्पति खाना नं 11 *खजूर के पेड़ की भांति अकेला* 106

वृहस्पति खाना नं 12 ***उत्तम ज्ञानी वैरागी*** 107

सूर्य

110

सब का पालन करने वाला तपस्वी राजा, विष्णु भगवान् जी 110

सूर्य आम हालत12 घर 111

मन्दे प्रभाव का उपाय 115

सूर्य खाना नं 1 *सतयुगी राजा, हकीम* 115

सूर्य खाना नं 2 *अपने भुजा बल का स्वामी* 117

सूर्य खाना नं 3 *धन का राजा, स्वयं कमा कर खाले वाला* 118

सूर्य खाना नं 4 *दूसरों के लिए जोड़ जोड़ कर मरे* 119

सूर्य खाना नं 5 *परिवार तरक्की का मालिक* 120

सूर्य खाना नं 6 *धन से बेफिक्र, भाग्य पर सन्तुष्ट* 122

सूर्य खाना नं 7 *कम कबीला, डरता डरता मर रहे* 123

सूर्य खाना नं 8 *तपस्वी राजा, सांच को आंच* 126

सूर्य खाना नं 9 ***लम्बी उम्र, सूर्य ग्रहण के बाद का सूर्य*** 127

सूर्य खाना नं 10 *धन का मालिक मगर वहमी* 128

सूर्य खाना नं 11 *पूर्ण धर्मी मगर अपनी ही ऐश पसंद* 129

सूर्य खाना नं 12 *सुख की नींद, मगर पराई आग से जल मरने वाला* 130

चंद्र 131

जगल की धरती माता, दयालु शिव जी भोले नाथ 131

चन्द्र आम हालत 12 घर 133

चन्द्र खाना नं 1 माता के जीवत होने तक खालिस दूध 136

चन्द्र खाना नं 2 स्वयं पैदा की हुई माया की देवी 138

चन्द्र खाना नं 3 उम्र का मालिक फरिश्ता जिससे मौत भी डरे 140

चन्द्र खाना नं 4 खर्चने पर और बढ़ने वाली आय की नदी 142

चन्द्र खाना नं 5 बच्चो के दूध की माता तथा आत्मिक नदी 144

चन्द्र खाना नं 6 धोखे की माता तथा खारा कड़वा पानी 145

चन्द्र खाना नं 7 बच्चो की माता खुद लक्ष्मी अवतार 147

चन्द्र खाना नं 8 मुर्दा माता, जला दूध 148

चन्द्र खाना नं 9 दुखियों का रक्षक समुद्र 150

चन्द्र खाना नं 10 जहरीला पानी 152

चन्द्र खाना नं 11 होते हुए भी न के बराबर 154

चन्द्र खाना नं 12 तुफान से बस्तियाँ उजाड़ने वाला दरिया 155

शुक्र लक्ष्मी जी 159

शुक्र आम हालत 160

शुक्र खाना नं 1 काग तथा मच्छ रेखा की रंग-बिरंगी माया 162

शुक्र खाना नं 2 कुटिया उसकी गऊ घाट 164

शुक्र खाना नं 3 **औरत की इज्जत करता - फिर बुरा क्यों** 166

शुक्र खाना नं 4 अपना इश्क औरतों का 167

शुक्र खाना नं 5 बच्चों से भरा परिवार 169

शुक्र खाना नं 6 दौलत के महल वरना नीच दौलत - कुलक्ष्मी 170

शुक्र खाना नं 7 जैसा यह वैसी वह साथी का प्रभाव, अकेला नेक 173

शुक्र खाना नं 8 जली मिट्टी की हालत स्त्री 175

शुक्र खाना नं 9 मिट्टी काली आंधी - मंगल बद 176

शुक्र खाना नं 10 शनि उज़म तो धर्म मूर्ति (पुरुष या स्त्री) 178

शुक्र खाना नं 11 सुन्दर स्त्री-पुरुष माया के संबंध में घूमता लट्टू 179

शुक्र खाना नं 12 भव सागर से पार करने वाली गाय 180

मंगल शास्त्रधारी 182

मंगल आम हालत 12 घर 183

मंगल के अपने भाई बन्धु 184

मंगल खाना नं 1 इंसाफ की तलवार 185

मंगल खाना नं 2	*धर्म मूर्ति भईयों की पालना करता हुआ*	187
मंगल खाना नं 3	*लोगों के लिए फलों का जंगल*	188
मंगल खाना नं 4	*जलती आग*	189
मंगल खाना नं 5	*जद्दी घर से बाहर लगातार रहना लावल्दी ही देना*	192
मंगल खाना नं 6	*संन्यासी, साधू*	193
मंगल खाना नं 7	*मीठा हलवा, विष्णु पालना*	195
मंगल खाना नं 8	*मौत का फंदा बलि की जगह*	196
मंगल खाना नं 9	*यदि बद तो नास्तिक बदनाम*	197
मंगल खाना नं 10	*चींटी के घर भगवान् राजा*	198
मंगल खाना नं 11	*गुरु चरणों के चरणामृत का आदि*	199
मंगल खाना नं 12	*सुख का राजा*	200

बुध शक्तिमान वनस्पतियों का राजा 202

बुध आम हालत 12 घर		203
बुध खाना नं 1	*राजा या हाकिम, खुदगर्ज शरारती बदनाम*	208
बुध खाना नं 2	*योगी, राजा, मतलब परस्त, ब्रह्मज्ञानी*	209
बुध खाना नं 3	*थूकने वाला, कोढ़ी मंदा*	211
बुध खाना नं 4	*राजयोग*	213
बुध खाना नं 5	***मुंह से निकला बद्दा वाक्य उत्तम होगा***	214
बुध खाना नं 6	*गुमनाम योगी और दिल का राजा*	215
बुध खाना नं 7	*संसार के लिये पारस*	217
बुध खाना नं 8	*छुपा तबाही का फंदा*	218
बुध खाना नं 9	*कोढ़ी तथा राज एक साथ*	220
बुध खाना नं 10	*प्रसन्नता से निर्वाह करने वाला*	222
बुध खाना नं 11	*धनी जन्म से*	223
बुध खाना नं 12	***नेक लम्बी आयु अच्छा जीवन बिताने वाला***	224

शनि - इच्छाधारी 227

शनि आम हालत 12 घर		228
शनि खाना नं 1	*बचपन, जवानी, बुढ़ापा उज़्म*	232
शनि खाना नं 2	*गुरु शरण*	234
शनि खाना नं 3	*अगर हुआ तो दो गुणा मन्दा*	236
शनि खाना नं 4	*पानी का साँप*	237
शनि खाना नं 5	*बच्चे खाने वाला साँप*	238

शनि खाना नं 6	*लेख की स्याही एक गुणा मंदा*	240
शनि खाना नं 7	*कलम विधाता रिजक*	242
शनि खाना नं 8	***हैडक्वाटर***	244
शनि खाना नं 9	*कलम विधाता मकान मर्दा*	245
शनि खाना नं 10	*लेख का कोरा खाली कागज*	247
शनि खाना नं 11	*लिखे विधाता - स्वयं विधाता*	248
शनि खाना नं 12	*कलम विधाता आराम*	250

राहु रहनुमाएं गरीबां मुसाफरां 252

राहु आम हालत 12 घर		253
राहु खाना नं 1	*सीढ़ी पर चढ़ने वाला हाथी*	255
राहु खाना नं 2	*बरसाती बादल*	256
राहु खाना नं 3	*आयु तथा धन का स्वामी*	258
राहु खाना नं 4	*धर्मी मगर धन के आम ग़म*	259
राहु खाना नं 5	*शरारती, संतान गर्क*	260
राहु खाना नं 6	*फाँसी काटने वाला सहायक हाथी*	261
राहु खाना नं 7	*लक्ष्मी का धुआँ निकालने वाला*	262
राहु खाना नं 8	*मौत का मालिक, कढ़वे धुएं का संदेश*	264
राहु खाना नं 9	***डाक्टर, मगर बेईमान***	265
राहु खाना नं 10	*साँप की मणि*	266
राहु खाना नं 11	*पिता को गोली मारे, या मुंह न देखे*	267
राहु खाना नं 12	*शेख चिल्ली*	269

केतु -सन्देश 271

संसार की आँधी में, संसार में लड़के पोते, आगे आने वाले कुटुम्ब

केतु आम हालत 12 घर		272
केतु खाना नं 1	*हर समय बच्चे बनाने वाला*	274
केतु खाना नं 2	***हुक्मरान***	275
केतु खाना नं 3	***दुन-दुन करते रहने वाला कुत्ता***	276
केतु खाना नं 4	***बच्चो का डराने वाला कुत्ता***	277
केतु खाना नं 5	*अपनी रोटी के टुकड़े के लिए गुरु का निगरान*	278
केतु खाना नं 6	*दो रंगी दुनिया*	279

केतु खाना नं 7	शेर का मुकाबला करने वाला कुबा	281
केतु खाना नं 8	मौत के यम को पहले देख लेने वाला कुबा	282
केतु खाना नं 9	**बाप का हुक्म मानने वाला बेटा**	284
केतु खाना नं 10	चुपचाप अपने रास्ते पर चलने वाला मौकाबाज़	285
केतु खाना नं 11	गीदड़ स्वभाव कुबा	286
केतु खाना नं 12	ऐशों आराम जद्दी विरासत	287
	दो ग्रह आपसी के फलादेश	289
	वृहस्पति दो ग्रह योग	289
वृहस्पति-सूर्य	*शाही धन*	290
वृहस्पति-चन्द्र	*दिया हुआ धन, कानूनी महकमा, बड़ का वृक्ष*	292
वृहस्पति-शुक्र	*बूर के लड्डू, दिखावे का धन*	296
वृहस्पति-मंगल	*श्रेष्ठ गृहस्थी, धन*	299
वृहस्पति-बुध	*पिता की हालत पर प्रभाव*	301
वृहस्पति-शनि	*संन्यासी फकीर की गाथा जिसका भेद न खुल सके*	303
वृहस्पति-राहु	*फकीरों की कुटीया में हाथी, बुजुर्गों को दमे की बीमारी*	307
वृहस्पति-केतु	**पीला नीम्बू, गुरु गद्दी**	310
	सूर्य दो ग्रह योग	312
सूर्य-चन्द्र	*बड़ के वृक्ष का खालीस दूध, घोड़ा, तांगा*	312
सूर्य-शुक्र	सन्तान जन्म देरी करता	313
सूर्य-मंगल	*जागीरदारी का धन*	315
सूर्य-बुध्र	*नौकरी संबंधी कलम*	316
सूर्य-शनि	झगड़ा कोई न करता	320
सूर्य-राहु	किस्मत की चमक	323
सूर्य-केतु	*कानों का कच्चापन बर्बादी दे*	325
	चन्द्र दो ग्रह योग	327
चन्द्र-शुक्र	*गले में चान्दी सहायक*	327
चन्द्र-मंगल	*श्रेष्ठ धन*	329
चन्द्र-बुध	*मां-बेटी, दरिया के पानी में रेत*	331
चन्द्र-शनि	*चन्द्र और शनि*	332
चन्द्र-राहु	आधी आयु	335
चन्द्र-केतु	*चन्द्र ग्रहण*	336

शुक्र दो ग्रह योग 337

शुक्र-मंगल *मिट्टी का तंदुर, मीठा अनार, गेरू, स्त्री धन* 337

शुक्र-बुध *आधी सरकारी नौकरी, बनावटी सूर्य, तराजू* 338

शुक्र-शनि *फर्जी अय्याश, काली मिर्च* 341

शुक्र-राहु *मिट्टी भरी काली अंधेरी* 343

शुक्र-केतु काम देव की नाली 344

मंगल दो ग्रह योग 345

मंगल-बुध *मौत बहाना, बुध अब शेर के दांत होंगे* 345

मंगल-शनि **डाक्टर, डाकू, फोजी इत्यादी** 347

मंगल-राहु *चुपचाप, नेक हाथी जो केतु का असर दे शाही सवारी* 351

मंगल-केतु *शेर की नसल का कुज़ा* 351

बुध दो ग्रह योग 353

बुध-शनि *जयदाद मनकूला, आम का वृक्ष* 353

बुध-राहु *तलीर पक्षी जो बड़ (चन्द्र, वृहस्पति) के वृक्ष पर आम* 354

बुध-केतु *बकरी एक जानवर है जिससे हाथी भी डर कर भागता है* 356

शनि दो ग्रह योग 357

शनि-राहु *मौत और बिजली का यम, साँप की मणि* 357

शनि-केतु *शनि के साथ केतु नेकी का फरिश्ता होगा* 359

राहु - केतु 360

तीन ग्रहों का साँझा फल 363

तीन ग्रहों का साँझा फल 363

चार ग्रहों का फलादेश 372

पाँच ग्रहों का फलादेश 373

सभी ग्रह इक्ट्ठे 374

विषय को पढ़ने के लिए कुछ सहायक उदाहरण 374

विषय को पढ़ने के लिए कुछ सहायक उपाय 374

राजयोग टेवे 390

दिमाग के 42 खाने 396

खानावार चीज़ें 399

खानावार चीज़ें 399

ग्रहों की संबंधित वस्तुएँ 402

आपसी ग्रहों से संबंधित चीजें 405

हर ग्रह से संबंधित मकान 410

	हर ग्रह से संबंधित इंसान	411
	विभिन्न ग्रहों की रेखाएं	424
17	**योग बन्धन**	426
	किस्मत	426
	किस्मत का प्रभाव	427
	शादी	428
	शादी की रेखा	431
	खबरदारी	435
	आय	438
	माया के नाम	439
	साहुकार माली लेन देन	443
	संतान	444
	माता पिता और संतान का आपसी संबंध	447
	महकमें (विभाग)	451
	कलम की स्याही	451
	सफ़र का हुक्मनामा	452
	मकान	453
	जन्म कुण्डली में शनि बैठा हो	454
	मकान के कोने	454
	मकान आने जाने का सबसे बड़ा दरवाजा	456
	स्वास्थ्य और बीमारी	458
	हस्त रेखा	458
	ग्रह बीमारी का सब्बंध	460
	इंसानी आयु	461
	आयु कीतने साल होगी	462
	ग्रहों की आयु	464
	चन्द्र के स्थान से मौत का दिन	467
	मृत्यु का आखिरी वर्ष व दिन	468
	आयु के साल	468
	मौत बहाना	469
	नकारा कूच (मौत का वक्त)	471
18	**आशीर्वाद**	472

इति शुभम्

****

प्रथम

ध्यान रखे खास तौर पर :-

इंसान बंधा खुद लेख से अपने, *लेख विधाता कलम से हो।*
कलम चले खुद कर्म पे अपने, *झगड़ा अक्ल (बु०) ना किस्मत (वृ०) हो।*

क्योंकि

लिखा जब किस्मत का कागज़, *वक्त था वो ग़ैब का।*
भेद उसने गुम था रखा, *मौत दिन और ऐब का।*
ख्याल रखना था बताया, *कृतघ्न इन्सान का।*
एवज़ लड़की-लड़का बोला, *खतरा था शैतान का।*

1. हवाई याल की नींव की दीवार का विषय बेशक तुझे मौत का दिन या किसी के भेद का ऐब का और माता के पेट में लड़का है कि लड़की का इशारा कर देगा, मगर ऐसी बातें अपने वक्त से पहले ही जाहिर कर देना तेरे खून को कोढ़ की बीमारी का सबूत देगा। क्योंकि दुनियां में अगर इलाज है तो सिर्फ बीमारी का ही है मौत का चारा नहीं। ज्योतिष भी कोई जादू नहीं, दुनियावी हिसाब-किताब है, कोई खुदाई का दावा नहीं है। अगर है तो बचाव में रुह की शांति के लिए है, मगर दूसरे पर हमला करने का ज़रिया नहीं। भाग्य के मैदान में अगर पानी की नाली पीछे से आ रही हो और उसके रास्ते में कोई ईंट या पत्थर गिर कर उसके रास्ते को रोके तो विषय की मदद से पत्थर निकाल कर पानी बहने हेतु कोशिश की जा सकती है। मगर भाग्य के मैदान में कोई कमी वृद्धि न हो सकेगी। कई बार अपनी बरकत से किसी व्यक्ति पर ज़ुल्म करने वाले ज़ालिम शेर के बीच यह एक ऐसी ग़ैबी दीवार खड़ी कर देगा जिससे कि वह शेर इसका कुछ न बिगाड़ सके। अगर शेर ऊँची छलांग लगाए तो ज्योतिष उस दीवार को और ऊँचा करता होगा, मगर यह शेर पर गोली न चलायेगा, न ही उसकी टांग पकड़ेगा, वह शेर खुद ही थक जायेगा और हमले का इरादा छोड़ देगा जिससे वह प्राणी सुख की साँस ले लेगा।
2. ज्योतिष की नींव पर लाल खूनी रंग (जो चमकीला न हो) शुभ हो इससे अलावा सभी रंग मनहूस होंगे।
3. इस किताब में इल्म (ज्ञान) सामुद्रिक की वर्णमाला के अलिफ बे 35 अक्षर पूरे अक्षर देने की कोशिश की गई है। फरमान के अलग हो जाने से किताब को कई बार पढ़ते रहना अपना भेद बता देगा।
4. किसी बात को आजमाने से पहले, अपने फैसले से बहम खड़ा करना ज्योतिष के परिचय के लिए शुभ न होगा।
5. किताब के बिना फर्ज़ी मनमानी या मनगढंत बात बहम पैदा करेगा।
6. कुण्डली बनाने का ज्ञान ज़रूरी है। अपनी ही कुण्डली या हाथ ज्योतिष सीखने में सबसे बड़ी रुकावट होगी।
7. विषय की गलती बताने वाला सहायक दोस्त होगा।
8. दूसरे शास्त्रीय ज्योतिष के ज्ञान की बुराई से दूर रहें।
9. बेवकूफ, निन्दक, मज़ाकिया या कुएं का मेढ़क से दु:ख तो आता ही है पर दुनियावी साथियों को लाभ पहुँचाना इन्सानी शराफत होगी।

कर भला हो भला, अन्त भले का भला।

पुराने ज्योतिष और लाल किताब में मु य अन्तर :-

राशि छोड़ नक्षत्र भुलाया, *न ही कोई पंचाग लिया।*
मेष राशि खुद लग्न को गिनकर, **बारह पक्के घर मान लिये॥**

ज्योतिष हालात पर निर्भर है

1. जैसे शनि का मंदा होना, शनि की (अढ़ाई, साढ़े सात साल की साढ़सती), इस किताब की बुनियाद पर शनि के मंदे होने के वारदात जैसे सांप डसना, मकान गिरना— बिकना, आँखों की दृष्टि की खराबियाँ, चाचे पर तकलीफ, मशीनों का नुक्सान, आदि अपना सबूत देंगे कि शनि मंदा गरचे कि सूर्य की अन्तर दशा या शनि की साढ़सती चल रही है। ग्रहों का असर उनकी चीज़ें, काम या स बन्धी के स बन्धित कायम होने से पक्का होने का भेद प्रकट हुआ।
2. हस्त रेखा से टेवा, कुंडली दुरुस्त करके ज़िन्दगी के हालात मालूम करें 120 वर्षफल बनाये जाते हैं।
3. शक्की हालात पर उपाय है, शक का लाभ उठाने के लिए।
4. हवाई याल के बजाय ज़िन्दगी के ठोस यथार्थ को बुनियाद माना गया है।
5. महत्वपूर्ण मामलों पर ही गोर फरमाया है, मामूली कष्ट की बजाए अधिक नुकसान की बातें की हैं।

6. ग्रहों की कैद नहीं रा०-के०, सू०-बु०, सूर्य-शुक्र वर्ष कुण्डली में कहीं भी हो सकते हैं।
7. फलित करते समय 28 नक्षत्र और 12 राशि को छोड़ दिया और लग्न मेष माना है और 12 पक्के घर मान लिये है।
8. जन्म कुण्डली में इकट्ठे बैठे ग्रह वर्षफल में ी जुदा न किये गये जिससे भावेश का चक्कर भी समाप्त हुआ।

प्रारम्भ

हाथ रेखा को समुद्र गिनते,
इल्फ क्याफा ज्योतिष मिलते,
नजूमे फलक का काम हो।
लाल किताब का नाम हो।।

' लाल किताब के फरमान

लाल किताब फरमाये यूँ,
जबकि ना गिला तदवीर
सबसे उत्तम लेख गैबी,
अक्ल (बु०) लेख (वृ०) से लड़ती क्यों।
अपनी न ही खुद तहरीर हो।
माथे की तकदीर हो।

उमंगों से भरे हुए शहजोर और ज़माने के बहादुर पहाड़ चीरने वाले नौजवान ने हाथ पर हाथ रखे हुए आसमान की तरफ देखने की बजाये सिर से पांव तक कोशिश करने के बाद नतीजा इच्छा के अनुसार न पाया और अपनी आँखों के सामने एक मामूली नाचीज़ हस्ती को ज़िन्दगी के चंद ल हों में दुनियां का सरताज़ होते देखा तो उसको एहसास हुआ कि भेद क्या है।

उत्तर मिला :-

न ज़रूरी नफ़स ताक्त,
लेख (वृ०) चमके जब फक्रीरी,
न ही अंग दरकार हो।
राज आ दरबार हो।।

फरमान नं० 1 :- कुदरत से किस्मत किस तरह आई

हुक्म विधाता जन्म मिले तो,
लाल किताब, बच्चा ग्रहचाली,
इस बच्चे की नन्हीं मुट्ठी में,
भरा खज़ाना जिसके अन्दर,
नौ निधी को ग्रह 9 माना,
9 में जब गुण 12 करते,
लेख ज्योतिष बतलाता है।
किस्मत साथ ले आता है।
पकड़ा देव आकाश का है।
निधि सिद्धि की माला है।
सिद्धि 12 राशि है।
होती माला पूरी है।

फरमान नं 2 :- उसकी कुदरत का हुक्मनामा कहां पाया गया

अक्स ग़ैबी जाहिर पहला,
नकस जिसका पीछे दुनियां,
दिमाग़ी खानों का असर तब,
चांद सूरज फलती दुनियां,
इल्म ज्योतिष इस तरह पर,
सीधी टेढ़ी हस्त रेखा से,
दिमाग़ दायां-(बायां) हाथ बायां-(दायां),
हुक्मनामा उसकी कुदरत (अपनी किस्मत),
था सितारों पर हुआ।
के दिमाग़ का हुआ।
हाथ की रेखा हुआ।
से जहान दो बन गया।
जब सितारों से हुआ।
क्याफा चल पड़ा।
पर चमक जब दे चुका।
मुट्ठी बन्द इन्सान था।

आम तौर पर मालिक ने इन्सान के साथ उसके लिए निर्धारित कार्यों को हथेली पर लिखा है । अपने ही कब्ज़े में ऐसे ढंग से भेजा है कि वह कभी गुम न हो पाये, ना ही उसमें कोई तबदीली हो सके, मगर उसकी शक्की हालत का फायदा बेशक उठा लिया जावे।

जन्म कुण्डली (उत्तर पंजाब)
ANTI CLOCK WISE

हथेली के पर्वत (ऊपर को उठे हुए) जिस कदर ऊंचे और चौड़े होंगे उसी कदर एक दूसरे की अच्छी या बुरी हवा की रोकथाम कर सकेंगे। दरिया की नदियां व समुद्र के मददगार दरिया जिस कदर गहरे और साफ तह ज़मीन होंगे उसी कदर ही उसमें पानी की ज्यादा चाल या पक्का असर होगा। जिस कदर दरिया या नदी कम गहरे होंगे उसी कदर न सिर्फ पानी कम या उनका असर हल्का होगा बल्कि असर की र तार भी मध्यम होगी। रेखा में मु तलिफ द्वीप रास्ते की रुकावटें होंगी।

जन्म कुण्डली (दक्षिण मद्रास)
CLOCK WISE

12	1	2	3
11			4
10			5
9	8	7	6

दरिया या रेखा जिस पर्वत के इलाके से गुजर जायेगी उसी किस्म का असर उनके साथ लाई मिट्टी में मौजूद होगा, और पर्वत की जड़ी बूटियाँ अलग किस्म की दवाईयों के पौंों से आयी हुई तेज़ मध्यम मीठी-कड़वी हवा का असर होगा, बिल्कुल वैसी ही अवस्था ग्रहों की अपनी-अपनी राशियों में होगी। अगर कुण्डली हथेली का महाद्वीप बनी तो ग्रहों के नज़र को रास्ता या उनकी आपसी दृष्टि, ब्रह्मांड के दरिया की गुजरगान होगी, जो इनके असर में

मकान कुण्डली

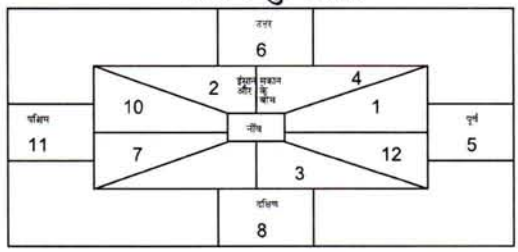

जन्म कुण्डली पूर्व बंगाल

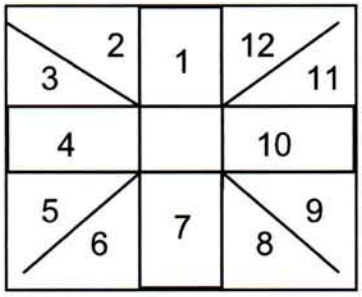

ग्रह मण्डल की आपसी दोस्ती या दुश्मनी से पैदा हुई लहरों की उकसाहट से हज़ारों किस्म की तबदीली का बहाना होगा और ग्रहों के मुकर्र मियादों पर अक्सर जाहिर हुआ करेगी उंगली के पोरों और हथेली के महाद्वीप हर दो ही के 12-12 टुकड़े हुए और पर्वतों को 9 भाग माना है। यही 9 निधि (दैविक शक्ति) और 12 सिद्धि (इंसानी शक्ति) होगी जो इस ज्ञान की नींव है। ग्रह राशि और रेखा के अलावा मकान, रिहायश, स्वप्न, माल मवेशी, दुनियां के दूसरे साथी आदि शुभ निशानियां और इल्म क्याफा इस विषय के ज़रूरी पहलू गिने गये हैं। यूं ही गैबी अकस दिमाग़ी खानों में नकस होकर हाथ की रेखा के दरियाओं के पानी में जाहिर हुआ। दुनियां के पर्वतों का ल बा सिलसिला हथेली के पर्वतों में बुलन्द दिखाई देने लगा और बच्चे की सांस की हवा ने भी रुख बदला, जिस पर पहाड़ों से घिरी हुई हथेली को महाद्वीप और चारों उंगलियों के वसीह (खेल) मैदानों के 12 कोने जन्म कुण्डली में हूबहू वैसे ही पाये गये। पर जुदा रहा तो सिर्फ अंगूठा (अंगुष्ठ नर ही बेरुख पाया गया जो उन सबका महबर (अंगुष्ठ के) और दुनियादारों के पुण्य पाप का पैमाना निश्चित हुआ। यानि हथेली की लकीरों या 12 खानों और उंगलियों की 12 गांठों से जो गैबी अकस जाहिर हुआ वो हूबहू जन्म कुण्डली के 12 खानों में 9 ग्रहों की मु तलिफ अवस्था से ही पाया गया।

फरमान नं० 3 :- ऊंचे फलक का अकस किधर है

हाथ दायां और कुण्डली जन्म हो,
कुण्डली चन्द्र या हाथ बायें से,
उल्ट हाथों से औरत माना,
नेक हवा जब चलने लगी तो,
तदवीरे मर्द का नाम हुआ।
तकदीर मनुष्य का काम हुआ।
ग्रह फल राशि आम हुआ।
जहान दोनों का नाम हुआ।

हथेली का ग्रहों और राशियों से स बन्ध

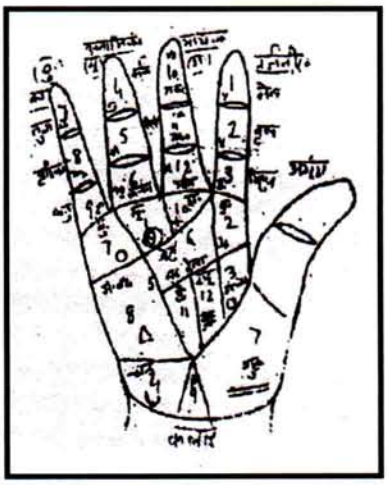

(उंगलियों के पोरों की राशियाँ)

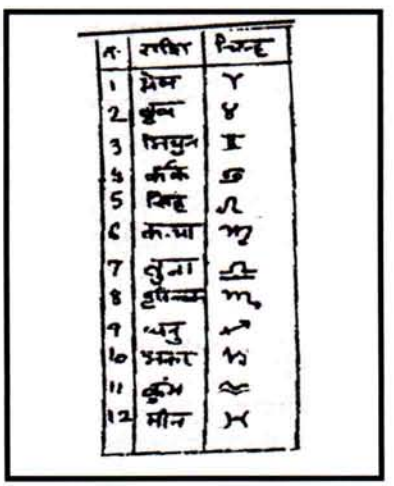

हाथ में कुण्डली और कुण्डली में उंगली के हवाई इशारे से ब्रह्मांड का मैदान एक दम गूँज उठा :-

हथेली का हिस्सा होगा	जन्म कुण्डली का खाना न बर
दायाँ भाग	1 से 6
बायाँ भाग	7 से 12
मुट्ठी के अन्दर	1, 4, 7, 10
तर्जनी	2
अनामिका	5
कनिष्ठका	8
मध्यमा	11
आसमान होगा	12
पाताल होगा	6
तीनों ज़माने	3
कुण्डली का केन्द्र	9

फरमान नं० 4 :- आलिम को इल्म में शक क्या है (जन्म वक्त)

समय करे नर क्या करे, समय बड़ा बलवान।
असर ग्रह सब ही पर होगा, परिंदा पशु इंसान॥

बच्चा दैविक पर्दे से माता के पेट में आया। फिर बंद हवा से इस दुनियां में पहुँचा तो उसके साथ दो जहानी हवा उसकी सांस हुई जिसके लेते ही ज़माने की दोरंगी चालों के मैदान का ल बा-चौड़ा हिसाब खुल गया। जिस पर हरकत के दो पहलू होने लगे या यूँ कहो कि जन्म के वक्त पता लग जाने से ज़िन्दगी के वाब की ताबीर मालूम करने का खाका (कुण्डली) जो इल्म ज्योतिष के मुताबिक तैयार होता हुआ माना गया। मगर शक हुआ कि एक बाप के दो बेटे, एक घर के दोनों भाई (ताये, चाचे के) एक शहर में या एक वतन में हम उम्र साथी एक जमात, एक नस्ल, सब एक जन्म वक्त होने पर हालाता की दुरस्ती की बुनियाद क्या होगी। इसके विपरीत भूचाल, हादसों की बाढ़, ज़िन्दगी की गोलाबारी या दूसरे ज़हरीले वाक्यात से मौत एक ही समय होती तो देखी गयी है कि सबके सब निश्चय हो जाते ही मालूम होने लगा है। इस पर याल आया कि हस्त रेखा के मुताबिक जब हरेक की रेखा या लकीर अलग-अलग है तो हालात का नक्शा केवल तसल्ली ब श न होगा, मगर फिर भी शक पैदा हुआ कि जब 12 साला बच्चे की रेखा का कोई एतबार नहीं है, 18 साला उम्र से बड़ी रेखा में कोई तबदीली नहीं मानते, मगर शाखें बदले तो यकीन किस बात पर हो। इस तरह दोनों विषयों से कोई दिलजोई न हो सकी क्योंकि एक तो जन्म वक्त-लग्न गलत होने की वज़ह से बेबुनियाद हो गया, दूसरे सिर्फ एक अकेले की जीवन का नेकों-बद गर्मी- नर्मी बताकर चुप हुआ और किसी दूसरे साथी की बाबत न बता सका। आखिर पर हर दोनों इल्मों को इकट्ठा किया पर फिर भी यही नज़र आया कि बुनियादी असूलों के ज्ञान के बगैर कोई मतलब हल न होगा। अत: फलित ज्योतिष के लिए इसकी व्याकरण और ग्रहों के फल के अलग-अलग अध्याय बनाएं ।

व्याकरण

फरमान नं० 5 :- तकदीर पहले या तदबीर

बेटी आई पहले दुनियां, या कि पहले माता है।
जोड़े बच्चे पेट माता, पहले जन्मे छोटा हो॥

राशियाँ :-1. गिनती में 12 हैं और दिन को 12 भागों में बाँटा, हर भाग बराबर दो घण्टों का नहीं है।

2. उंगली	ग्रह	गुण	राशियाँ
तर्जनी	**वृ०**	**हुकूमत**	**(1, 2, 3)**
अनामिका	सू०	हि मत से कमाई	(4, 5, 6)
कनिष्ठका	बु०	इल्म हुनर	(7, 8, 9)
मध्यमा	श०	उदासी वैराग्य	(10, 11, 12)

3. गिनती चाल जगह निश्चित करने के वक्त मध्यमा उंगली को सबसे अन्त में लेते हैं। क्योंकि मध्यमा 'संन्यास' वैराग होकर दुनियां से अलग गिनी है जिसका ताल्लुक गृहस्थ के बाद होगा।

'हस्त रेखा और कुण्डली के खाने से स बन्ध :-

सर रेखा = खाना नं० 7,
दिल रेखा = खाना नं० 4,
तर्जनी व मध्यमा
के बीच = खाना नं० 11,
अंगूठा = खाना नं० 2,
शुक्र से बुध को हथेली
में ल बी लकीर = खाना न० 5,
कलाई = राहु (अंगूठे की तरफ)
और केतु = (अंगूठे से दूर)

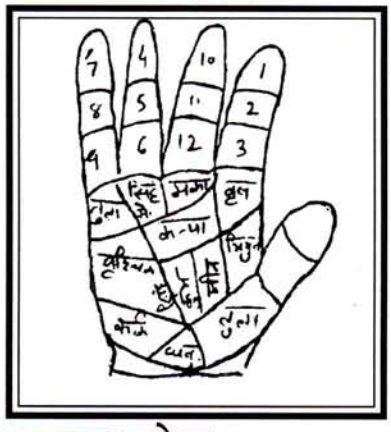

फरमान नं० 6 :- किस्मत की ही गांठों से ग्रह मण्डल बनेगा :-

धर्म दया चाहे कोसों ऊंची, चाहे सखी लखदाता हो।
उल्टे वक्त खुद गांठ आ लगती, लेख लिखा था विधाता जो।

ग्रह :-दुनियां के प्रार भ और ब्रह्मांड के खाली आकाश में जो बुध का आकार है सबसे पहला अन्धेरा (शनि) का राज मानकर उसमें रोशनी (सूर्य) की किरणों की चमक का प्रदेश याल किया गया। इस रोशनी (सूरज) और अन्धेरा (शनि) दोनों के साथ-साथ हवा हुई (जो दोनों जहानों के मालिक वृहस्पति की राजधानी ही चल रही है) यानि हवा अन्धेरे में ी होती है रोशनी में भी होती है। उदाहरणतय: शीशे के एक बक्स में भी हवा होगी और बक्स के बाहर भी हवा महसूस होगी गोआ बुध का शीशा अन्धेरे और रोशनी दोनों को ही अन्दर से बाहर/बाहर से अन्दर जाहिर होने की इज़ाजत देगा मगर वो बुध (शीशा) हवा को

अन्दर से बाहर और बाहर से अन्दर जाने न देगा। यही चक्कर में डाले रखने की दुश्मनी वृहस्पति से बुध की होगी या बुध के आकाश की खाली जगह में किस्मत को जाहिर करने वाला ग्रहचाली बच्चा बुध की मदद से सूर्य और शनि को जगह देगा कि जुदा-जुदा रहने या इकट्ठे ही दम मारने की ताकत ब श देगा। चाहे बुध का शीशा ही वृहस्पति के दोनों जहानों में गांठ लगा देगा और ये गांठ ही ग्रह है जिससे आकाश सबके लिए ही गांठा हुआ मैदान है या यूँ कहो कि अक्ल (बुध) सब तरफ गांठें लगा रही है। अलग-अलग चीज़ों को इकट्ठा करने की हालत के नाम गांठ या ग्रह हैं। दूसरे शब्दों में वृहस्पति हवा और बुध आकाश को इकट्ठा बांधने वाली चीज़ की ताकत या बच्चे की किस्मत की उलझन पैदा करने वाली चीज़ ग्रह कहलाती है। किस्सा कोताह उंगलियों और हथेली को बाहम (इकट्ठा) मिलाने वाली गांठ या हथेली की अपनी हरेक गांठ या बच्चे की माता के पेट के सफर की 9 मंज़िलें की हरेक गांठ को ग्रह के नाम से याद कर लें। गोया कुदरत की ताकत का असल नाम ग्रह है जिसकी वज़ह से इल्म सामुद्रिक में भी हर बुर्ज की बुनियाद उंगलियों की जड़ और हथेली को गांठ पर ही मानी गई है।

9 ग्रह हैं और 12 खानों में घूम सकते हो। इंसानों की तरह उनकी आपसी दोस्ती-दुश्मनी, उच्च-नीच हालत, उत्तम या मंदा असर देने की ताकत मानी गई है। हरेक ग्रह अपना अच्छा या बुरा असर खास-खास मियादों पर दिया करते हैं। यह ज़रूरी नहीं कि हर ग्रह अपनी हाशिये की लकीरों से बनें, हाथ पर रेशों से भी यही मुराद होगी।

उदाहरणतय: :- चौकोर से मं० बना है यही शक्ल अगर, बारीक-बारीक रेशों से हाथ के बाकी रेशों से जुदा हो जावे तो मं० नेक दिया है।

ग्रह के खुलासा बयानों में देखने से मालूम होगा कि ब्रह्मांड की अलग-अलग चीज़ों को खास-खास हिस्सों में मुकर्रर करके हरेक हिस्से का नाम हमेशा के लिए ही निश्चित कर दिया गया और उन तमाम चीज़ों को लिखने-पढ़ने से बार-बार दोहराने की बज़ाय उनके लिए निश्चित नाम जिक्र कर देते हैं।

उदाहरणतय::- स्त्री गाय, लक्ष्मी, मिट्टी बगैरा के लिए एक शब्द शुक्र है।

ग्रह	हिन्दी	फारसी	अंग्रेज़ी	रंग	मनसोई ग्रह	निशान
वृ०	गुरु	मुश्तरी	जुपीटर	पीला जर्द	सूर्य शुक्र (दोनों की खाली हवा)	♃ अंदेरियां खड़े T T T खत, शंख ⊙ ,सदफ चक्र
सू०	रवि	शमश	सन	सुर्ख तांबा	बु0, शु	✳सितारा, ⊙ शाखदार खत
चं०	चन्द्रमा	कमर	मून	सफेद (दूध)	सू0, वृ0	आधा टेढा ⊤ खत
शु०	भृगु	जुहरा	वीनस	सफेद दही)	राहु केतु	♀ लेटे खत = –
मं० नेक	भौम	मुरेयख	मार्स (+)	खूनी (सुर्ख)	सूर्य वु0	+○चौकर □
मं० बद	भौम	मुरेयख	मार्स (–)	खूनी (सुर्ख)	सूर्य शनि	Λ<Λ त्रिकोण Δ
बु०	बुध	अतारद	मरकरी	सब्ज हरा	वृ0 राहू	☿ ०वृत ००
श०	शनि	जुहल	सैटरन	स्याह	मंगल बुध (राहू स्वभाव) वृ0 शु (केतु स्वभाव)	8 दसुरंग Λ/~9Λ + नदीजम त्रिशूल
रा०	राहु	रास	राहु	नीला	मंगल श0 (उच्च हालत) सू0 श0 (नीच हालत)	जाल, साया, पद्म
के०	केतु	दु ब	केतु	चितकबरा काला–सफेद	शु0 श0 (उच्च हालत) चं0 श0 (नीच हालत)	साया धड़का E

हाथ में कुण्डली के ाने (पक्के घर)

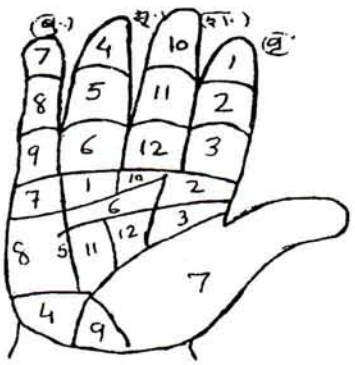

हाथ में कुण्डली के ग्रह

"कुण्डली में उंगलियां (मुट्ठी के अन्दर :- 1, 4, 7, 10)

राशियों की तरह ग्रहों के लिए भी कोई पक्का हिस्सा निश्चित नहीं है मगर उनकी खास नीचे लिखी सिफते ज़रूर निश्चित है।

वृ० रवि और मं० तीनों, नर ग्रह कहलाते हैं।
श० राहु और केतु तीनों, पापी ग्रह बन जाते हैं।
शु० लक्ष्मी, चन्द्र माता, दोनों स्त्री होते हैं।
बु० नपुंसक चक्र सभी का, जिसमें सभी ये घूमते हैं।
नेकी बदी दो मं० भाई, शह्द ज़हर दो मिलते हैं।
बद लालच गर मारे दुनिया, नेक दान को गिनते हैं।

राहु केतु को पाप के नाम से जानते हैं जब शनि को राहु और केतु किसी तरह से ी मिले तो शनि पापी होगा।

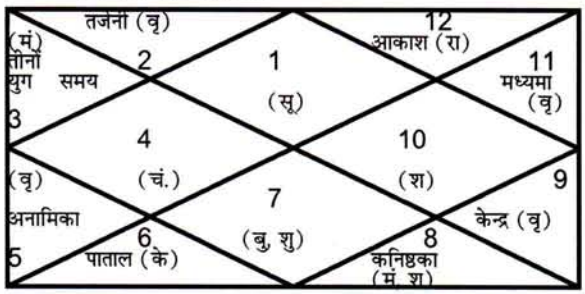

'कुण्डली के ग्रहों का पक्का घर :-

1. खाना नं० (सू०, 1) (वृ०, 2) (मं०, 3) (चं०, 4) (वृ०, 5) (के०, 6) (शु० बु०, 7) (श० मं०, 8) (वृ०, 9)

(श०, 10) (वृ०,11) (राहु, 12)।

2. राहु और केतु को हथेली में कोई पक्की जगह नहीं दी गई है, ये लहरों के मालिक हैं। एक ने इंसान को सिर से पकड़ा और दूसरे ने पांव से तो स्वयं ही उनको जगह मिल गई और वे बुध के साथ केतु जो नेकी का मालिक खाना नं० 6 में पाताल में और वृ० के साथ राहु जो बदी का हाकिम खाना नं० 12 में आसमान में तमाम आकाश ब्रह्माण्ड (जो वृ० बु० इकट्ठे का नतीजा है) बैठे और दुनियां के इस इल्म में पाप के नाम से मशहूर हुए।

3. ग्रहों की मित्रता-शत्रुता

नं०	ग्रह	उसके सम	मित्र	शत्रु
1.	वृ०	रा०, के०, श०	सू०, मं०, चं०	शु०, बु०
2.	सू०	बु० जो सूर्य के साथ चुप रहेगा।	वृ०, मं०, च०	शु०, श०, राहु से ग्रहण केतु से मध्यम।
3.	चं०	शु०, श०, मं०, वृ०	सू०, बु०	केतु से ग्रहण राहु से मध्यम
4.	शु०	मं०, वृ०	श०, बु०, के०	सू०, चं०, रा०
5.	मं०	शु०, श०, रा० अब मं० के साथ चुप रहेगा।	सू०, चं०, वृ०	बु०, के०
6.	बु०	श०, के०, मं०, वृ०	शु०, सू०, रा०	चं०
7.	श०	के०, वृ०	बु०, शु०, रा०	सू०, चं०, मं०
8.	रा०	वृ०, चं०	बु०, श०, के०	सू०, शु०, मं०
9.	के०	वृ०, श०, बु०, सू०	शु०,रा०	चं०, मं०

4. ग्रहों का काल समय दिन

नं०	ग्रह	दिन में	ह तों में
1.	वृ०	पहला हिस्सा	वीरवार
2.	सू०	दूसरा हिस्सा	रविवार
3.	चं०	चांदनी रात	सोमवार
4.	शु०	काली रात	शुक्रवार
5.	मं०	पक्की दोपहर	मंगलवार
6.	बु०	4 बजे शाम	बुधवार
7.	श०	तमाम रात, अंधेरा दिन	शनिवार
8.	रा०	पक्की शाम	वीरवार की शाम
9.	के०	सुबह (ऊषा काल)	रविवार की सुबह

केतु दिन चढ़ने से दो घण्टे पहले, वृ० दिन निकलने के बाद 8 बजे तक, सू० 8-10 बजे तक, चन्द्र 10-11 बजे तक, शुक्र 1-3 बजे तक, मं० 11 से 1 तक, बुध 4-6 तक, शनि दिन छुपने तारा निकलने के बाद, राहु सायंकाल।

ग्रहों की मित्रता एवं शत्रुता (विशेष)

1. चन्द्र शुक्र सम है, पर चन्द्र दुश्मनी करता है शुक्र से।
   वृहस्पति शुक्र सम है, पर शुक्र दुश्मनी करता है वृहस्पति से।
   मंगल शनि सम है, पर मंगल दुश्मनी करता है शनि से।
   चन्द्र बुध दोस्त है, पर चन्द्र दुश्मनी करता है बुध से।
2. राहु के साथ वृहस्पति चुप होगा मगर गुम न होगा, मगर खाना नं० 2 में राहु और वृहस्पति हों तो राहु वृहस्पति के अधीन होगा।
3. बुध जो वृहस्पति का दुश्मन है, चं० गो बु० का शत्रु है :- मगर खाना नं० 4, 2 में बुध या चं० चाहे (बु०, वृ०) या (चं०, बु०) इकट्ठे दुश्मनी के बजाय पूरी सहायता करेगा धन की सहायता के लिए।

1. दुश्मन पार्टी :- **शनि का दुश्मन सूर्य, सूर्य का शुक्र, शुक्र का वृहस्पति, वृहस्पति का बुध, बुध का चन्द्र, चन्द्र का केतु, केतु का मंगल (बद), सबका दुश्मन राहु।**
2. मित्र पार्टी :- **सूर्य का मित्र चन्द्र, चन्द्र का वृहस्पति, वृहस्पति का मंगल-नेक, मंगल-नेक का राहु, राहु का बुध, बुध**

का शनि, शनि का शुक्र, सबका दोस्त केतु।

गोया :- **ग्रहों के लिखित दोस्ती/दुश्मनी पार्टी के ग्रह बिन तरतीब एक-दूसरे के दुश्मन दोस्त है, जिनका रहनुमा राहु दुश्मन पार्टी का, केतु दोस्त पार्टी का यानि राहु सिर, केतु पांव का मालिक है।**

शरीर व ग्रह का संबंध :-

जिस्म में जिगर मंगल, चन्द्र-दिल, केतु-धड़, के सलाहकार हैं। बुध दिमाग जुबान देखने - भालना शनि, सर राहु के सलाहाकार। सर-राहु, धड़-केतु को मिलाने वाली गर्दन की सांस का मालिक वृहस्पति है। लिहाजा वृहस्पति बहालत एक अकेला जिस्म, बहालत कुल इंसान, तमाम दुनियां यानि लोक-परलोक, गैबी दुनियां के तमाम ग्रहों की मुश्तरका ताकत का मालिक है। सिर्फ इसी सिफत पर वृहस्पति किसी से दुश्मनी नहीं करता।

ग्रहों की अवधि

नं०	ग्रह	गिनते दिन	आम साल	उम्र के साल	महादशा के साल	आम दौरा	असर का वक्त	असर की रफतार (की तरह)
1.	वृ०	32	16	75	16	6	दरमियान	बब्बर शेर
2.	सू०	22	22	100	6	2	शुरु	रथ
3.	चं०	24	24	85	10	1	आखिर	घोड़ा
4.	शु०	50	25	85	20	3	दरिमयान	बैल
5.	मं० नेक मं० बद	24 32	13 कुल 15 (28)	90	3 कुल 4 (7)	2 कुल 4 (6)	 शुरु	चीता हिरण
6.	बु०	68	34	80	17	2	हमेशा सम	मेढ़ा
7.	श०	72	36	90	19	6		मछली
8.	रा०	40	42	90	18	6		हाथी
9.	के०	43	48	80	7	3	आखिर पर	सूअर कुत्ता
योग		364/367			120	35		

एक दिन हर ग्रह का पक्के तौर पर निश्चित युनिट के लिए प्रत्येक युनिट का वक्त 40 मिनट लेंगे।

नोट:- मैदानी इलाके में मृग हिरण, पहाड़ में चीता को मृग बोलते हैं मगर ग्रहों में हिरण या बारहसिंगा को मंगल बद, चीता मंगल नेक है।

ग्रहों का समय:-

1. हर ग्रह अपनी मियाद के 1/2 या 1/4 हिस्से पर भी अपना जाहिर कर दिया करता है।
2. राहु की 42 और केतु की 48 तो दोनों की इकट्ठी मियाद 45 वर्ष होगी।
3. ग्रहण के वक्त, सूर्य राहु इकट्ठे = सूर्य ग्रहण, (चं०, के०) = चन्द्र ग्रहण, उम्र तीन साल कम होगी।
4. शनि की उम्र के 10, 19, 37 वें साल अमूमन नेक प्रभाव देगा और 9 दूसरी तरफ धन-दौलत देगा। साल 18 पिता, 27 माँ मकान मवेशी पर मंदा असर देगा। 36-39 साल में साधारण असर देगा।
5. जैसे कि टेवे के मुताबिक इस वक्त हो किस्मत उदय के लिए बुध 23, मं० 31, साल उम्र में, बाकी हर ग्रह अपनी-अपनी मियाद में असर देगा।

मध्यम ग्रह

पक्का घर	शुरु	मध्य	अंत
वृ०	के०	वृ०	सू०
सू०	सू०	चं०	मं०
चं०	वृ०	सू०	चं०
शु०	मं०	श०	बु०
मं०	मं०	श०	शु०
बु०	चं०	मं०	वृ०
श०	रा०	बु०	श०
रा०	मं०	के०	रा०
के०	श०	रा०	के०

उदाहरण :- एक साल के समय को 3 पर भाग दिया = मास जैसे वृहस्पति वर्षफल में खाना नं- 5 में आये तो उस साल के प्रथम 4 मास में खाना नं: 5 पर केतु का असर जैसे कि वह (केतु) उस (वक्त) वर्षफल में हो। दूसरे 4 मास में (वर्षफल) स्वयं वृ: का असर हो, आखिर 4 मास में सूर्य (वर्षफल अनुसार सू) का असर होगा। इसी तरह हर ग्रह को लेंगे ।

ग्रह	किस ग्रह के साथ हो	तो उम्र होगी जितने साल
वृहस्पति	किसी भी ग्रह के साथ हो	16
सूर्य	किसी भी ग्रह के साथ सिवाय	22
	राहु के साथ	00
	केतु के साथ	11
चन्द्र	किसी भी ग्रह के साथ सिवाय	24
	वृहस्पति, बुध, शुक्र, राहु	12
	मगर शनि के साथ	08
शुक्र	किसी ी ग्रह के साथ सिवाय	24
	वृहस्पति	60 साल दौलत के लिए
	सूर्य	34
	मंगल नेक	8
मंगल नेक	किसी ी ग्रह के साथ	13 कुल
मंगल बद	किसी भी ग्रह के साथ	15 (28)
बुध	किसी भी ग्रह के साथ सिवाय	34
	सूर्य, मंगल के	17
शनि	किसी भी ग्रह के साथ सिवाय	36
	वृहस्पति	18 पिता की उम्र हेतु
		27 धन-दौलत के लिए
	सूर्य	24
	मंगल या शुक्र	12
	बुध	45
राहु	किसी भी ग्रह के साथ सिवाय	42
	मंगल नेक	0
	केतु	45
केतु	किसी भी ग्रह के साथ सिवाय	48
	वृहस्पति	40
	सूर्य या मंगल नेक	24
	राहु	45

ग्रह की उम्र का असर

1. सब कोई ग्रह हर तरह से कायम/यकीनी अपने वजूद में खुद अपनी ही पूर्ण ताकत का चाहे उच्च-नीच, घर का मालिक हो या दूसरे का, उस पर या उसमें कोई असर न मिल रहा हो तो वो अपनी कुल उम्र तक असर देता रहेगा या उसकी उम्र होगी, जैसे वृहस्पति = 16, सूर्य =22, चन्द्रमा =24, आदिआदि ।
2. इस कुल ग्रहों की उम्र 120 साल अपना-अपना मुकाम है।
3. ग्रह के असर का आम अर्सा अपनी हालत से बाहर जब कोई ग्रह, ऊपर की शर्त यानि ग्रह के उम्र के अर्सा से बाहर, दोस्ती या दुश्मनी के बर्ताव में हो जाये तो उसके लिए वृहस्पति 6, सूर्य 2 साल, चन्द्र 1 साल वगैरह लेंगे।
4. अपनी मियाद के शुरु, मध्य और आखिर पर हर ग्रह असर करता है। इसलिए हर ग्रह के साथ दरमियानी ग्रह का असर, जैसे कि दरमियानी ग्रहों की लिस्ट में दिया है, शामिल होगा।

रियायती 40 दिन :-

1. मंदे ग्रहों का प्रभाव उनके मुकर्रर वक्त से पहले नहीं आ सकता है और ना ही भले ग्रहों की मदद दिये हुए वक्त के बाद तक रह सकती है। अगर हो सकता हो तो सिर्फ यह कि एक ग्रह का असर खत्म और दूसरे के शुरु के दरमियान40 दिन फालतू होंगे यानि बुरे ग्रह की अवधि के 40 दिन बाद तक उसका असर बुरा हो सकता है और शुरु होने वाले अमूमन नेक मददगार ग्रहों के अपनी अवधि से 40 दिन पहले ही प्रभाव होना माना है इकट्ठे असर के सिर्फ 40 दिन ही होंगे, मगर दोनों ग्रहों के जुदा-जुदा 40-40 दिन प्रभाव न होंगे। ये रियायती 40 दिन हैं। इस नियम पर छिला (प्रसूति) सूतक 40 दिन और

मातम 40 दिन का मनाया जाता है।

2. क्योंकि इल्म में 28 नक्षत्र और 12 राशियों की गिनती को छोड़ दिया है, अत: दोनों की जमा 40 दिन कम से कम या ज्यादा से ज्यादा 43 रियायती दिन तक उपाय का असर पूरा होगा जिसकी निशानी वक्त से पहले ही नेक ग्रह का असर हो जाने के वक्त, दोस्त ग्रह की चीज़ों की कुदरती निशानियों और बुरे ग्रह की मियाद 40 दिन बाद रहने वाली हालत में पापी ग्रहों की निशानियाँ हुआ करती है।

तमाम ग्रह बालिहज़ ताकत :-सूर्य, चन्द्र, शुक्र, वृहस्पति, मंगल, बुध, शनि, राहु, केतु क्रम से आपसी मुकाबले में ताकत में कम है।

टकराव या बर्ताव पर ताकत का पैमाना

जब दौरा या त त का मालिक ग्रह से कोई और ग्रह दूसरा टकरा जाये, टकराव दुश्मनी की, बर्ताव दोस्ती में हो तो सूर्य 9/9, चन्द्र 8/9, शुक्र 7/9, वृ० 6/9, मंगल 5/9, बुध 4/9, शनि 3/9, राहु 2/9, केतु 1/9 ताकत का होगा। दौरा के वक्त ग्रह के बाहम टकराव से इनके बाहमी असर में कमी बेशी होने के अलावा किसी के उपाय हेतु दूसरे ग्रह का उपाय करने के वक्त भी यह ताकत का पैमाना मददगार होगा।

ग्रह की दूसरी अवस्था : ग्रह फल और राशिफल :-

जब कोई ग्रह अपनी निश्चित राशि का मालिक या उच्च-नीच फल के लिए ठहराई हुई राशि या अपने पक्के घर की बजाय किसी दूसरी और राशि में जा बैठे या किसी दूसरे ग्रह का साथी ग्रह, जड़ अदला-बदली करने वाला वगैरा बन जाये तो वह ग्रह ऐसी हालत में राशिफल या शक्की हालत का ग्रह होगा। जिसके बुरे असर से बचने के लिए शक का फायदा उठाया जा सकता है। इसके विरुद्ध यानि ऊपर कही हुई हालत के उल्ट हाल पर जब कि वह उच्च-नीच घर का, या अपने घर का, पक्के घर का साबित हो तो ग्रह पक्की हालत का होगा जिसका असर हमेशा के लिए मुकर्रर हो चुका है। उसके बुरे असर को तबदील करना व्यर्थ बल्कि इन्सानी ताकत से बाहर होगा। सिर्फ खास-खास खुदा रसीदी और महदूद हस्तियाँ ही रेख में मेख यानि सूरज मेष राशि में खाना नं० 1 में कैद लगा सकती है। मगर वो भी आखिर तबादला ही होगी। यानि एक जानदार या दुनियावी चीज़ या ताकत को उसकी हस्ती से मिटा कर उसके एवज़ में दूसरी जानदार या ताकत पैदा कर देगी। उदाहरण के तौर पर बाबर- हुमायुं के किस्से। मगर नया ही दूसरा हिस्सा फिर भी पैदा न होगा, सिवाय उस वक्त के जब सभी हस्तियाँ खुद अपनी ताकत या अपने ही आप तबाह कर ले और एवज़ में किसी दूसरे तक नौबत नहीं आने देती। यह हालत भी उनकी खुदाई शरीफ होने की होगी । कोई न कोई तबादला दिया गया, मगर ग्रह फल फिर भी न टला। ग्रह फल को राजा कहे तो राशिफल उसका साथी वज़ीर होगा। ग्रह फल की मंदी हालत के वक्त कौन सी चीज़ बतौर राशिफल मददगार हो सकती है ग्रहों के उपाय में देखो।

35 साला चक्कर

ग्रहों के आम दौरा के साल (= योग 35), वृ०=6, सू०=2, चं०=1 आदि हैं।

1. 35 साल के बाद सब ग्रह अपना चक्कर पूरा कर जाते हैं और जो ग्रह पहिले चक्कर में बुरा असर करते हों वो अपने दूसरे चक्कर में यानि 35 साल के बाद दूसरी चाल में बुरा असर न देगें । यह शर्त नहीं कि वो भला असर जरुर देंगे। ग्रहों की 35 साल मियाद 35 साला चक्कर कहलाती है। ग्रहों का 35 साला चक्कर और इंसान की उम्र का 35 साला चक्कर दो अलग बाते हैं। उदाहरणत: मान लो कि एक इंसान के जन्म दिन से ही वृहस्पति के दौरा शुरू हुआ है बाकी ग्रह भी इसी तरह यानि वृहस्पति 6 साल और क्रम से अपना 35 साल का दौरा पूरा करेंगे। लेकिन हो सकता है कि इसका पहला ग्रह वृहस्पति के बजाय शनि शुरु हो और जन्म दिन की बजाय 7 वें साल से शुरु हो। अब तमाम ग्रह 35 साल में ही अपना दौरा पूरा कर लेंगे। जब आखिरी ग्रह का आखिरी दिन होगा उस वक्त इंसान की उम्र 35 साल का दौरा जमा 6 साल, जब अभी शनि या उम्र का पहला ग्रह शुरु नहीं हुआ था, यानि कुल उम्र 41 है और दूसरा चक्कर जन्म दिन वाले ग्रह की दूसरी चाल होगी।
2. ये चक्कर एक आम प्राणी की उम्र 120 साल में तीन बार आ सकते हैं ।
3. अगर दायीं तरफ (हाथ की रेखाओं और कुण्डली के पहले घर के ग्रहों) का असर उम्र के पहले हिस्से (शुरु की तरफ से चल कर) में हो गया हो तो बाकी तरफ का असर बाद में होगा।
4. 35 साला चक्कर के सबब बाप बेटे की उम्र का आपसी ताल्लुक 70 साल में खत्म माना गया है।
5. इस 35 साला चक्कर का पूरा इस्तेमाल वर्षफल के हाल में दर्ज है।
6. 35 साल चक्कर में हर ग्रह की मियादों में दरमियानी ग्रहों की मियाद (वर्ष)।

किस ग्रह का दौरा	शुरु	मध्य	अंत
वृ० 6	के० 2	वृ० 2	सू० 2
सूर्य 2	सू० 8 मास	चं० 8 मास	मंगल 8 मास
चं० 1	वृ० 4 मास	सू० 4 मास	चन्द्र 4 मास
शु० 3	मं० 1	शु० 1	बुध 1
मं० 6	मं० 2	श० 2	शु० 2
बु० 2	चं० 8 मास	मं० 8 मास	वृ० 8 मास
श० 6	रा० 2	बु० 2	श० 2
रा० 6	मं० 2	के० 2	रा० 2
के० 3	श० 1	रा० 1	के० 1

जन्म दिन का ग्रह और जन्म वक्त का ग्रह :-

जिस दिन पैदाइश हो उस दिन का मुतल्लका ग्रह जन्म दिन का ग्रह होगा। जिस वक्त पैदाइश हो उस वक्त का मुतल्लका ग्रह वक्त का ग्रह होगा। ह ते के दिनों की तरह ग्रह के नाम सोमवार से शनिवार तक सात ही हैं। हरेक सायंकाल को आठवां राहु, सुबह को 9 वां केतु होगा।

नोट :- अंग्रेजी ढंग से रात को 12 बजे नया दिन शुरु होता है परंतु ज्योतिष में सूर्य उदय से ही नया दिन शुरु होगा।

एक दिन के ग्रह का वक्त

सूर्य निकलने के बाद दिन का पहला हिस्सा वृ०, बाद पक्की दोपहर से पहिले (जो पहिले दिया है), चांदनी रात चंद्र का समय, अमावस की रात्रि शुक्र का समय होगा (विवरण पहले दे दिया गया है)।

जन्म दिन के और जन्म वक्त के ग्रहों का आपसी स बन्ध

1. जन्म दिन के ग्रह को गिनते हैं:- किस्मत के ग्रह को जगाने वाले ग्रह का पक्का घर या राशिफल का यानि जिसका उपाय हो सके।
2. जन्म वक्त के ग्रहों को गिनते हैं किस्मत का ग्रह और ग्रह फल का अटल (उपाय रहित)।
3. जन्म वक्त के ग्रह को जन्म दिन के पक्के घर का गिनेंगे अब

   उदाहरण: **मानों जन्म दिन का ग्रह - चंद्र**

   मानों जन्म दिन का ग्रह - राहु

   तो जैसे अब राहु चंद्र के पक्के घर यानि खाना नं० 4 में होगा चूंकि जन्म दिन का ग्रह राशिफल या काबिल उपाय होगा माना है इसलिए नं० 4 राहु, खाना नं० 4 (रिश्तेदारों आदि का) कभी बुरा असर न देंगे। अगर कभी दे भी तो चन्द्र के उपाय से नेक असर होगा।

इस अर्थ में ग्रहों के पक्के घर

ग्रह	वृहस्पति	सूर्य	चन्द्र	शुक्र	मंगल	बुध	शनि	राहु	केतु
खाना	9	1	4	7	3	7	10	12	6
दिन	वीरवार	रविवार	सोमवार	शुक्रवार	मंगलवार की शाम	बुधवार की सुबह	शनिवार	वीरवार	रविवार

सामान्य बातें

1. शेष खाने:- **2 धर्म स्थान, 5 औलाद, 8 मारक स्थान, 11 धर्म दरबार।**
2. पापी ग्रह :- **राहु, केतु, शनि।**
3. पाप ग्रह :- **राहु, केतु।**

4. मंगल दो है :-
मंगल नेक व मंगल बद।

5. बुध :- **सूर्य श० मुश्तरका (रात दिन इकट्ठे) खाली बुध होते हैं । अगर बुरी खासियत ऐसे घरों में हो जहां सूर्य शनि और दोनों में से कोई भी मंदा हो तो न सिर्फ सूर्य 22 साला उम्र और शनि 36 साला उम्र तक नीच होगा बल्कि मं० भी बद और राहु भी मंदा होगा, चाहे मंगल या राहु कैसे भी उच्च या मंदा हो।**

6. अंधे ग्रह :-
अगर खाना नं० में 10 बाहम दुश्मन ग्रह हो या नीच हैसियत वगैरा रद्दी ग्रहों से खराब हो रहा हो तो टेवा अंधे ग्रहों का होगा और तमाम ही ग्रह मय शनि खुद भी चाहे उच्च घरों के हो अंधों की तरह फल देंगे।

7. रतांध ग्रह :-
मसलन खाना 4 में सूर्य और ाना 7 में शनि तो ऐसा टेवा रतांध होगा।

8. धर्मी ग्रह :-
राहु और केतु खाना नं० 4 चन्द्र के सामने हल्फ उठाते हैं शनि खाना नं० 11 में वृहस्पति को हाजिर-नाजिर समझ कर राहु केतु के किये पापों का जज बनता है। यानि राहु और केतु खाना नं० 4 में या चन्द्र के साथ किसी ाी घर में हो और शनि खाना नं० 11 में या वृहस्पति के साथ किसी भी घर में हो तो ऐसे टेवे में पाप या पापी दोनों का बुरा असर न होगा और सब ग्रह धर्मी होंगे। ये ज़रूरी नहीं कि पापी अच्छा फल देगा पर बुरा नहीं करेंगे।

9. साथी ग्रह :-
जब कोई ग्रह अपनी राशि, उच्च, नीच घर की राशि या अपने पक्के घरों में अदल-बदल कर बैठे या अपनी जड़ों की लिहाज इकट्ठे हो तो साथी ग्रह बन जाते हैं। उदाहरण के तौर पर सूर्य नं० 10 और शनि नं० 5 साथी हैं।

10. कुण्डली के खानों की बीच की दीवार :-
हम साया ग्रहों यानि दोस्तों को तो मिलाती है मगर दुश्मनों को अलग-अलग ही रखती है। अत: दो मित्र ग्रह लगातार घरों में बैठे हो तो भी साथी कहलायेंगे जो एक-दूसरे का कभी बुरा न करेगें । मगर दुश्मन गिनने की हालत में दो खानों की दरमियानी लकीर उनको जुदा-जुदा रखेगी।
क्याफा :- एक रेखा के साथ दूसरी रेखा समानान्तर, एक ही किस्म की रेखा होगी, बशर्ते कि दोनों एक बुर्ज पर हो। ऐसे शाखों से मुराद होगी कि कोई अपना ही भाई बहन साथ चल रहा होगा या दूसरी शाखा अपने खून का ताल्लुकदार बताएगी।

11. **बिनमुकाबिल के ग्रह :-**
जो ग्रह आपस में दोस्त हों मगर ऐसी हालत में बैठे हों कि वो खुद तो दोस्त ही रहें पर उनमें से हर एक या किसी की जड़ पर आगे दुश्मन ग्रह हो जाये तो ल ज़ बिनमुकबिल से याद होंगे क्योंकि अब उनमें किसी न किसी तरह से दुश्मनी भाव हो गया है।

12. दुश्मनी से मारे हुए मंदा असर होने के वक्त ग्रहों के कुर्बानी के बकरे :-
यानि असली ग्रह के बजाय किसी दूसरे ग्रह की हालत खराब हो जाये या वो अपनी जगह दूसरे को मरवा डाले।
शनि :- दुश्मन से बचाव के लिए शनि ने राहु केतु एजेन्ट बनाये हैं कि वो शनि की जगह फौरन किसी दूसरे की कुर्बानी देते हैं।
(राहु केतु) = मसनुई शुक्र है अत: शनि को जब सूर्य का टकराव तंग करे तो खुद अपनी जगह औरत **(शुक्र)** को मरवा दे या सूर्य शनि के झगड़े में शुक्र मारा जाये। दोनों सूर्य शनि बचे रहेंगे क्योंकि ये बाप बेठा है। मसलन सूर्य 6 में और शनि 12 में औरत पर औरत मरती जाये।
बुध :- बुध ने भी अपने बचाव के लिए शुक्र से दोस्ती रखी है वो भी अपने दोस्त शुक्र की ही बलायें टालता है ।
मंगल :- बद (भाई) अपनी बला केतु (लड़के) पर टालता है, शेर कुत्ते को मरवा देगा। उदाहरण के लिए सूर्य 6 में मंगल खाना नं० 10 में हो तो लड़के पर लड़के (केतु) मरता जाये या भाई भतीज़े को मरवा दे।
शुक्र :- औरत शैतान स्वभाव अपनी बला चन्द्र (माता) को धकेल देगी। चन्द्र शुक्र बिन मुकाबिल हो माता अंधी हो ।
वृहस्पति :- साथी केतु कुर्बानी का बकरा हो। उदाहरण के लिए वृहस्पति खाना नं० 5 में और केतु किसी और घर में हो। अब अगर वृहस्पति की महादशा आये तो केतु का खाना नं० 6 का फल रद्दी होगा। औलाद का नहीं जो खाना नं० 5 की

चीज़ है, मामों को केतु की महादशा सात साल तकलीफ होगी।

सूर्य :- केतु पर नज़ला डाल देगा।

6 **चन्द्र :-** दोस्त ग्रहों वृहस्पति, सूर्य, मंगल पर बला टाल दे।

राहु केतु :- खुद ही निभाएंगे और अपनी ही मुतल्लका चीज़ों काम स बन्धी पर बुरा असर होगा।

नोट :- सूर्य, मंगल, वृ० इंसाफ के स्वामी होते हुए एक-दूसरे की मदद तो करेंगे और एक-दूसरे पर ज्यादती होते न देखेंगे मगर खुद मुसीबत में होने पर गरीब केतु को मरवा देते हैं।

धर्म स्थान :- धर्म पालन, पूजा पाठ, इष्ट सिद्धि हर मज़हब के लिए अपने श्रद्धा की जगह, नास्तिक के लिए चलता दरिया, नदी, शनि का चौराहा+धर्म स्थान का काम देगा।

13. कायम ग्रह :-

जो ग्रह दुरुस्त अपना असर, बगैर किसी दुश्मन ग्रह के असर की मिलावट के, साफ और कायम दे रहा हो यानि राशि के स्वामित्व या उच्च-नीच या पक्के घर, दृष्टि वगैरा से भी इसमें दुश्मन का असर न मिल रहा है और न ही दुश्मन का साथी बन रहा हो तो कायम ग्रह होगा।

14. ग्रह का घर :- अपनी राशि के घर ग्रह के घर होंगे।

15. घर का ग्रह :- (पक्का घर) कारक ग्रह होंगे। उदाहरणत: बुध खाना का पक्का घर है।

16. सम, दुश्मन और दोस्त ग्रह :- पिछली लिस्ट में देखें।

17. उच्च ग्रह, नीच या पक्के घर का ग्रह :-

हर ग्रह की उच्च-नीच, घर या पक्के घर दी गई लिस्ट में हैं :-

उच्च = 100 प्रतिशत शक्तिमान।

नीच = 100 प्रतिशत नामुक मल असर की ताकत।

18. बालिग और नाबालिग ग्रह :-

क्याफा :- 12 साल तक हस्त रेखा का कोई ऐतबार नहीं और 21 साल के बाद कोई तबदीली नहीं।

सूर्य खाना नं० 1, 5, 11 में हो तो या बुध खाना नं० 6 में हो तो टेवा बालिग होगा।

नाबालिग बच्चे की रेखा मुमकिन है कि पक्के असर की रेखा हो या तबदीली वाली हो। बच्चे की बन्द मुट्ठी और कुण्डली का खाना 1, 4, 7, 10 खाली हो या उनमें सिर्फ पापी ग्रह या बुध अकेला (पापी ग्रह और बुध दोनों में से सिर्फ एक हो) तो टेवा नाबालिग ग्रहों का होगा। ऐसे प्राणी की किस्मत का हाल 12 साल उम्र तक शक्की होगा। ऐसी हालत में नाबालिग ग्रहों वाले बच्चे की किस्मत का मालिक नीचे दिये गये ग्रह होंगे, उम्र के हिसाब से असर खाना नं० देखें। अगर कुण्डली में कोई खाना खाली हो जाये तो उस खाना खाली नं० के मालिक ग्रह जिस खाने में हो वह खाना लेवे। बालिग ग्रहों के मामले में आम हालत सही होगी।

घर का मालिक	किस्मत के संबंध में किस खाने का असर मददगार लेंगे	नाबालिग ग्रहों का टेवा होने वाले बच्चे की उम्र का साल
शुक्र	7	1
चन्द्र	4	2
वृहस्पति	9	3
शनि	10	4
शनि	11	5
बुध	3	6
शुक्र	2	7
सूर्य	5	8
बुध केतु	6	9
वृहस्पति राहु	12	10
मंगल	1	11
मंगल	8	12

फरमान नं० 7 :- बुत से रुह ने अपना घर क्यों पूछ लिया

राशि मालिक है लेख की होती,
मिल के कटेगी उम्र दोनों की',
घर पहले की उम्र 10 साल,
85 उम्र 4,7 की लेते,
75 या साल 75 ग्रह मन्दिर,
घर और ग्रह की उम्र जुदा,
गुरु जगत् की उम्र 75,
शुक्र चन्द्र की उम्र 85,
स्त्री ग्रह जब मिले नरों से,
साथ मिले जब बुध पापी का,
रवि मालिक है पूरी सदी का,
ग्रहण लगे जब रवि चं० का,
या कि होता ग्रह मण्डल हो।
कुण्डली जन्म चाहे चन्द्र हो।
3, 9, 10, 12 की हो।
8 होती घर 6 की।
घर दो की है।
पर गुजरती दो की इकट्ठी हो।
बुध केतु 8 होती हो।
शनि मंगल राहु 9 हो।
उम्र 96 होती हो।
वही 85 होती हो।
उम्र लम्बी उसकी होती है।
उम्र तीन साल कम होती है।

1- इस जगह लिखी उम्र ग्रह राशि की अपनी-अपनी है, इन उम्रों में इंसानी उम्र की कोई हदबन्दी नहीं होती। ये ग्रह अपने उम्र या घर की उम्र जो छोटी हो उस तक ही मनुष्य के जीवन में अपना असर दे सकेंगे।

ग्रह राशि का आपसी संबंध

(मेष वृश्चिक का मंगल स्वामी है वगैरा।)

नोट :- **ग्रह उच्च-नीच घरों में भी इसी प्रकार होते हैं :- जैसे राशियों में।**

केतु बैठा अगर कन्या राशि,
पाप चढ़ा आसमान 12 पर,
राहु निवासी 12 का है।
जड़ जिसकी पाताल में है।

राशि नं०	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
राशि नाम	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कु भ	मीन
ाविक ग्रह	मं०	शु०	बु०	चं०	सू०	बु०	शु०	मं०	वृ०	श०	श०	वृ०
उच्च ग्रह	सू०	चं०	रा०	वृ०	-	रा/बु०/	श०	-	के०	मं०	-	शु०/ के०
नीच ग्रह	श०	-	के०	मं०	-	शु०/ के०	सू०	चं०	रा०	वृ०	-	बु०/ राहु०
पक्का घर	सू०	वृ०	मं०	चं०	वृ०	के०	बु/शु०	मं०/श	वृ०	श०	वृ०	रा0
किस्मत को जगाने वाला	मं०	चं०	बु०	चं०	सू०	रा०	शु०	चं०	वृ०	श०	वृ०	के०
ग्रह फल का	म०	रा०/ के०	श०	चं०	वृ० सू०	बु० के०	शु०	मं०	वृ०	श०	वृ०/ श०	रा०
राशिफल का	रा०		श० धन	म०/ शु०/के०	-	नरग्रह श०	सू०/ वृ०/रा०	-	श०	बु०/ के०	-	बु०

नोट:- सात ग्रह और 12 राशि या 12 गुणा 7 = 84 की योनि का जंजाल या रात-दिन 84 लाख सांस का अजीब मसला पैदा हो चुका है। हर सातवें के बाद फिर वो ग्रह असर करते हैं या हर आठवें साल वही हालत हो जाती है। इसी असूल पर ग्रह व राशि का असर वहाँ मुश्तरका होते हैं। खाना नं० 2 में कोई नीच नहीं है, राहु केतु सिर्फ दोनों की मुश्तरका बैठक है जिसके राशिफल का ग्रह नहीं है यानि इस खाने का ग्रह अपने-अपने कर्मों पुण्य पाप की बजात खुद अपनी जांच से मुतल्का के करने-कराने के खुद अधिकारी है। खाना नं० 5 में उच्च-नीच नहीं है इस घर में बैठने वाला ग्रह अपनी खुद जाती कमाई/औलाद खुद की किस्मत का ग्रह होता है। खाना नं० 11 में भी कोई उच्च नहीं है ये आम दुनियां से किस्मत का लेन-देन है। खाना नं० 8 का उच्च नहीं होता न ही कोई मौत को मार सकता सिवाय चन्द्र के जो दिल की शांति या ग़ैबी मदद वगैरा है। दुनियां को माता माना तो इंसान को बच्चा गिना है, माता के पेट में बच्चे की तरह रहने वाला।

राहु- केतु :-

गौर से देखने पर लगेगा राहु खाना नं० 12 में घर का मालिक पक्का घर में है पर नीच भी है। केतु खाना नं० 6 में नीच और मालिक है। मतलब यह है कि राहु जब वृहस्पति के घर खाना नं० 12 में हो तो नीच होगा, हालांकि वृहस्पति और राहु बाहम दुश्मन नहीं हैं। राहु के वक्त जब वृ० राहु इकट्ठा हो तो वृहस्पति चुप होगा। राहु— आसमान खाना नं० 12 नीला रंग माना है वृहस्पति की हवा को जब आसमान का साथ मिले तो ज्यों-ज्यों हवा आसमान की ओर होती जायेगी, हल्की होती जायेगी और दुनियादारी के सांस लेने के संबंध में निक मी होती जायेगी। लेकिन वही वृहस्पति की हवा नीचे की तरफ होती जायेगी तो केतु के साथ होती जायेगी तो हर एक की मददगार होगी। इस असूल पर (राहु, वृहस्पति) में न सिर्फ वृ० का हाल चुप होगा बल्कि राहु भी बुरा असर देगा या दमा, सांस वृहस्पति की ताकत, दम घुटने पर नतीजा मंदा होगा। इसके खिलाफ राहु को बुध के खाली आकाश में खुला मैदान मिलता जाये तो खाना नं० 12 के आसमान की बजाय बुध के खाली आकाश में ही हो तो राहु का फल ज़रूर ही अच्छा बल्कि उ दा असर देगा। यह राहु को बुध के खाना नं० 6 या बुध का साथ मिले तो नेक असर देगा। राहु है भी बुध का दोस्त। अत: दोनों का फल उ दा होगा या दोनों ही खाना नं० 6 में हैं उच्च फल के और दोनों में से हरेक या दोनों ही खाना नं० 12 में मन्दे फल के होंगे। राहु को फर्जी तौर पर आसमान माने तो यह फर्जी दीवार वृहस्पति को साफ कह देगी कि वृ० तुम मेरे ऊपर ग़ैबी दूसरी (परलोक) दुनियां या मेरे नीचे दुनियां (लोक) में से एक तरफ ही रहो या गोया राहु ने वृ० को एक तरफ कर दिया या राहु के साथ वृ० दो जहानों में से एक ही जहान का मालिक रह जाता है, या दो में से एक तरफ के लिए वृहस्पति चुप ही गिना जाता है।

क्यापा :- (हमसाये ग्रह) :- हथेली के बाहरी हद का असर

1. अंगूठा व तर्जनी की जड़ के बीच का फासला जिसमें मंगल नेक व वृ० है = हौंसला या अंदरुनी दिली ताकत का संबध।
2. तर्जनी और मध्यमा का फासला = वृ० और शनि के बीच = विचार शक्ति।
3. मध्यमा और अनामिका का फासला = श० और सूर्य के बीच = यालात की आज़ादी, मौके की तरह लट्टू की तरह पहलू बदले।
4. अनामिका और कनिष्ठका का फासला = सूर्य और बुध के बीच = खुद काम करने की ताकत तथा आदत अधिक, दूसरों की कमाई की तरफ उ मीद रखने की बजाय खुद अपनी कमाई से संतुष्ट।
5. कनिष्ठका की जड़ और बुध का भाग अगर हथेली के बाहर की और निकला हो तो सिर्फ बुध के पर्वत की हद— बोलने की ताकत, लोगों में रसूख पैदा करने की ताकत ज्यादा।
6. शुक्र की जड़ से चन्द्र की जड़ का भाग (कलाई का चौड़ापन) दिली मुहब्बत और लगन, शुक्र या औरत की लगन्न, इश्क मुहब्बत, नफसानी, माता-पिता के बुर्जुगों की सेवा से स बन्धित है।

हथेली के चारों तरफ :-

1. बुध से चन्द्र की तरफ वाला भाग जिस कदर ल बा और ज्यादा उसी कदर बोलने की ज़ुबान की ताकत ज्यादा। जिस कदर कनिष्ठका जड़ से बाहर उभरी और निकली हो उसी कदर रसूख पैदा किया और पैदा करने की ताकत।
2. वृहस्पति से बुध की तरफ उंगली की जड़ वाला भाग ल बाई में ज्यादा उसी कदर ज़हनी ताकत, दिमाग़ी ताकत ज्यादा उसी कदर बुध के पर्वत की मज़बूती होगी।
3. शुक्र से चन्द्रमा जिस कदर ल बाई ज्यादा हो शुक्र की ताकत ज्यादा शुक्र का असर ज्यादा जायेगा।
4. शुक्र की जड़ से वृहस्पति तक जिस कदर ल बाई ज्यादा उसी कदर जाती हिस्सा हौसला ज्यादा या अंगूठे की ताकत ज्यादा या मंगल नेक का असर ज्यादा होगा।

हथेली की किस्में :-

1. हथेली मोटी या भारी :- लालची होगा। मामूली रहने की ज़िन्दगी वाला, क्योंकि इस हालत में तर्जनी— हासिद, मध्यमा— बेबुनियाद यालात, अनामिका— मशहूरी पसन्द, कनिष्ठका— बेवफा जाहिर करे।
2. हथेली पतली कमज़ोर सी :- गरीबाना हालत या गरीब सा दीनदार वाला होगा।
3. हथेली ल बी :- ज़ुबान से जाहिरदारी या जाहिर करने की ताकत ल बाई के हिसाब से होगी।
4. ल बी व गोल हथेली :- हुक्मरान, हंसमुख, सुथरी हालत।

केतु :- बुध के साथ या खाना नं० 6 में हो तो नीच होगा। लेकिन वृहस्पति केतु इकट्ठे हो तो वे उच्च का फल देगा। केतु वृहस्पति के साथ बराबर का फल देगा। राहु केतु अपने से सातवें देखने के असूल पर के ग्रह है। अब राहु अगर 3-6 के

बुध के घर में उच्च हो तो केतु 3-6 में नीच होगा। यही हाल केतु 9-12 में हो तो उच्च में होगा। राहु 9-12 में नीच होगा। गरज़े राहु केतु को अपने दायरे में चलाने वाला हो।

बुध :- जब बुध राहु के घर 12 में नीच होगा क्योंकि खाना नं० 12 उसके दुश्मन ग्रह वृहस्पति का है और जब बुध ही केतु के घर खाना नं० 6 में हो तो उच्च का होगा क्योंकि यह राशि 6 बुध की अपनी ही राशि है और बुध और केतु आपस में बराबर के ग्रह हैं। दोनों ही शुक्र के दोस्त हैं। बुध पर कोई असर नहीं होगा परन्तु केतु शुक्र दोनों ही खाना नं० 6 में नीच होंगे। वृहस्पति के साथ वृहस्पति के खानों में राहु हाथी का तेंदुआ होगा या वृहस्पति के साथ वृहस्पति के घरों में राहु बुरा फल देगा और नीच होगा। बुध के साथ या बुध के घरों में केतु कुत्ते को सर पागल या दीवाना नीच फल का होगा क्योंकि केतु राहु मुश्तरका के लिए खाना नं० 6-12 ाी बुध वृहस्पति के हैं जहां कि उन्हें जगह मिली।

1. खाना नं० 6 बाहैसियत मालिक ग्रह :- खाना नं० 6 के बुध केतु मुश्तरका माने गये हैं जब खाना नं० 6 खाली है और बुध 3 में हो तो खाना नं० 6 का खाली खाना नं० 6 का मालिक केतु को लेंगे। लेकिन जब बुध खाना नं० 3 में न हो, खाली नं० 6 के लिए बुध और केतु में से वो मालिक होंगे जो कि टेवे में दोनों में अच्छा होगा।
2. खाना नं० 12 बाहैसियत मालिक ग्रह :- खाना नं० 12 के मालिक राहु और वृहस्पति मुश्तरका माने हैं। जब नं० 12 खाली हो तथा वृहस्पति खाना नं० 9 में न हो तो खाना नं०12 का मालिक राहु होगा। लेकिन जब वृहस्पति 9 में हो तो खाना नं० 12 के लिए वृहस्पति और राहु मुश्तरका दोनों का नकली ग्रह बुध (आकाश) लेंगे।
3. केतु खाना नं० 6, राहु खाना नं० 12 में नीच होंगे, घर के मालिक भी। उनकी शक्ी हालत के लिए जब राहु को बुध और केतु को वृहस्पति की मदद मिले यानि राहु खाना 3-6 में और केतु 9-12 में हो तो दोनों ही उच्च होंगे वरना नीच होंगे। यानि राहु 9-12 में नीच होगा, केतु 3-6 में नीच होगा।

विस्तृत :- जैसा बुध टेबे में हो वैसा राहु नं०12 का भी असर होगा। जैसा वृहस्पति टेवे में हो वैसा केतु नं० 6 का प्रभाव होगा।

ग्रह बुर्ज या राशियों की भ्रम :-

राशि से मतलब यह है कि मकान की ज़मीन और उसके मालिक से मुराद है मकान की इमारत की।

क्याफा :- बुर्जों को पक्के बतौर पर जगह मुकर्रर कर दिया गया है। इसी तरह से राशियों के लिए भी हमेशा के लिए जगह मुकर्रर कर दी गई। ग्रहों के लिए रहने की जगह को बुर्ज या ग्रह का घर होंगे और राशियों के लिए निश्चित उंगलियों की पोरी की राशि का पक्के घर है। हर बुर्ज या ग्रह और राशि का निशान निश्चित है। ग्रह के निशान से ग्रह का जिस्म या ताकत या असर लेंगे। मगर उसके लिए जो जगह हथेली पर हमेशा के लिए मुकर्रर हो वही मुकाम इस ग्रह का घर होगा चाहे ग्रह खुद किसी दूसरे के घर में हो। इसी तरह ही राशियों के हाल में यानि राशि की जगह उंगली की पोरी पर है वह राशि का घर है। जो निशान राशि का है वह राशि का है वह राशि का दिया असर या जिस्म या वजूद होगा। इसी तरह किसी बुर्ज का निशान किसी दूसरे के घर में पाया जाये तो कहेंगे कि वे ग्रह इसी ग्रह के घर में चला गया है। मिसाल के तौर पर अगर सूर्य का सितारा चन्द्रमा के बुर्ज पर स्थित है तो चन्द्रमा के घर में सूर्य गिना जायेगा और अगर यही सितारा शुक्र के घर पर हो तो शुक्र के घर में सूर्य को कहेंगे, अब सूर्य और शुक्र का या सूर्य चन्द्रमा का आपस में ताल्लुक हो वही असर होगा। इसी तरह हर राशि के निशान का प्रभाव लेंगे। यह ज़रूरी नहीं कि हर राशि का निशान उंगली की पोरी पर स्थित हो जहां कि उस राशि का मुकाम निश्चित होगा और अगर कोई भी निशान राशि का ना पाया जावे तो हैरानी की बात नहीं, ग्रहों या बुर्जों से पता चलेगा।

फरमान नं० 8 :- (12 पक्के घर)

प्राचीन ज्योतिष के अनुसार जन्म कुण्डली बनाई गई उसमें दिये गये तमाम के तमाम अंक (राशिएं) मिटा दिये, मगर ग्रह जहाँ है वहीं ही रहने दिये। फिर लग्न के घर में मेष (नं० 1) लिखा गया और राशियों से भर दिया। अब यह घर लग्न को 1 गिनकर फलादेश देखने के लिए हमेशा के लिए ही मुकर्रर हो गये और इस इल्म को 12 पक्के घर कहा गया।

खाना नं० 1
(लग्न का घर या कुण्डली का पक्का घर)

शाह सलामत का त त बादशाही या हुजूर का क दम मुबारक।

ग्रह का पहिला है तख्त हज़ारी,
ज्योतिष में इसे लगन भी कहने,
उच्च बैठे ग्रह उत्तम कितने,
खाली पड़ा घर 7 जब टेवे,
लग्न बैठा ग्रह तख्त निशानी,
आँख गिना घर आठ है उसकी,
अकेला तख्त पर बहुत हो सात में,
उल्ट गया मगर जब टेवे बैठे,
उच्च-नीच' जो गिने घरों के,
बाकी ग्रह सब झगड़ा करते,
ग्रह फल राजा कुण्डली का।
झगड़ा जहाँ रहे माया का।
दस्ती लिखा विधाता का हो।
शक्की असर कुल ग्रह का हो।
राज शाही तब करता हो।
11 से हरदम चलता हो।
राज वज़ीरी होती है।
जड़ सातवें की कटती है।
वह नहीं एक साथ लड़ते।
उम्र से भी कुछ मरते है²

1. खाना नं० 1 में सूर्य उच्च, शनि नीच है। मंगल घर का ग्रह होगा और 7 वें शनि उच्च, सूर्य नीच, शुक्र घर का ग्रह होगा।
2. मसलन खाना नं० 1 में वृ०, चं०, बुध, राहु चार ग्रह में और 7 वें अकेला केतु हो तो 35 साल बुध की अबधि तक नर औलाद केतु नदारद और या पैदा होकर मर जाये और 48 साल उम्र बल्कि केतु की मियाद तक एक ही लड़का कायम रहे और 48 साल उम्र से दूसरा लड़का कायम होवे तो बुध (लड़की) बेघर बेइज्जती या मंदे नतीजों या बर्बाद होगी। टेवे वाला असर चार जानदार (कन्या, घोड़ा, गाय और तोता) कोई भी चार को रोटी का हिस्सा देवे तो नर औलाद कायम होगी और औलाद पैदा होने के दिन से चन्द्र, राहु, वृहस्पति, बुध मुश्तरका राजयोग होंगे, वरना चन्द्र, राहु, बुध, वृहस्पति के उ दा असर की बजाय खाक या हर तरह से लानत नसीब होगी और जिस वक्त टेवे में असल मंगल के अलावा मसनुई मंगल नेक (सूर्य, बुध) या मसनुई मंगल बद (सूर्य, शनि) दोनों ही मौजूद हो तो वो नं० 1 देखेगा नं० 11 को, जब नं० 11 खाली हो तो नं० 1 का ग्रह अपने प्रभाव के संबंध में मेढें, या बुध की चाल पर जैसा कि वह उस वक्त टेवे में हो, चलेगा। उसी तरह यही जब नं० 8 खाली हो तो नं० 1 में ज्यादा ग्रह हो तो खाना नं० 1 का मुनसिफ इंसाफ करने वाला शुक्र होगा जैसे कि इस वक्त वो टेवे (खाना नं० 1 में ही) बैठा होगा। त त पर बैठे ग्रह चाली हुक्मरान राजा के अहद में उसके लिए खाना नं० 1 लैंस और खाना नं- 8 फोकसिंग गलास और 11 रैगुलेटर होंगे ।

हर ग्रह की हुकूमत यानि खाना नं० 1 में आने के वक्त दूसरे ग्रहों की उसके मुकाबल में ताकत का पैमाना :-

वृहस्पति के वक्त :- यह ग्रह किसी से दुश्मनी नहीं करता, चन्द्र 1/2, शनि 3/4, केतु 5/6, शुक्र 15/4 होगा। वृहस्पति खुद सूर्य और राहु के वक्त चुप होगा मगर बुरे ग्रहों के साथ अपना आधा अर्सा यानि 8 साल हमेशा नेक होगा और दुश्मनी का असर अगले 8 साल के बाद हो सकेगा।

सूर्य के वक्त :- यह ग्रह खुद नीच न होगा। शुक्र के साथ हो तो शुक्र नीच होगा। मगर दोनों के मिलाप से बुध पैदा होगा यानि फूल होंगे पर फल न होगा। केतु 1/2, बुध 1/2, शनि खुद अपने लिए बराये दौलत के लिए 2/3, वालिद के लिए 1/2, जायदाद के लिए 1/3 हो।

चन्द्र के वक्त :- इससे कोई दुश्मनी नहीं करता यह खुद अपना नेक असर किसी के साथ होने पर घटा लेता है, राहु 1/2 होगा।

शुक्र के वक्त :- यह किसी को नीच नहीं करता दूसरे चाहे इसको नीच करे, चं० 1/2, शनि 1/3 होगा।
शनि के वक्त :- चन्द्र 1/3, केतु 1/2 होगा।
बुध के वक्त :- शनि 5/4, केतु 1/4, चन्द्र 1/2 होगा।

मंगल नेक के वक्त :- शुक्र, शनि, मंगल बद तीनों ही 1/3 हरेक, केतु तथा बुध 1/2 हरेक, राहु सिफर होगा।
राहु के वक्त :- सूर्य, चन्द्र 1/2 होगा।
केतु के वक्त :- चन्द्र, सूर्य 1/2 होगा।

खाना नं० 2
(धर्म स्थान, उम्र बुढ़ापा)

घर चल कर जो आवे दूजे,
खाली पड़ा घर 10 जब टेबे,
बुनियाद समुद्र ग्रह 9 होते[1],
चाल असर ग्रह दूजे बैठे,
हवा बारिश जो 9 में चलती,
आठ पड़ा जब तक घर[2] खाली,
शुरु उम्र असर दूजे का,
जाती असर नेक जो अपना,
बुनियाद मंदिर[3] घर चौथा गिनते,
खाली होते गुरु मंदिर टेवे,
गुरु जहाँ 2 मंदिर कब्जा[4],
मारक घर से गुरु भी डरता,
ग्रह मुश्तरका बुरा नहीं करते,
फल 2,11 अपने-अपने,
ज्ञान समुद्र घर 9 वें का,
सफेद झंडा को हम साय झूले,
पाप की बैठक घर 2 गुरु के,
लेख जगत् का मस्तक गिनते,
ग्रह किस्मत बन जाता हो।
सोया हुआ कहलाता हो।
पहाड़ ऊंचा घर 2 का हो।
जेर (नीचे) असर गुरु साया हो।
टक्कर दूजे[3] पर खाती हो।
असर भला ही देती हो।
घर 6 में पड़ता हो।
वक्त बुद्धापे बढ़ता हो।
आठ छठे से मिलते जो।
असर रुहानी उम्दा जो।
पाप बैठक खुद साथी हो।
आठ दृष्टि खाली जो।
बन्द मुट्ठी[7] के खानों में।
धर्म मन्दिर गुरुद्वारा (नं:11) में।
या कल उम्र हो पहले का।
उम्र बुढ़ापा घर दो का।
गृहस्थी शुक्र भी बनता जो।
मौत जन्म जहान मिलता हो।

इस घर में मं० बद के नकली ग्रह [5] और पापी ग्रह [6] खुद टेवे वाले पर मन्दा प्रभाव न देंगे बल्कि इस घर में बैठा राहु भी वृ० के मातहत होगा। सब ग्रह अपना तमाम फल जो उनमें से हर एक का खाना नं० 9 में दिया है जातक काा उम्र के आखिरी हिस्से में देंगे। जैसे खाना नं० 9 में शनि का फल 60 साल लिखा है जो टेवे वाले की उम्र शुरु की तरफ से गिनकर बुढ़ापे की तरफ होगा। लेकिन जब श० खाना नं० 2 में हो तो शनि का वही असर मौत के दिन की तरफ से जन्म दिन की तरफ को गिनकर 6 साल होगा। इसी तरह बाकी भी प्रभाव देंगे।

1. खाना नं० 2 हमेशा 9 ही ग्रहों या खाना नं० 9, जो समुद्र गिना जायेगा, की बुनियाद होगा मगर खुद नं० 2 की मियाद खाना नं० 4 होगा।
2. जैसा भी वृ० टेवे में हो वैसी ही हवा के झोकों से साथ होगी।
3. खाना नं० 8 देखता है खाना नं० 2 को, खाना नं० 2 देखता है नं० 6 को, इसी तरह खाना नं० 2 में खाना नं० 8 का और खाना नं० 6 का आपसी संबंध हो जाता है।
4. खाना नं० 8 खाली हो तो खाना नं० 2 उ दा होगा, मगर जब खाना नं० 2 खाली हो तो सब कुछ उ दा होगा। वृ० नं० 2 और खाना नं० 8 खाली के वक्त पर वृ० मंदा ही होगा और वृ० की हवा मंदी आंधी होगी जो हर तरह का नुक्सान करेगी। मगर नं० 9 बरसाती हवा मौनसून के उठने का समुद्र हो तो खाना नं० 2 बारिश से लदी हवा से टकरा कर बरसाने वाला कोई पहाड़ों का ल बा सिलसिला होगा।
5. मंगल बद (सूर्य, शनि)
6. पापी ग्रह (राहु, केतु, शनि)
7. खाना नं० 1, 7, 4, 10
8. इस ग्रह के आखिरी उम्र बुढ़ापे में हमेशा नेक फल देंगे, किसी दूसरे असूल में कितने ही मंदे क्यों न हो।

धर्म स्थान या पेशानी का दरवाज़ा :-

दोनों भावों की दरमियानी मर्कज, जो नाक का आखिरी हिस्सा है जहाँ तिलक लगाने की जगह है, खाना नं० 2 की असली जगह है। इस तिलक लगाने की निशान की जगह को छोड़ कर माथे की बाकी जगह पेशानी होती है जिसका जिक्र खाना नं० 11 में है। जब खाना न० 2 हर तरह और हर तरफ खाना नं० 8 की दृष्टि वगैरा से खाली हो तो खाना नं० 2 को तिलक की जगह गिनते हैं। इस खाना नं० 2 में हवाई याल की तमाम ताकत में राहु केतु मुश्तरका की या नकली शुक्र की जगह को मानते हैं। खाना नं० 8 का असर जाता है खाना नं० 2 में और 2 देखता है 6 को। खाना नं० 2 का फैसला 2, 6, 8 को मिलाकर दूसरे शब्दों में खाना नं० 8 को अगर राहु केतु की शनि के साथ होने की बैठक माने तो उस बैठक में बैठ कर या मौत के दीवान खाने

का दरवाज़ा नं० 2 सिर्फ राहु केतु की अपनी नेकी बदी का मैदान मंदिर मस्जिद आदि होगा। इस धर्म स्थान का दरवाज़ा दोनों भावों के बीच होगा जिसका मालिक दोनों जहानों का स्वामी वृ० है। जिसके रास्ते की ल बाई के दोनों सिरों पर सू , श० और दिन-रात गिनते हैं, यानि दुनियां से बाहर नं० 8, नं० 11 के साथ वृ० की दूसरी ताकत खाना नं० 5 भविष्य, खाना नं० 9 भूतकाल के बीच जमाना हाल, वर्तमान नं० 1 या बंद मुट्ठी के खाने 1, 4, 7, 10 होगा। उसी तरह ही खाना नं० 2 ने कुल दुनियां से ताल्लुक न छोड़ा जिस तरह खाना नं० 4 ने अपनी नेकी न छोड़ी थी। अगर नाभि तमाम जिस्म का बीच या बंद मुट्ठी के खाना साथ लाये खज़ाना नं० 4, तिलक की जगह या दुनियां में बच्चों के लिए बाकी सब तरफ मिलने मिलाने वाला खज़ाने का भेदी खाना नं० 2 होगा। यानि खाना नं० 4 बढ़ाता है चन्द्र को, खाना नं० 2 बढ़ाता है वृ० को दोनों मिले मिलाये माता-पिता या अकेला वृ० दोनों जहानों का मालिक है जो बच्चों को मदद देने के लिए खाना नं० 5 में सूर्य के साथ और 11 में श० के साथ जा मिलता है, वृ० की इस ल बाई को सब की ल बाई गिनते है चाहे चेहरे की (खाना नं० 6 में देखें) हो चाहे पेशानी की (खाना नं० 11 देखें)।

तिलक की खास जगह वृ० का खाना नं० 2 राहु केतु मुश्तरका की बैठक की जगह, मसनुई शुक्र की राशि भी है, का दरवाज़ा है, खाना नं० 2 में ग्रहों का असर खाना नं० 8 सहित है। पेशानी पर तिलक लगाने की जगह त्रिकोण या केतु का निशान यानि खाना नं० 2 में हर तरह से अकेला केतु हो तो हुक्मरान गरीब होगा।

अंगूठा :- चाहे हाथ का या पांव का :-

जिस तरह सिर के ढांचे का मालिक बुध और उसके आन्तरिक दिमाग़ में हवाई याल की लहरें पैदा करने की ताकत का मालिक राहु है। इंसानी दिल का चन्द्र, जिसमें लहरों को उछालने या गिराने का बानी करने वाला ग्रहचाली पाप राहु केतु दोनों इकट्ठे है। इस पाप की बैठक खाना नं० 2 जिसका ताल्लुक शनि से होगा इन्सानी अंगूठे पर मानी गई है। अंगूठा जिस कदर ल बा होगा उसी कदर ज्यादा संभोग पर काबू पा सकने वाला होगा। अंगूठा जिस कदर छोटा होगा उसी कदर ज्यादा वहशी हैवानी ताकत ज्यादा है— तंग हैसियत जिद्दी। अंगूठा जिस कदर मोटा हो उस कदर ही ज्यादा गरीब होगा अगर अंगूठा सीधा रहता हुआ मालूम हो, और अंगूठे की नाखुन वाली पोरी पीठ की तरफ झुकी हो तो— इसका धन-दौलत दूसरे दुनियांवी साथियों के काम बहुत लगे, जातक खुद नर्म दिल हो।

पोरी का हिस्सा	उसकी हालत	उम्र के हिस्से की तासीर व ताकत के मुत्तलका
नाखुन वाली पोरी : कुण्डली का खाना नं० 6 केतु से स बन्धित, मनमर्ज़ी इच्छा शक्ति	जिस कदर हथेली की तरफ झुके उसी कदर ज्यादा इसका धन-दौलत फैलना दूसरों के काम लगे, वह खुद नरम रुहानी दिल होगा। उल्ट हालत में उल्ट नतीजे होंगे।	बचपन फैलना, रूहानी ताकत।
दरमियानी : खाना नं० 12 दलील सोच विचार की ताकत राहु से संबंधित	जिस कदर ज्यादा ल बी हो उसी कदर दलीलबाज सिकुड़ना और होनहार प्राणी होगा।	जवानी सिकुड़ना, शारीरिक ताकत।
निचली पोरी : खाना नं० 2 इश्क शुक्र से स बन्धित	जिस कदर ज्यादा छोटी हो। उसी कदर ही ज्यादा जादू मंत्र की इच्छा और जंग, (संभोग का इच्छुक) में गर्क रहने वाला होगा।	बुढ़ापा इंसानी नफसानी ताकत भावनात्मक ।

खाना नं० 3
(इस दुनियां से कूच का वक्त, राहे रवानगी, बीमारी इत्यादि)

इस घर का रंग है खूनी, असर होता भी है खूनी।
होता जभी इस घर जुल्मी ग्रह, देता असर वो कष्टी है।
पापी अगर हो अच्छा टेवे, कष्ट सभी ग्रह कटता हो।
तीन मंदा काने, पग 12 अच्छा उसके, असर खाना 8 करता हो।
अगर मंदे घर तीसरा बैठे, बुरा मालिक नहीं करते है।
खून दृष्टि जुल्म से अपने, जहर बाहर ही भरते है।
उम्र पहली हो ग्यारह शक्की, ग्रह तीजे जब मन्दा हो।
मौत रुकेगी आठ से उठती, बैठा तीजे चाहे कैसा हो।
ग्रह जब तक कोई तीसरे बैठा, मौत टेवा' न पाता हो।
भेद गुरु से बेशक खुलता, फैसला बुध से होता है।
(वृ०) माया दौलत जो ग्यारह आती, भाग तीजे से जाती हो।
तासीर मं० हो टेवे जैमी, हाल वही कर पाती हो।

1. जब नं० 3 में पापी बैठे हो और 6, 8 भी मंदे हो तो अगर मौत नहीं तो बहाना मौत ज़रूर खड़ा कर देंगे लेकिन खाना न० 12 का ग्रह चाहे शत्रु हो नं० 3 को सहायता दे। मंगल नं० 12 केतु न० 3 तो मच्छ रेखा वास्ते दुश्मन, हालांकि मं०, के० दुश्मन है। इसी तरह ही बुध नं० 12 और श०, वृ० तीन हो— अमृतकुंड, हर तरह की बरकत का ज़माना होगा। इसी तरह खाना नं० 12 में रा०, शु० हो तो जाहिर तौर पर 21, 25 साल की आयु से विधवा होना जाहिर होगा, लेकिन उसी वक्त ही खाना नं० 3 में श० हो तो राहु का शुक्र पर कोई असर न होगा, क्योंकि श०, शु० को हर तरफ से मदद देगा। लेकिन जब नं० 3 में मुश्तरका ग्रहों की 12 तीन के ग्रहों की बाहमी दोस्ती-दुश्मनी बहाल होगी।

खाना नं० 4
(माता की गोद, पेट का ज़माना)

ग्रह चौथे[1] के रात को जागे, या जागे वो मुसीबत में।
मदद कोई हो न जब करता, आ तारे वो बुढ़ापे में।
ग्रह चौथे हो जो कोई बैठा[5], तासीर चन्द्र वो होता हो।
असर मगर हो उस घर जाता, शनि जहाँ टेवे बैठा हो।
खाली होते चौथा मन्दिर[2], आखिर उम्र तक उन्नति हो।
चन्द्र का फल, घर दे चन्द्र, बैठा चन्द्र चाहे नष्टी हो[4],
पाप बैठा घर चन्द्र माता[3], बुध शनि दो उम्दा हो।
आठ तीजा 6 टेवे मंदा, मौत बहाना चौथा हो।
तख्त पावे[6] जब चौथा टेवे, राहु मन्दा खुद होता हो।
मुट्ठी[7], चन्द्र[2] आठ 11 बैठे, अकेला चौथे[8] न मन्दा हो।
चार समुद्र ग्रह 9 नाभि[9], मुर्दा कोई न रखता हो।
तीनों मित्र ग्रह नर शरण माता की, पेट अन्दर कुल पलता हो।

1. ग्रह (मुत्तलका के काम) रात के वक्त फायदा होगा।
2. मानिद नं० 2 या खुद चन्द्र नं० 2 जो कि उच्च उत्तम फल देता है।
3. इस घर में शनि ज़हरीला सांप मंगल, जला हुआ मंगल बद हो सकता है मगर राहु केतु धर्मात्मा ही होंगे या यूं कहो राहु केतु केवल चुप होंगे मगर किसी भी और दूसरी जगह मंदे काम छोड़ने का वायदा नहीं करते क्योंकि यह तो उनके खून की बुनियाद है। बल्कि हो सकता है उनके चुप रहने से लाभ की अपेक्षा नुक्सान हो जैसा दण्ड देने के अधिकार का स्वामी अगर शरारती को न डांटे तो अत्याचार और भी बढ़ता है।
4. चन्द्र मुट्ठी— खाना नं० 1, 4, 7, 10 से बाहर हो और खाना नं० चार खाली हो तो चन्द्र का सब ग्रहों, खुद चन्द्र सहित पर नेक असर होगा चाहे चन्द्र खुद कितना ही निक मा हो।
5. खाना नं० 4 में कोई भी अकेला ग्रह हो तो और चन्द्र उस वक्त बंद मुट्ठी से बाहर कहीं भी खराब हो रहा हो :- मसलन खाना नं० 8 में नीच और 11 में चन्द्र शुन्य, निष्पक्ष मंदा हो तो वो खाना नं० 4 वाला ग्रह नेक असर ही देगा चाहे वो चन्द्र का दुश्मन क्यों न हो।

हाथ की सबसे आखिरी जगह ग़ैबी हालात दिल की अन्दरुनी चाल या रात का ज़माना, चन्द्र का पर्वत बताता है।

6. 4, 16, 28, 40, 52, 64, 76, 88, 100, 114 साल उम्र।
7. खाना नं० 1, 4, 7, 10 ।
8. मंगल बद या मंगलीक या कोई अकेला ग्रह।
9. नर ग्रह सूर्य, मंगल, वृ० मित्र चन्द्र का दोस्त सूर्य बुध तो पेट में पालना करे। शत्रु— लेकिन चन्द्र का दुश्मन राहु केतु तो समुद्र को भी बाहर कर देगा। जब वो दुश्मनी करे यानि जब तक राहु केतु मुतल्लका की चीज़ें नेक असर देंगे वरना वो खुद बर्बाद हो जाएंगे।

खाना नं 5
औलाद (भविष्य)

गुरु टेवे में जब तक उम्दा, औलाद दुःखी न होती हो।
पाँच[1] पापी गुरु मंदा टेवे, बिज़ली चमक आ देती हो।
शनि[2] शुक्र या 2 कोई मंदा, बिज़ली कड़कती मंदी हो।
चन्द्र भला हो चमक हो उम्दा, असर हालत दो जल्दी[3] हो।
वज़ह चमक घर तीसरे होगी, कड़क निशानी 11 हो।
तीन खाली आठ से पड़ती, उल्ट हालत पड़े आठ पर हो।
घर तीन या 4 हो 9 मंदा, बुरा असर 5 होता हो।
6, 1 इवे चाहे दोस्त उसका, शत्रु ज़हरी आ होता हो।
अपना लिखा अह्वाल आइन्दा, गुरु रवि से चलता हो।
केतु भला तो सब कुछ उम्दा, राहु मन्दे सब उल्टा हो।

1. खाना नं० 6, 10 के ज़हर के बचाव के लिए नं० 5 के दुश्मन ग्रह की चीज़ें (पाताल 6) या जद्दी या बुर्ज़ुगी मकान (नं० 10) में कायम करें जब तक नं० 8 मंदा नहीं। लेकिन अगर नं० 8 मंदा हो तो नं० 5 के दुश्मन ग्रह की चीज़ सिर्फ पाताल नं० 6 में तहज़मीन में दबाने से मदद होगी क्योंकि नं० 10 दोगुनी र तार से चलता है और जब नं० 8 मंदा हो तो नं० 10 दोगुना मंदा होगा। पक्का घर नं० 10 देखें।
   उदाहरण:- वृ० नं० 10 शु० नं० 11, केतु नं० 8, शनि राहु नं० 5, औरत (शुक्र) को जुलाब, (केतु की बीमारी) के बाद लड़के (केतु पर मंदा असर), उपाय- लड़के के वज़न के बराबर 25 शुक्र का, 48—केतू दिन आटे की रोटियां कुत्तों को दें।
2. शनि या शुक्र या दोनों जब कभी मंदे हो तो दोनों की हालत के मुताबिक फौरन मंदा होगा। लेकिन अगर चन्द्र उस वक्त भला हो तो वो मंदी हालत फौरन ही बदल कर उत्तम असर होगा।
3. खाना नं० 5 में अगर सू०,वृ०/सू०, शु० हो तो जब शुक्र या कोई पापी नं० 1 में आवे अपनी सेहत के संबंध में मंदा वक्त होगा। लेकिन अगर नं० 2 में शुक्र बुध या कोई पापी हो तो सूर्य या वृ० के खुद नं० 1 में आने के वक्त सेहत के ताल्लुक में मंदा ज़माना होगा। वृहस्पति की वज़ह से पैदा हुई (जब वृ० 5 में हो) बीमारी कई औलाद के पैदा हो चुकने के बाद खत्म होगी।

खाना नं० 6
(दुनियावी जड़, पाताल की दुनियां, रहम का खज़ाना, खुफिया मदद)

पाताल खाली[1] जब तक रहता, नेक असर कुल देता हो।
दूजे बैठे की पहली अवस्था[2], असर छठे पर होता हो।
उम्र मंदी ग्रह खुद वो[3] होगा, घर 6 में आ बैठे जो।
लाख उपाय करे न टलता, ग्रह[4] फल जिसका लिखा हो।
अकेला बैठा हो या मुश्तरका, बन्द मुट्ठी के खानों में।
9 ही ग्रह पाताल में बैठे, देखा[5] करे उन तरफों में।
10, 5 में का दुश्मन ज़हरी, हुक्म राहु का पाता हो।
साथ में मगर दो आठ दृष्टि, फैसला 6 का होता हो[6]।

1. खाना नं० 6 खाली हो, 2, 12 के ग्रह दोनों ही तरफ से सिवाय होंगे, अत: खाना नं० 2 में अच्छे और 12 में भी उत्तम ग्रह हो तो नं० 6 को जगा लेना मददगार होगा। यानि टेवे वाला अगर अपने मामे खानदान या अपनी लड़कियों, बच्चों की सेवा करता रहे तो उत्तम असर देगा या नं० 6 के ग्रह नं० 2 या 12 के लिये बिज़ली का बटन दबाने वाला होगा या जल्दी असर देगा।
2. या नं० 2 का नेक असर ज़रूर हमेशा साथ मिलेगा।

3. बैठे ग्रह की अपनी ग्रहचाली उम्र और खुद ग्रह मुतल्लका की अपनी चीज़ों का असर।
4. सिवाय सूर्य, वृहस्पति, चन्द्र बाकी सब ग्रह इस घर में ग्रह फल के होंगे और बुध व केतु इस घर में नं० 8 में बैठे हुए ग्रह की मियाद तक मंदे होंगे। यह नं० 6 के ग्रह का असर बुध केतु या शुक्र बैठा होने वाले घर में भी जा सकता है।
5. खाना नं० 6 में बैठा शनि उल्टा नं० 2 को देखता है, नं० 6 में सूर्य या चन्द्र होने के वक्त नं० 4 का मंगल अब बद न होगा।
6. खाना नं० 6 में उच्च माने ग्रह राहु, बुध कभी मंदे न होंगे और न ही वो बन्द मुट्ठी के ग्रहों या नं० 2 के ग्रहों पर बुरा असर देंगे।

चेहरा :-

चेहरे की चौड़ाई = चेहरे की ल बाई का 2/3, अगर कुल के तीन हिस्से करे तो चौड़ाई दो हिस्से नेक होती है और चौड़ाई जिस कदर इस मिगदार से घटे उसी कदर नेक असर ज्यादा बढ़े और मुबारक होवे। चौड़ाई केतु की ताकत, ल बाई— वृहस्पति की ताकत। सूर्य, शनि (दोनों का मालिक वृहस्पति) गोलाई बाहर की उभार बुलन्दी बुध की ताकत, अन्दर पश्ती गहराई नीचे अन्दर को देता, राहु को ताकत। ऊपर की ताकतों से घटना-बढ़ना, ग्रहों की दृष्टि के दर्जे की ताकत के घटने या बढ़ने से मुराद होगी।

चेहरे की चौड़ाई खाना नं० 6 केतु से बजरिये दृष्टि या खाना न० 6 के ग्रह से जिस कदर वृहस्पति का साथ हो उसी कदर चेहरा ल बा होगा जिस कदर कम असर या वृहस्पति का कम ताल्लुक 6 को होवे उसी कदर चेहरा चौड़ा होगा। जिस कदर चेहरे की ल बाई ज्यादा उसी कदर नेक असर ज्यादा होवे, साथ लाई हुई अपनी किस्मत का चौड़े चेहरे में वृहस्पति के बजाय राहु के साथ शनि की खुदगरजाना (स्वार्थ) ताकते होंगी। ल बा चेहरा वृहस्पति के साथ वा ताल्लुक से केतु में शनि की हमदरदाना ताकते होंगी, जहानत कम होगी। जिस कदर चेहरा चौड़ाई से ल बाई की तरफ होता जाये उसी कदर में खुदगरजाना ताकते कम होती जाएंगी और जहानत बढ़ेगी या ल बे चेहरे वाला हमदर्द होता जायेगा।

पुरुष का चेहरा वा मुंह दोनों ही ल बे हो तो — नेकब त होगा।
पुरुष का चेहरा वा मुंह दोनों ही चौड़े हो तो — खुदगर्ज होगा।
औरत का चेहरा वा मुंह दोनों ही ल बे हो तो — बदब त होगी।
औरत का चेहरा वा मुंह दोनों ही चौड़े हो तो — नेक नसीब होगी।

पाँव पर खास निशान :-

दाएँ पाँव के पब पर कनिष्ठका के नीचे बुध पर या शुक्र के पर्वत पर या अंगूठे की जड़ पर अगर शंख शदफ हो तो वही असर जो हाथ पर होता है, चक्र हो तो वो आशुदा (समृद्ध) हालत होगी, त्रिशूल, अंकुश आला ऑफिसर, न्याय प्रिय, हाथी की आँख का निशान— साहिबे त म, चश्मफीला। यही अगर बाएँ पर हों तो चोर डाकू होगा, फिर भी तंग बहुत मंदा हाल।

औरत के दोनों पाँवों में या इकट्ठे गिन कर जिस कदर गहरे शदफ चक्कर पद्म पब या पाँव की हथेली पर हो उसी कदर लड़के होंगे, जिस कदर ये नरम व बारीक या बारीक लकीरों के होंगे उसी कदर लड़कियाँ हों।

खाना नं० 7
(गृहस्थी - चक्की - आकाश)

आकाश (बुध) ज़मीन (शुक्र) दो पत्थर सातवें,
रिज़क (शुक्र) अक्ल (बुध) की चक्की हो।

दोनों घुमावे[1] कीली लोहे की, घर आठवें जो होती हो।
पहले घर के खाली होते, सातवाँ फौरन सोया।
पाँच साला[2] हो सूरज निकले, आठ जब दूजे होया।
दोस्त शुक्र दो घूमते पत्थर[3], शत्रु[4] पत्थर गड़े माना हो।
बुध बराबर चक्र कुम्हारिन[5], साथी[7] हत्थे को जाना हो।
जैसे शुक्र हो वैसे फल सब, निचले पत्थर से होते हो।
बाकी असर ग्रह अपना-अपना[6], साथी को प्रबल गिनते हैं।
2 से ज्यादा ग्रह सातवें में, स्त्री ग्रह नर[9] होवे।
असूल मिलावट[8] बेशक अपने, असर मर्द पर करते हैं।

1. जब खाना नं० 8 के ग्रह वर्षफल के मुताबिक खाना नं० 8 या खाना नं० 7 में आये तो बाहमी दोस्ती या दुश्मनी पर असर करेंगे।
2. 5 साल उम्र हो, किस्मत का सूर्य उदय होगा।
3. बुध श० केतु अपना-अपना दिया फल, घूमते पत्थर यानि रिज़क या फालतू धन के लिए— राशिफल काबिल उपाय।
4. सूर्य, चन्द्र, राहु जैसा शुक्र वैसा फल। गढ़े पत्थर यानि वास्ते रिज़क या फालतू धन ग्रह फल (अटल फैसला)।
5. दो पत्थरों की बजाय कु हार के चाक की तरह जो दो की बजाय एक ही पत्थर दो का काम देवे।
6. मंगल या वृहस्पति वास्ते परिवार।
7. जहाँ शुक्र हो उस घर का ग्रह (बाहैसियत मालिक पक्का घर) चक्की या चक्का का रहनुमा होगा।
8. असूल मिलावट = दर्जा दृष्टि या बाहम देखना।
9. अमूमन स्त्री ग्रह स्त्रियों पर असर करेगा, नर ग्रह मर्दों पर, मगर जब 7 में दो से ज्यादा ग्रह हो तो स्त्री ग्रहों को नर ग्रह ही समझ कर गिनना पड़े। जैसे चन्द्र नं० 7 में किसी और दो ग्रहों के साथ हो तो मिलावट या दृष्टि की रुह से जो भी असर खाना नं० 1, 7 में बैठे हुए ग्रहों का चन्द्र पर असर हो सकता है वही असर अगर नर ग्रह अब वृहस्पति पर लेंगे या यूँ कहो कि अगर कोई असर चन्द्र या माता पर होता हुआ मालूम हो तो वो असर चन्द्र के साथ कोई और ग्रह जब सब को मिलाकर दो से ज्यादा हो तो वृहस्पति या पिता पर असर होगा। इसी तरह ही शुक्र नं० 7 में ग्रहों के साथ स्त्री की बजाय वही असर टेवे वाले के अपने जिस्म पर हो और वृहस्पति मंगल सूर्य तीनों ही से संबंधित हो सकता है।

खाना नं० 8

(मुकाम फानी) (मौत अदल) न्याय [1] (घर के न्याय)

मौत शनि हो चन्द्र[2] मंगल,
बैठा जब कोई ग्रह जब तक तीजे,
घर आठवाँ जब बदी पर आवे,
बैठा 12 चाहे दुश्मन होवे,
मंगल बद गो सबसे मंदा,
ग्रह 11 घर चीज़ जो आवे[5],
बुध मंगल नहीं मंदे हैं।
मौत अटल ही गिनते हैं।
6, 2 भी आ मिलते[3] हैं।
फैसला[4] उसका लेते हैं।
बुध पापी नहीं अच्छे हैं।
छत गिरी ही लेते हैं[6]।

1. घर जिसमें वहम और अक्ल दोनों शमिल की बजाय अदले के बदले के असूल पर न्याय करेंगे। न्याय में माफी या दया का दखल न होगा।
2. खाना नं० 8 में सूर्य, वृहस्पति, चन्द्र में कोई भी अकेला या कोई दो या तीनों मुश्तरका तो खाना नं० 8 न आगे को नं० 12, न ही नं० 2 पीछे को देखेगा, बल्कि खाना नं० 8 का असर 8 में ही बंद होगा। गोया मौत के घर को (सूर्य वृहस्पति, चन्द्र) मुश्तरका (योगी जंगी) जीत लेंगे। शनि, मंगल या चन्द्र अकेले-अकेले इस घर में हमेशा उ दा मगर जब कोई दो या तीनों इकट्ठे हो तो शनि मौतों का ंडारी, चन्द्र दौलत व सेहत का बर्बाद करने वाला और मंगल में खाना नं० 2, 6 का मंदा असर शामिल लानत देगा या तो मंगल बद हर तरफ ही लानत का देवता जलता ही होगा। बुध नं० 8 हमेशा मंदा और मंगल नं० 8 अमूमन बुरा मंगल बुध दोनों इकट्ठा न० 8 में उत्तम होंगे, जब तक नं० 2 में शनि न हो वरना मंगल बद ही होगा, जो मैदान जंग में मौत का बहाना खड़ा करेगा।
3. खाना नं० 8 या 6 कोई मंदा तो दोनों मंदे।
4. आखिरी अपील चन्द्र पर होगी।
5. खाना नं० 11 का ग्रह वर्षफल में खाना नं० 8 या 11 में ही आवे तो खाना नं० 11 में बैठे हुए की स बन्धित चीज़ घर पर खरीद कर लाने पर दौलत और सेहत दोनों बर्बाद होंगे। खाना नं० 8 की मंदी हालत की जड़ खाना नं० 4 और मार्फत नं० 2 होगी, जब तक नं० 2 खाली तो मंदी हालत नं० 8 पर सीमित होगी। खाना नं० 11 में अगर नं० 8 का दुश्मन हो तो नं० 8 पर सीमित होगी। खाना नं० 11 में अगर नं० 8 का दुश्मन हो तो नं० 8 का बुरा असर नं० 2 में न जाये।
6. जब नं० 4 दुश्मन हो तो नं० 2, 11 का तो नं० 8 का ग्रह दृष्टि द्वारा जब कभी भी और मौका मिलेगा तो नं० 2, 11 पर हमला कर देगा।

खाना नं० 9
(किस्मत का आर भ [1])

जड़ बुनियाद ग्रह 9 होता,
घर दूजे पर बारिश[2] करता,
घर तीजे का असर हो पहले[3],
कुंडली मकानात मकर्ज़ गिनते,
उम्र ग्रह जो अपनी जागा[4],
ऋण पितृ जब टेवे बैठा,
पाँच दृष्टि 9 पे करता,
रवि चन्द्र कोई 9 जब बैठा[5],
ज्ञान समुद्र घर 9 वें का,
सफेद झंडा कोहसार (शिखर)
किस्मत का आगाज़ भी होता।
समुद्र घर ब्रह्माण्ड भी हो।
बाद मिला घर पांच का हो।
हाकिम गिनते सभी ग्रहों का हो।
असर गिना उस उम्र का हो।
रेत समुद्र जलता हो।
निकास औलाद की गिनती जो।
नज़र दृष्टि उल्टी हो।
या फल उम्र हो पहिली का।
पर झूले, उम्र बुढ़ापा घर 2 का।

1. किस्मत का प्रार भ खाना नं० 9 का ग्रह है।
2. खाना नं० 9, जब तीन और पाँच खाली तो नं० 2 की मार्फत जाग पड़ेगा।
3. जब नं० 3 सोया हो तो तीन साल उम्र के बाद असर होगा।
4. कुंडली का सोया ग्रह जब कभी वर्षफल में नं० 9 में आने पर जाग पड़े तो वह ग्रह अपनी उम्र से अपने उम्र के ज़माने तक नेक असर देगा। मसलन सूर्य नं० 8 में हो तो 22 साल उम्र में 22 साल तक यानि 44 साल उम्र तक नेक असर देगा। यही असर जन्म कुण्डली के नं० 9 वाले बाकी ग्रहों का नं० 9 में आने से होगा। मंगल नं० 2 का 28 से 28 यानि 56, वृहस्पति नं० 2 का 16 से 16, सूर्य नं० 8 का 22 से 22 और चन्द्र नं० 10 का 24 से 24 और शनि नं० 8 का 36 से 36, केतु नं० 8 का 48 से 48 साल, राहु नं० 4 का 42 से 42 साल तक उत्तम असर देगा, सिवाय :-
   अ) शुक्र नं० 12 जो सिर्फ 25 साल मंदा होगा, जब नं० 3, 5 की दृष्टि से मंदा हो रहा हो, वरना नेक असर होगा।
   ब) बुध नं० 3 का 17 से 17 साल मंदा जब बाकी असूलों से बुध मंदा हो वरना नेक असर होगा।
5. ऐसी हालत में नं० 5 में बैठे पापियों का औलाद पर कोई बुरा असर न होगा, मगर बाकी सब बातों में वही असर लेंगे जो सूर्य चन्द्र से पापियों के ताल्लुक पर हो सकता है। खाना नं० 9 के ग्रह से स बन्धित चीज़ तिलक की जगह लगाने से खाना नं० 9 पर असर होगा।

खाना नं० 10
(किस्मत की बुनियाद का मैदान)

ग्रह मंण्डल 9 से ही टेवे,
6 पाँचवें चाहे दोस्त उसके,
घर दसवें का घर दस शक्की[1],
आँख गया है घर वो जिसकी[2],
घर दूजे के खाली होता,
दिन उसी ही ग्रह दस जागे,
घर दसवें जब बैठा हो।
दुगनी ज़हर का होता हो।
दुगनी ताकत का होता हो।
स्वपन 12 में लेता हो।
दसवाँ फौरन सोया[3]।
शनि दूजे जब होया।

1. इस घर वर्षफल के हिसाब आया ग्रह धोखे का ग्रह होगा जो अच्छा-बुरा दोनों हो सकता है। अगर नं० 8 मंदा हो तो दुगना मंदा और खाना नं० 2 नेक तो दुगना नेक होगा। अगर दोनों तरफ बराबर तो अच्छा असर पहले और बुरा असर बाद में होगा। अगर नं० 8, 2 दोनों खाली तो नं० 3, 5, 11 के ग्रह मददगार होंगे। अगर वे भी खाली तो फैसला शनि की हालत पर होगा।
2. जब खाना नं० 10 में आपस में लड़ने वाले कोई भी ग्रह बैठे हों तो वो टेवा अंधे ग्रहों का होगा। यानि वो ग्रह हूबहू वैसा ही असर देंगे जिस तरह की दुनियां में अन्धा प्राणी चलता है, ऐसी हालत में फैसला चन्द्र की हालत पर होगा।
3. अगर खाना नं० 10 खाली तो खाना नं० 4 के ग्रहों का कोई नेक फल न हो सकेगा, चाहे उस घर में रिज़क के चश्मों को उभारने के लिए ग्रह लाख दर्जे ही उ दा हो। अपने माता-पिता को मिलते रहना मददगार होगा। 10 अंधे मर्दो को इकट्ठा ही मु त बतौर खैरात ुराक तकसीम करना (नकद पैसा रुपया बिल्कुल नहीं) खाना नं० 10 के ग्रहों (मंदे या आपस में लड़ने वाले) की ज़हर धो सकेगा। राहु, केतु, बुध, तीनों ही इस घर में हमेशा शक्की होंगे जो शनि की हालत पर चला करते हैं। शनि अगर उ दा तो दुगना उ दा अगर मंदा तो दुगना मंदा।

खाना नं० 11

(गुरु स्थान, न्याय स्थल, न्याय करने या कराने की जगह मगर खुद न्याय नहीं या इंसानी किस्मत की बुनियाद)

पाप अकेला असर अकेला,
शनि वली का साथ मिले जो,
ग्रह 11 जो मंदा होवे,
घर 11से चलकर अपने,
किस्मत का ग्रह घर उस तीजे[2],
खाली तख्त 3-11 सोये[3],
उम्र पहले से 11 शक्की[1],
खुद तीजा हो बेशक रद्दी,
खुद बेड़ी को पानी चलावे,
ग्रह 11 घर चीज़ जो लावे,
घर 11 में ग्रह जो आवे,
असर अगर उस घर में जावे,
तीन, पाँच, नौ, ग्यारह ।
असर बढ़े गुणा ग्यारह ।
असर में सबसे उम्दा हो।
बैठा तख्त ' पर जिस दिन हो।
मदद न पाँच से होती हो।
लिखत शनि पर चलती हो।
घर तीजा जब मंदा हो।
मौत आई आठ रोकता हो।
डुबाते वो नहीं है।
मौत खड़ी ही करते हों।
तासीर शनि वो होता हो।
गुरु जहाँ टेवे बैठा हो।

1. 11, 23, 36, 48, 57, 72, 84, 94, 105, 119 साल उम्र।
2. खाना नं० 3 में वृहस्पति के दोस्त तो नं० 11 हमेशा असर नेक देगा।
3. खाना नं० 11 को घर 3 देखता है लेकिन खाना नं० 11 का असर उसी वक्त ही पूरी तरह जागता हुआ माना जायेगा जब खाना नं० 3 और 1 दोनों ही में कोई ग्रह ज़रूर हो।
4. खाना न० 8 के ग्रह मुतल्लका की या से आई हुई मौत। खाना नं० 3 में केतु के दोस्त शुक्र, राहु तो खाना नं० 11 हमेशा नेक असर देगा।

इन्सान की अपनी आमदन कमाई का जन्म दिन का, इन्सान टेवे वाला का कुल दुनियां से ताल्लुक या कि सबकी किस्मत का इकट्ठा मैदान या पेशानी हर हालत में हर वक्त साथ लिये फिरता है। इस घर में केतु होने पर चन्द्र बर्बाद और चन्द्र होने पर केतु बर्बाद और वृहस्पति होने पर राहु और राहु होने पर वृहस्पति बर्बाद हो।

जब वर्षफल में या कुंडली में खाना नं० 8, 11 आपस में दुश्मन हो तो नं० 11 के ग्रह की चीज़ टेवे वाले के किसी काम न आएगी बल्कि ऐसी मंदी सेहत सदमें की निशानी होगी जिससे पीठ टूटी हो या घर के मकान की छत गिरी हुई की तरह मातम का ज़माना होगी। ऐसे हाल में नं० 11 के ग्रह की चीज़ के साथ ही उस ग्रह या (11 के वाले के दोस्त ग्रह) या ऐसे ग्रह की चीज़ भी साथ ही ले आवे, जो ग्रह के मंदे असर को नेक कर देवे। मसलन शनि खाना नं० 11 का हो तो शनि की चीज़ के साथ ही केतु की चीज़ भी ले आना मुबारक होगा। यानि मकान बनाओ तो कुत्ता साथ ले आओ। मशीनें खरीदों तो बच्चे के खिलौने ज़रूर लाओ। इस तरह शनि बुरे असर की बजाय और भी भला असर देगा। मसलन बुध 11, शनि 12, वृहस्पति— शुक्र नं० 7 उ दा गृहस्थ; सूर्य नं० 11 शनि नं० 3 वृहस्पति 2 कर्जई।

खाना नं० 11 के ग्रह, सिवाय पापी ग्रहों के, बेईतबारी के होंगे, अगर खाना नं० 3 खाली हो तो अमूमन नेक फल त त में आने के दिन से शुरु कर देंगे। अगर खाना नं० 8 में आने के वक्त मंदा असर देंगे, मंदी हालत में संबंधित ग्रह की कुल उम्र की मियाद के बाद खाना नं० 11 में बैठे उसके दोस्त के ग्रह की चीज़ का उपाय मददगार होगा। बशर्ते कि पापी ग्रह से कोई उस वक्त वर्षफल के हिसाब से खाना नं० 1 में नही अगर कोई पापी नं० 1 में ही हो तो खाना नं० 9 में आये हुए ग्रह की चीज़ से उपाय करे नेक होगा और खाना नं० 9 खाली तो वृहस्पति का उपाय करें।

खाना नं० 11 के ग्रह किस साल 8 में आएंगे = 7, 20, 34, 45, 53, 67, 79, 92, 97, 113।

'खाना नं० 11 के ग्रहों की बेईतबारी की हालत :-

खाना नं० 11 में बैठे ग्रह का असर

ग्रह	नेक हालत में	बुरी हालत में
वृ	जब तक टेवे वाला खानदान में इकट्ठा रहे और पिता ज़िन्दा हो तो सांप भी सिजदा करे।	जब पिता से अलग चाल चलन का ढीला या जन्म कुण्डली के हिसाब से मंदे ग्रह का कारोबार या रिश्तेदार को हद से ज्यादा ताल्लुकदारर तो मच्छर का भी मुकाबला न कर सके और कफन तक पराया हो।
सू०	जिस कदर धर्मात्मा और सूफी खुराक और पोशाक का मालिक रहे उसी कदर उत्तम ज़िन्दगी और साहब परिवार हो।	जब शनि की खुराक जैसे शराब मांस खाता हो तो विधाता अपनी कलम से लावल्दी का हुक्म लिख दे।
चं०	अगर टेवे में वृ० और केतु उ दा हो तो धन और औलाद की माता के बैठे तक कोई कमी न होगी।	माता के ज़िन्दा होते हुए भी नर औलाद शायद ही माता को देखनी नसीब हो।
शु०	दौलत का भण्डारी जब तक औरत के भाई मौजूद या मंगल उ दा हो जन्म कुण्डली में।	वरना बुद्धु बुजदिल हीजड़ा धन-दौलत से दुखिया होगा।
मं०	वृ० के पीछे-पीछे कदम रखने वाला बहादुर चीते की तरह ज़माने की अंधेरी रातों को पार करके अपना शिकार या दिली इच्छा पालेगा।	वरना दुम को आग लगी हालत में हनुमान जी की तरह समुद्र के पानी (अपनी रिज़क और आमदन) की तलाश में भागे।
बुध	चं०, वृ०, श० से मारे हुए यानि माता-पिता के यहाँ जन्म होने के दिन दुनियां के ग़ैबी अन्धेरे से निकल कर आँखों के देखने के वक्त से ही दुखिया होने वाले को अपने वक्त से ही हर तरह और हर हालत में डूबा लेने पर भी ज़िन्दा करके तार देगा।	ऐसी खोटी अक्ल का मालिक जो पौधे को जड़ से उखाड़ देवे और खुद भी गिरने वाले वृक्ष के नीचे आकर दब मरे।
श०	विधाता की तरफ से लावल्दी के लिखे हुक्म को भी दूर करके बच्चे की पैदाइश का हुक्म देवे और तमाम दुनियां के ज़हरी और हर तरह के विरोध के विरुद्ध अकेला ही पूरी रक्षा करेगा और धर्म ईमान से सच्चे होने का पूरा सबूत देगा।	ठीक समुद्र के बीच पहुँच कर बेड़ी का चप्पू सिरहाने रख कर अचानक सो जायेगा और अपनी औलाद को ऐसी अधूरी हालत में छोड़ कर मरेगा कि उनकी आंहों को सुनने वाला शायद ही कोई गृहस्थी मददगार होगा।
राहु	इतने घमण्ड वाला कि अपने मां-बाप से भी कोई पैसा तक न लेंगे, ताकि इस पर कोई एहसान न हो जावे। खुद कमायेगा और सोना बनायेगा। मगर जन्म से पहले मिले सोने को खाक कर दिखायेगा, न वृ० (पिता) का लिहाज न राहु (ससुराल, जेलखाना) की चिंता, मगर खुद वाबी दुनियां में आसमान पर बैठे खुदा की इबादत कर रहे होंगे।	जन्म लेते ही अपनी मियाद से पहले अगर सबके सांस और जिस्म के खून (पिता और दादा का) को संखिया या अफीम से ज्यादा ज़हरीला, बर्बाद और बद न कर दिया तो ऐसे टेवे वाले के जन्म लेने का किसी को पता क्या चला। यानि अगर अफीम, संखिया या हीरा चाट कर मरे, कोयले से राख हुए जो कुछ कहो सच, मगर वो तमाम देखने के लिए हर वक्त हाजिर-नाजिर ज़िन्दा रहेगा।
केतु	और औलाद की इच्छा और केतु की चीज़ें रिश्तेदारखुद या दीगर कारोबार स बन्धित का फल ग्यारह गुणा नेक होगा जब खाना नं० 5 में चं० और वृ० न हो।	अपना केतु यानि औलाद और शनि (और चन्द्र) का फल हद से ज्यादा निक मा होगा।

पेशानी:-

क्याफा :- **दिमाग का खाना नं० 35, कुण्डली का खाना नं० 11 पेशानी को कहा गया है। भ्रू से और ऊपर दिमाग की हद से**

नीचे कान से सुराख से 90 दर्जे की खींची हुई रेखा दिमाग के हिस्से को सिर और भ्रू से अलग करता है जो पेशानी होगी। इन्सान का अपना हाल या इन्सान की कुल दुनियां से ताल्लुक या सबकी मुश्तरका किस्मत का मैदान या पेशानी हर व्यक्ति अपने साथ लिए फिरता है, गोया पेशानी पर सबकी किस्मत लिखी है। ये हिस्सा हमेशा ज़माने की हवा से टकराता, इंसानी किस्मत पर वृहस्पति असर डालता है। दिमागी खानों में खाना नं० 32 पेशानी के पीछे, खाना नं० 20 (सू०), खाना नं० 21 (चं०)

चमक रहे हैं जिन दोनों के ऊपर खाना नं० 13 शनि का घर है। पेशानी की चौड़ाई कुल चेहरे की ल बाई का 1/4 के हिस्से तो चार में से सिर्फ एक हिस्सा नेक होता है। पेशानी इस अनुपात से जिस कदर चौड़ाई बढ़े उसी कदर नेक असर बढ़ेगा और मुबारक होगा।

खाना नं0 11 का असर	**पेशानी की क्या हालत है बरूहे क्यापफा।**	**ग्रह चाल**
नेक असर ज्यादा	उसी कदर पेशानी चौड़ी होगी।	खाना नं० 2 के वृ० से या खाना नं० 2 से दृष्टि वगैरा द्वारा जिस कदर केतु का ज्यादा संबंध हो।
अक्ल की बारीकी अधिक हो।	छोटी पेशानी हो।	खाना नं० 8 का 2 की मार्फत खाना नं० 6 में असर जाये। केतु जब वृ० के साथ या वृ० के घरों में 2, 5, 9, 12 में हो।
नेक असर होगा।	पेशानी ल बी होगी।	जिस कदर केतु का संबंध खाना नं० 2 के वृ० या खाना नं० 2 से कम हो।
मालूम करने की शक्ति, चालचलन अच्छा होगा।	पेशानी का ऊपरी हिस्सा बाहर को उभारता हो।	खाना नं० 2 का असर खाना नं० 6 की तरह खाना नं० 12 में जाये।
विचार शक्ति हो, नेक काम करने वाला।	पेशानी का निचला हिस्सा बाहर को उभरे।	खाना नं० 8 का असर, खाना नं० 11 की मार्फत (जिसके लिए खाना नं० 8 देखें) यानि कि खाना नं० 2 में जाये।
अजीजों और स बन्धी का सुख नसीब न हो।	तिलक लगाने की जगह छोड़ कर बाकी पेशानी पर निशान के असर सिर्फ उम्र की कमीबेशी पर होगा। पेशानी पर त्रिकोण, तराजू, मछली, अंकुश, पद्म, पंखा, तलवार या पक्षी में से कोई भी ऐसा निशान हो।	खाना नं० 2 में खाना नं० 8 के मंदे ग्रहों का असर या मंगल बद का असर मिल रहा हो।
कम उम्र और मंदा भाग्य हो।	पेशानी पर कौंवे के पांव का निशान हो।	---
अल्पायु ज़िन्दगी के आठवें साल, 16, 24, 32, 40, 48, 56, 64, 8 X 8 खतरे में होगा।	पेशानी पर टूटी-फूटी लकीरें बहुत हो या उनका झुकाव नीचे की तरफ मानिद हो। 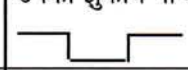 या 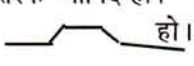 हो।	खाना नं० 2 में वृ० के दुश्मन ग्रह शुक्र, बुध या केतु के दुश्मन चं०, मं० हो।
कज्जाक डाकू, उम्र 50 साल हो।	पेशानी पर 7 या ज्यादा लकीरें हो।	खाना नं० 2 में सात मंदे ग्रह हो।
कम उम्र होगी।	सूखे रंग की नसें।	खाना न० 2 में मं० बुध या सूर्य बुध।
मुबारक और खुश किस्मत हो।	हरे रंग की नसें चाहे जातक मर्द या औरत हो।	राहु, वृहस्पति मुश्तरका नं० 2 या अकेला बुध नं० 2 हो।

खाना नं० 12

(इन्साफ, मगर न्याय करने की जगह नहीं,
आरामगाह, वाब अवस्था, इन्सान का सिर [1])

घर 12 में ग्रह जो बोले, *घर 2 में वो बोलता है।*
फल घर 12, 2का इकट्ठा, *साधु समाजी होता है।*
एक जन्म से दूजा शुरु हो, *12 जहान दो होता हो।*
सुख दौलत और सांस आखिरी, *हुक्म विधाता होता हो[2]।*

1. जन्म कुंडली के तमाम ग्रहों की अपील खाना नं० 12 होगी, यानि 12 का फैसला आखिरी फैसला होगा। अगर नं० 12 के लिए खुद अपनी अपील की ज़रूरत हो तो खाना नं० 2 का फैसला सबसे आखिरी फैसला होगा। अमूमन खाना नं० 11, 1 दुनियावी हाकिम (मुलाजमत वगैरा), अब नं० 1 कुण्डली का राजा होता है मगर 12 के लिए (जन्म कुण्डली में) खाना नं० 1 के ग्रह की उम्र, मसलन (खाना नं० 1 सू० = 22 साल) गुजरने के बाद, खाना नं० 2 अपील का काम देगा, जिसका आखिरी फैसला मुसिंफ चन्द्र होगा। लेकिन खाना नं० 1 की उम्र के अन्दर-अन्दर आखिरी हाकिम नं० 1 का ग्रह होगा, तमाम दीगर हालात के लिए।
2. खाना नं० 12 के ग्रह के स बन्धित रिश्तेदार टेवे वाले के आराम पेश करने वाले के संबंध में ताल्लुक में खुदाई ताल्लुक का मालिक होगा, जिसके बाद उस ग्रह की स बन्धित चीज़ कायम करने से सुख सागर होगा, जैसे वृ० खाना नं० 12 हो तो पिता, बाबा ज़िन्दा होने के वक्त तक टेवे वाले की रात हमेशा आराम से गुजरेगी उनकी मृत्य के बाद वृहस्पति की वस्तुएँ रात के वक्त रखना आराम देगा। खाना नं० 8 मंदा घर, खाना नं० 2 खाली हो या जब खाना नं० 12 आदि खाना नं० 8 दोनों घरों में ऐसे ग्रह हों इकट्ठे होने पर मंदे हो जाये तो मन्दिर में पूजा पाठ या यात्रा वगैरा के लिए जाने की बजाय मन्दिर से दूर ही रहना बेहतर वरना 8, 12 की मंदी टक्कर होगी। घर जैसे बुध 8, शनि 12, लड़कियों की बिनाई दृष्टि बर्बाद, जब बाप जातक मन्दिर में जाये।

12 ही पक्के घर इकट्ठे :-

धन की थैली सातवें हो, *मर्द बोलते 6 वें हो।*
घर 8 वें से उम्र मिले तो, *बने महल घर दूसरे हो।*
घर पाँचवां दौलत का गिनता, *11 होता घर धर्मी है।*
अंग जिस्म घर पहले होते, *साथ लगी 9 बुजुर्गी हो।*
चश्मा दौलत घर चौथे निकले, *मैदान रिज़क घर दसवां हो।*
आखिर वक्त घर तीसरे चलते, *ख्वाब पाया घर12 हो।*
खरबूजा देख खरबूजा पके, *9 पहले और 7, ग्यारह*
चौरा टोकरी एकी बोली, *बुध, शनि और शुक्र यारां।*

1. जिस्मानी :- खाना 2, 6, 12, (तीनों ही) में कोई ग्रह ज़रुरी हो तो चालचलन पूछने की ताकत उ दा होगी।
2. रुहानी:- खाना 2, 8 दोनों ही में कोई ना कोई ग्रह जरुर हो और नं: 8 का असर नं: 2 में पहूँचता यानी खाना नं० 11 में नं० 8 का शत्रु न हो, तो अकल की बारीकी, विचार शक्ति उत्तम होगी। खाली खाना नं: 2 उंगलियों के नाखून वाली पोरी या टुकड़ा रुहानी ताकत से संबंधित होगी।
3. नफसानी :- खाली खाना नं० 12 उंगलियों का निचला भाग, नफसानी ताकत (इच्छा) से संबंधित होगा।

अवस्था :-
खाना नं० 1 से 3 पहली अवस्था— 25 साल की उम्र तक।
खाना नं० 4 से 6 दूसरी अवस्था— 50 साल की उम्र तक।
खाना नं० 7 से 9 तीसरी अवस्था— 75 साल की उम्र तक।
खाना नं० 10 से 12 चौथी अवस्था— 100 साल की उम्र तक।

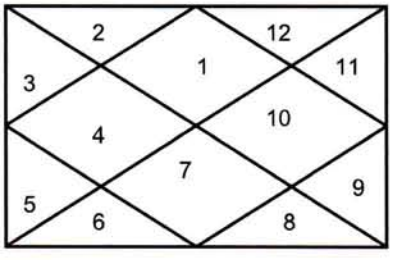

खाली खानों के लिए :-

आमतौर पर खाली खानों की हालत नं० वाली राशि का स्वामी ग्रह लेते हैं। खाना नं० 6-12 में बुध वृहस्पति के साथ केतु राहु का निवास भी माना है। अत: हर दो में से कौन सा एक है, जब वृहस्पति अपनी दूसरी राशि 9 में है तो राहु 12 का स्वामी होगा। जब बुध खाना नं० 3 से हो तो खाना नं० 6 का मालिक केतु। लेकिन अगर वृहस्पति नं० 9, 12 में से किसी जगह न

हो तो खाली खाना नं० 12 में वृहस्पति और राहु दोनों इकट्ठे या नकली बुध होगा। बुध खाना नं० 3, 6 में न तो खाली 6 में बुध केतु दोनों इकट्ठे होंगे लेकिन जहां बुध जबरदस्त होगा तो केतु कमज़ोर होगा। अत: 6 का स्वामी बुध केतु में से एक लेगें जो कि जबरदस्त हो उस कुण्डली में (जन्म कुण्डली के हिसाब से) उ दा होगें, क्योंकि खाना नं: 6 हमेशा नेक मामले में होता है। अत: कमजोर या मन्दे ग्रह को खाना नं: 6 का स्वामी न लेगें। खाली खाना नं: 9 का स्वामी वृ: और 6 का बुध होगा बाकी खाली खानों के लिए उस राशि का मालिक ग्रह लेगें।

सोये हुए पक्के घर या पक्के घर में बैठे सोये हुए ग्रह:-

सोया ग्रह या सोया घर से मुराद है वो ये कि ग्रह या घर सब कुछ होते हुए भी अपना नेक असर न देगा। (पहले घर 1 से 6 तथा बाद के घर 7 से 12 तक)

एक अकेले ना और शत्रु, ना दोस्ती होती है।
रियाया बना ना राजा कोई, ना ही वज़ीरी होती है।
1 से 6 तक तरफ जो पहली, हिस्सा दायाँ कहलाती है।
बाद के घर 7 से 12, तरफ बायाँ हो जाती है।
तरफ पहली न ग्रह न ही कोई, बाद के ग्रह सोये होते हैं।
घर जब बाद का खाली होवे, तरफ सोयी पहली गिनते हैं।
जिस घर में ग्रह हो कोई बैठा, जागता घर वो लेते हैं।
जागे घर न ही असर ग्रह का, जब तलक खाली होते है।
उच्च दृष्टि कितना ही होवे, निर्बल प्रबल किसी भी घर ।
घर दृष्टि का जब तक खाली, असर जाये न दूसरे घर।
घर 9, 11 गुरु से जागे, चन्द्र से 4, 8, 2 घर।
रवि घर जगाता घर पाँचवां, शुक्र जगाये सातवां घर।
शनि से दसवां, राहु से 6 को, बुध जगाता तीसरा घर।
मंगल से घर पहले जागे, केतु जगाये 12 घर।

सोया घर :- जिस घर में कोई ग्रह न हो या जिस घर पर किसी ग्रह की दृष्टि न हो वो घर सोया होगा।

सोया ग्रह :- जिस ग्रह की दृष्टि के मुकाबले पर कोई ग्रह न हो, खुद ही जो कि पहले घरों का हो, सोया ग्रह होगा।

1. कुण्डली के 1 से 6 पहली तरफ और 7 से 12 बाद की तरफ मानी है। अपने घर बैठा ग्रह तो हमेशा जागता है (उदाहरण शुक्र नं० 7)। इसी प्रकार पक्के घरों में बैठा ग्रह भी पूर्णता से जागा होगा (मंगल नं० 3) जब पहली तरफ सोयी हो तो किस्मत को जगाने वाले ग्रह की तलाश की ज़रूरत होगी, और बाद के घर खाली हो तो खाना नं० को जगाने वाले उपाय की ज़रूरत होगी जो कि खाली हो।
2. ग्रह का जागना और घर का जागना अलग-अलग बातें हैं। बगैर जगाये या सोया ग्रह अगर खुद जाग उठे यानि फल देना शुरु कर दे तो ऐसे जागे ग्रह की आम उम्र, मसलन शुक्र 3, मं० 6, केतु 3 साल वगैरा के आखिरी साल जैसे कि शुक्र शादी के तीसरे साल पर, सब ही ग्रह का मंदा फल कर देगा, चाहे वो ग्रह खुद जागे ग्रह का शत्रु या मित्र हो।

सोया हुआ घर :-	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
कौन जगा देगा :-	मं०	चं०	बु०	चं०	सू०	रा०	शु०	चं०	वृ०	श०	वृ०	के०

3. सोये हुए ग्रह को जगाने वाला ग्रह बाहैसियत पक्के घर के स बन्धित ग्रह का रिश्तेदार कायम हो तो इसे कोई मंदा असर न देगा। मसलन शुक्र नं० 11 और 3 खाली, अब अगर औरत के भाई (शादी होने या औरत के बनने के पहले) कायम हो तो खाना नं० 3 खुद बखुद जागे हुए शुक्र का बुरा असर न होगा।
4. खाना नं० 10 में कोई ग्रह न हो तो खाना नं० 2 के ग्रह सोये होंगे। खाना नं० 2 में कोई ग्रह न हो तो खाना नं० 10 व 9 के ग्रह सोये होंगे।

सोया ग्रह खुद कब जागेगा :-

ग्रह	कब जागेगा	किस उम्र में	किस साल मंदा फल देगा।
वृ०	आम कारोबार शुरु होने पर	16 साल के बाद	6 वें या 22 वें साल
सू०	सरकारी मुलाजमत या संबंध	22 साल के बाद	2, 8, 9 या 24वें साल
चं०	तालीम का संबंध	24 साल के बाद	पहले या 25वें साल
शु०	शादी के बाद	25 साल के बाद	3 या 28वें साल
मं०	औरत ताल्लुक	28 साल के बाद	6 या 34वें साल
बु०	व्यापार, वाहन/लड़की की शादी	34 साल के बाद	2 या 36वें साल
श०	ताल्लुक मकान	36 साल के बाद	6 या 42वें साल
रा०	ससुराल ताल्लुक	42 साल के बाद	2 या 48/44वें साल
के०	पैदाईश औलाद	48 साल के बाद	3 या 51वें साल

ग्रह दृष्टि :-

ग्रह कुण्डली में 12 खानों में से किसी घर में बैठे हुए ग्रहों की स्थापित रास्तों के जरिये आपसी असर मिलाने की ताकत नज़र ग्रह दृष्टि कहलाती है। जो उंगली टेढ़ी हो जाती है वह अपनी ताकत छोड़ देती है, जिस उंगली की तरफ झुके, उसी उंगली का असर पैदा होगा। उंगली का झुकाव टेढ़ापन हो न कि जाहिर झुकाव।

क्याफा :- **हस्त रेखा में शाखों या रेखा के उतार झुकाव का ज्योतिषि विद्या में ग्रह दृष्टि होती है। रेखा का ऊपर को झुकाव और उठाव तरक्की या नेक असर और नीचे का झुकाव बुरा असर बतलाती है। यही फल शाखों के ऊपर नीचे को निकल जाने का हो। रेखा का ऊपर का उठाव झुकाव है से मुराद होगी कि इससे इस ग्रह का असर आकर मिल रहा है जिस ग्रह के पर्वत की ओर रेखा उठ रही हो दूसरे शब्दों में खत्म होने से पहले ही दूसरी रेखा का शुरु हो जाना रेखा का टूटा हुआ नहीं होता। तबदीली यालात जाहिर करता है या तबदीली अच्छी या भली, अगर ऐसी तबदीली बुरी तरफ को जाती मालूम हो तो दान से रिहाई और नेक असर होगा।**

आम हालत :- **1-7 घर, चौथे-दसवें,** **पूर्ण दृष्टि होती है।**
5-9, 3-11, आधी दृष्टि होती है।
8-6-2-12 बैठे, नज़र चौथाई करते है।

केतु, राहु, बुध की नाली, लेखा जुदा ही रखती है।

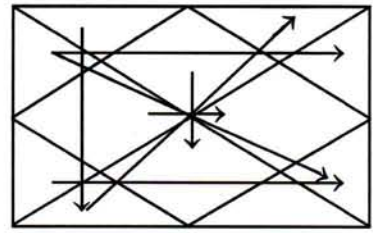

देखने से मालूम होगा कि इस शक्ल में दिये तीर के निशान किसी विशेष - विशेष घरों से शुरु होकर किसी खास घरों में जाते हैं। तीर संबंध को बताता है। अगर तीर की पूँछ वाला ग्रह नोक वाले ग्रह की दोस्ती या शत्रुता के मुताबिक भला या बुरा असर तीर समाप्त होने वाले ग्रह में मिला देगा। परन्तु नोक वाला ग्रह पूँछ वाले ग्रह पर कोई प्रभाव न करेगा।

जिनका असर	जिन पर हो	दृष्टि की ताकत
1 4	7 10	खाना नं० 1—7 या 4—10 :- 100 प्रतिशत असर देखते हैं
3 5	9,11 9	5—9 या 3—11 :- 50 प्रतिशत
8 2 6	2 6 12	खाना नं० 2—6, 6—12, 8—2 :- 25 प्रतिशत

हर ग्रह की पूर्ण दृष्टि सातवीं होती है। पणफर राशि का उच्च ग्रह अपनी राशि में उत्तम असर देगा।

1. 100 प्रतिशत दृष्टि की हालत में 2 ग्रह एक-दूसरे के ज्यादा नज़दीक या एक ही हो जाते हैं या मिल जाते है।
2. 50 प्रतिशत पर इनके बीच का फासला 1/2 हो जाता है या दोनों की आधी ताकत आपस में मिल जाती है।
3. 25 प्रतिशत में 1/4 में मिलते हैं या 3/4 दूरी पर होते हो।

नोट :- बुध की खास नाली, राहु केतु सिर्फ दोनों की आपसी दृष्टि और खाना नं० 2 और 9 में इन तीनों का ताल्लुक जुदा होगा।

उल्टे घर :- आम हालत

घर उल्टा 8 दूजे होवे, न देखे 5, 11 घर।
बुध 12-6, 9-3 मारे, शनि 6 से दूसरा घर।

ग्रहों की आपसी दृष्टि का राशियों से संबंध, कुण्डली के खानों का संबंध :-

बात को समझने के लिए राशि को स्त्री और ग्रह को मर्द कहिए। दोनों का मिलाप ग्रह राशि या मर्द और स्त्री (ग्रह का जोड़ा) मिथुन राशि के खाली आकाश में शुक्र की गृहस्थी मुहब्बत हकीकी (गैर हकीकी में) कुल सृष्टि दुनियां त्रिलोकी, तीनों ज़माने का खाना नं० 3 में मंगल के पक्के घर भाई बंदी से चल रहा है। इस जोड़ की नियत 3 हिस्सों में बंटी हुई ससझे।

1. घर की मलकियत या साधारण जैसी हर मर्द या औरत की गिनी जा सकती है।
2. उच्च हालत की यानि जो हरेक या आपसी एक के लिए दूसरे की नेक हो सकती है।
3. नीच या मंदी दुश्मनी भली-बुरी या एक के हाथों दूसरे का बुरा करने वाली।

हरेक राशि के असर के लिए उसके मालिक ग्रह साधारण या आम हालत का (भला या बुरा) उच्च फल की ही दृष्टि से मुराद नेक फल देने का संबंध चाहे राशि का ग्रह के लिए या ग्रह का राशि के लिए और नीच फल की राशि का ग्रह बुरे असर से तबाह होगा, या जिसकी चाहे राशि की इस संबंधित ग्रह के लिए कहो चाहे ग्रह के लिए इस राशि के संबंध को समझने की नीयत बद गिनी जायेगी। हरेक राशि किसी खास ग्रह के लिए खास-खास ताल्लुक निश्चित किया गया है। इस तरह निश्चित जोड़े पर जब कोई ग्रह राशि के बजाय किसी और ग्रह की राशि ताल्लुक राशि में जा बैठे तो वह ग्रह जो चलकर दूसरी जगह बैठा है कुण्डली वाले की किस्मत पर वैसा असर देगा।

कुण्डली के 12 खानों में :- बन्द मुट्ठी के खाना (1-4-7-10) चार दीवारी वाले किस्मत के साथ लाए खज़ाने है और बाकी आठ त्रिकोण के खाने कुल 4 पूरे घर बनते हो यानि बच्चे के साथ कुल 8 पूरे घर हुए। अत: घर पहले जन्म, जिस्म और 8 वां मौत है। ग्रहों को लै प मानिए, सब कोठरी के दरवाज़े किसी न किसी तरफ से खुले माने गये हैं या एक घर में चमकते व जले लै प की रोशनी उसके दरवाज़े से दूसरे के अन्दर जाती मानी गई (दृष्टि)। मौत का घर उल्ट हालत, नं० 8 उल्ट देखता है, राहु केतु की इकट्ठे बैठक के असर पाप-पुण्य का मुकाम, मगर इस खाना नं० 2 में खाना नं० 8 से आने वाले असर में तमाम पापी ग्रह राहु, केतु, शनि का हिस्सा भी शामिल है। ये अपने से 8 वें साल तबाही दे सकते है।

खाना नं०6, 12 को देखता है परन्तु 12, 6 को नहीं परन्तु बुध खाना नं० 12 में 6 को देखता है क्योंकि बुध को आकाश माना है, अत: 6 पाताल, और 12 आसमान में भी खाली आकाश होता है। अत: हर सातवें साल तबदीली असर कर सकता है, अपने से बाद 7 वें देखने वाले ये हैं। मौत का आठवाँ घर पीछे को देखने वाले घर के ग्रह हर आठवें साल तबदीली हालत ही पैदा करते हैं।

देखते हैं खाना नं० 3, 9 को, देखते हैं खाना नं० 6, 12 को तथा 8, 2 को, 2 ने 6 को देखा, अत: 8, 6 का 25 प्रतिशत असर होगा और 6, 12 को देखें अत: 8 का असर 12 पर चला गया है। अब नं० 2 में 10, पर 12 में 2, 6 की मार्फत 25% खाना नं० 8 का असर होगा गोया 2 देखता है 25% 12 को।

बुध खाना नं० 9 से नं० 3 को देखता बुध, या 9 में बैठा हुआ बुध, खाना नं० 12 से खाना नं० 6 को देखता हुआ बुध सब ही ग्रह का फल बेमायनी कर देता है, चाहे वो सब एक तरफ और बुध अकेला मुकाबले पर, चाहे वो उसके मित्र या शत्रु साथी हों या मुकाबले पर हों।

100% और अपने से सातवें को देखने का फर्क :-

100% खाना अपने से 7 वें का दूध में मिले खांड की तरह असर देगा मगर अपने से सातवें साल अपने के बाद के घर का

असर को उल्टा कर देता है गोया दूध का बर्तन ही ज़हरीला कर देता है। दोनों ही हालतों में दृष्टि का असर तो 100% पर होगा। फर्क यह है कि एक 100% के असर का खाने सिर्फ बंद मुट्ठी के अन्दर ही मुकर्रर है या अपने से बाद के खाने बाहर के त्रिकोण के घरों में मुकर्रर है यानि मुट्ठी के अन्दर अपने से सातवें का असूल न हो और न ही बाहर वालों पर 100% (नेक कर देने) का असूल चला सकेगा। जब कोई ग्रह अपने से बाद के घर को 100% नज़र से देखते हो, वो देखने वाला ग्रह अपने के बाद के घर के ग्रह में (बाद के घर में नहीं) अपना असर ऐसा मिला देता है कि पहले का असर दूसरे में मिला मालूम ही न होगा जैसे दूध में खांड 1 ऐसी मिलावट को बुध की मिलावट कहते हो और इस पहले घर वाले ग्रह का वही असर होगा, जो कि वो था। मगर जब कोई ग्रह अपने से बाद के सातवें को देखे तो न सिर्फ देखने वाले ग्रह का असर इस घर में यानि (ग्रह में नहीं) ऐसा मिला हुआ होगा जैसे एक टांग कटे आदमी की टांग पर दूसरी टांग लगा दी गई (2 चीज़ों का इकट्ठा काम करना) मगर अपने वजूद को ये न छोड़ेगा। यह मिलावट मंगल की मिलावट कहलाती है। बल्कि उस पहले घर वाले ग्रह का असर बाद वाले के बिल्कुल उल्ट होगा। यदि पहले वाले का असर नेक था, परन्तु बाद वाले के मिलने के बाद नेक असर बाद वाले के लिए उल्टा होगा, मगर पहले का खुद जैसा है वैसा ही होगा।

<u>ग्रह का असर ग्रह में, ग्रह का असर ग्रह के घर में और उनका फर्क -</u>

1. पहले घर के ग्रह के असर बाद के घर के ग्रह में मिल जाने का मतलब होगा कि पहले घर के ग्रहों का असर एक ही होगा या बाद के घर के ग्रह के भी पहले घर के ग्रहों का असर ऐसा मिला कि कुछ न गिना गया लेकिन उस मिलावट के बाद के घर में यानि बाद के खाना नं० अपना कोरा असर न डाला, हो सकता है कि उस बाद के घरों में कई ही ग्रह हों। पहले घर के ग्रह का असर बाद के घर के सब ग्रहों में जब मिलावट तो हो सकता है कि अगर वह पहले सब के सब तो बाद के घर से दोस्त हो तो जब।
   क) इनमें पहले घर के ग्रह की ज़हर मिली तो वो सबके सब भी या उनमें से कुछ इकट्ठे या कुछ दूसरे के शत्रु हो जाएंगे।
   ख) उनमें दोस्ती पैदा कर देने की ताकत का असर मिले यानि आपसी दुश्मनी दोस्ती में बदल जाये।
2. पहले घर के ग्रह का असर बाद के घर में मिल जाने से मुराद होगी (ग्रह में नहीं) कि बाद के घर के ग्रह अलग-अलग ही लेंगे। मगर वो मंगल की बनाई हुई मिलावट की तरह अलग-अलग होते हुए भी उस आ मिलने वाले ग्रह के असर असर का सबूत देंगे। क्योंकि इस घर का वही असर ये मिलने वाले असर ने सबके लिए बदल दिया या बाद के घर के ग्रहों के लिए वो खाना नं० ही किसी और असर का हो गया यानि इन ग्रहों ने अपना पहला असर इस घर की तमाम चीज़ों को बदल कर रख दिया। जब ग्रह से ग्रह मिला था तो अमली तौर पर ये पक्का हुआ था कि पहले घर के ग्रह ने बाद के घर के ग्रह के असर को बदला था यानि बाद के घर का असर जिसमें कि वो ग्रह (जिसका असर बदला गया) बैठा था, सिर्फ अपना ही बदला असर इस खाने की सिर्फ इन चीज़ों पर किया जो चीज़ें कि उस असर बदला जाने वाले ग्रह के उस घर की जिसमें बैठा हुआ था, वो असर भी बदला जाने वाला ग्रह का था। अगर बहुत से ग्रह हों तो उन ग्रहों की जिनका असर बदला गया है अपने बदले हुए असर का सबूत सिर्फ उनकी चीज़ों पर दिया जो चीज़ें इस घर से स बन्धित थी। मसलन बुध शुक्र दोनों का ही पक्का घर खाना नं० 7 है जिसमें ऊपर से खाना नं० 1 का असर मिल सकता है1 फर्ज करें कि खाना नं० 1 में ही सूर्य और 7 में बुध शुक्र। अब सूर्य का असर दोनों में मिल गया यानि दोनों (बुध, शुक्र) ही सूर्य की तरह चमकते हों और सूर्य का असर नं० 7 वाले के लिए उच्च की हालत में होने की बजाय उल्टा बुरा न होगा और वह असर दोनों में दूध में खांड मिले की तरह होगा।
3. शुक्र खाना नं० 6 मंगल 12 में तो दृष्टि में 6, 12 अपने से सातवें हैं यानि शुक्र 6 का असर खाना नं० 6 में उल्ट असर होगा, और खाना नं० 12 में जो ग्रह 12 में है गोया मंगल के लिए खाना नं० 12 की सब चीज़ों के असर के लिए मुबारक होगा क्योंकि खाना नं० 6 का शुक्र नीच है जब उसका असर खाना नं० 12 में गया तो 12 की तमाम चीज़ें मंगल के लिए उच्च फल की होगी। मगर ये उच्च फल किसके लिए होगा, मंगल के लिए जो 12 का है यानि टेवे वाले का भाई। मंगल का गृहस्थ सुख उस भाई के लिए उ दा हो मगर कुण्डली वाले का शुक्र वैसा ही यानि दौलत का मंदा होगा।
4. 100% की हालत में कुण्डली वाले को जाती असर बुरा मिलेगा मगर अपने से सातवें की दृष्टि असर करेगी बाद के घर पर, जिसकी वज़ह से उस घर का जो ग्रह उस कुण्डली वाले का जैसा भी है ताल्लुकदार हो, उस पर असर देगी। मगर कुण्डली वाले पर सीधा असर न होगा। मसलन बाद के घर में सातवें मिलावट की हालत में शुक्र है तो असर होगा बाद के घर का

शुक्र पर उल्ट कर दिया गया औरत जात के ताल्लुकदार यानि कुण्डली वाले के ससुराल वाले बगैरा पर अपने असर का उल्ट असर होता जाएगा। अगर पहले घर का कुण्डली वाले को मंदा फल मिले तो उस मंदे फल का उल्ट अच्छा फल मिलता जाएगा। कुण्डली वाले के उस घर के स बन्धित स बन्धी को जो कि बाद के घर के ग्रह में कुण्डली वाले के साथ रिश्ता हो :-यानि मंगल— भाई, बुध— बहन बगैरा।

(विशेष-विशेष चीज़ों के लिए दृष्टि) सेहत बीमारी शादी औलाद मकान बगैरा :-

अपने घर से पाँचवें दोस्त, सातवें उल्ट होता है।
आठवें घर पर टक्कर खाते, बुनियाद 9 वें होते हैं।
तीसरे घर के जुदा-जुदा तो, बुध से वो आ मिलते हैं।
घर दसवें पर बाहम दुश्मन, हो धोखा देते या चक्कर में हो।
नर ग्रह बोलते जफत के घर में, स्त्री बोलते ताक में हैं।
बुध है बोलता 3-6 में तो, पापी 2 नहीं बोलते हैं।

दो घरों के बीच जब घर हो 3, 5 वां, दोनों खानों के ग्रह बाहम मददगार होंगे चाहे दोस्त या चाहे शत्रु, 5 वां सातवां देखने वाले घर के ग्रह देखे जाने वाले घर पर अपना बैठा होने वाले घर के असर का उल्ट असर देंगे। बन्द मुट्ठी 1, 4, 7, 10 जुदा होगी। खाना 6, 8 में दोनों-दोनों घरों के बाहम टकराव पर होंगे। सिवाय खाना नं० 2, 9 के जिनमें कोई पर्वत (ऊँचा) व समुद्र की लहर टकराव बारिश बरसाने का फायदा वाला टकराव होगा। बाकी सब टकराव के घरों में मंदा असर होगा। सातवें 9 वें दोनों घरों के ग्रह बाहम साधारण दोस्ती या दुश्मनी जो भी हो। आठवें 10 वें दोनों घरों के ग्रह बाहम दुश्मनी पर होगा। मसलन खाना नं० 9 से 6 तक बीच के खाने होंगे। (10 से 12 = 3, 1 से 5) = कुल = 8 और फर्जन नं० 9 में शनि है जो खाना नं० 9 में निहायत मुबारक है, 60 साल असर का है, और खाना नं० 6 में बुध है जो खुद उच्च या राजयोग है। लेकिन अब खाना नं० 6 वाले के मामों वगैरा सिर्फ बुध के स बन्धित कारोबार करें तो राजयोग पूरे होंगे लेकिन अगर वही मामों वगैरा शनि का कारोबार करें तो वो बर्बाद होंगे। लेकिन खुद जातक खाना नं० 9 वालों के लिए यानि इसके जातक के पूर्वजों के लिए शनि का फल उत्तम होगा, पर खाना नं० 6 वालों मामों वगैरा के लिए बुध के काम ठीक है इस शत्रुता का टेवे वाले पर कोई बुरा असर न होगा। अगर होगा भी तो शनि का खाना नं० 6 के घर के ताल्लुक बातों पर मंदा होगा। उदाहरण :- 10 से 5 तक के बीच घर होगा 11, 12, 1 से 4 कुल 6 घर, मगर खाना नं० 5 से 10 तक होंगे यानि कुल चार, यानि 10 देख सकेगा खाना नं० 5 को मगर खाना नं० 5 नहीं देख सकता है 10 को सिवाय खाना नं० 5 के चन्द्र जो खाना नं० 10 के लिए ज़हर होगा, आमतौर पर पहले घरों के ग्रह दूसरे घर वालों को देखा करते हैं। सिवाय खाना नं० 8 के, लेकिन खाली घरों की हालत में सोये हुए घर या सोये ग्रह देखने के लिए उपाय की शर्त आगे-पीछे दोनों ही तरफ चला कर देखी जाए।

योग दृष्टि सेहत बीमारी के समय :-

नर ग्रह बोलते जफत के घर में, *स्त्री बोलते ताक में है।*
बुध है बोलता तीन छः में, *पापी नहीं बोलते 2 में है।*

ग्रहों की दृष्टि :-

खाना	दृष्टि	बाहम मदद	आम हालत	टकराव	बुनियाद	धोखा	साझाँ दीवार	दीवार	अचानक चोट	निशान
1.	अ	5	7	8	9	10	2,	4	3, 7, 11	D
	ब	9	7	6	5	4	12,	10		
2.	अ	6	8	9	10	11	3		4	E
	ब	10	8	7	6	5	1			
3.	अ	7	9	10	11	12	4		1	F
	ब	11	9	8	7	6	2			
4.	अ	8	10	11	12	1	5,	7	10, 6, 2	H
	ब	12	10	9	8	7	3,	1		
5.	अ	9	11	12	1	2	6		7	G
	ब	1	11	10	9	8	4			
6.	अ	10	12	1	2	3	7		4	K
	ब	2	12	11	10	9	5			
7.	अ	11	1	2	3	4	8,	10	1, 5, 9	L
	ब	3	1	12	11	10	6,	4		
8.	अ	12	2	3	4	5	9	2	10	M
	ब	4	2	1	12	11	7			
9.	अ	1	3	4	5	6	10		7	N
	ब	5	3	2	1	12	8			
10.	अ	2	4	5	6	7	11,	1	4, 8, 12	P
	ब	6	4	3	2	1	9,	7		
11.	अ	3	5	6	7	8	12		1	Q
	ब	7	5	4	3	2	10			
12.	अ	4	6	7	8	9	1		10	R
	ब	8	6	5	4	3	11			

अ = खाने को देख सकता है। ब = खाने से देखा जा सकता है।

भाव दृष्टि

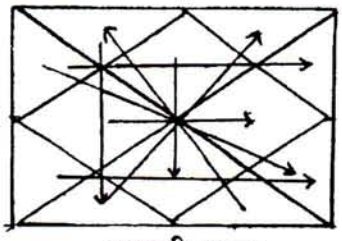

टकराव

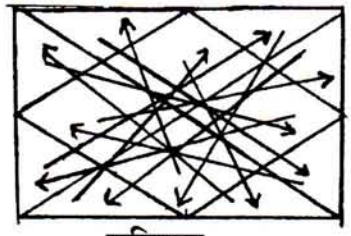

आपसी मदद

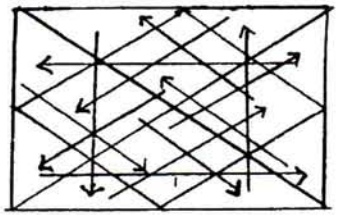

बुनियाद

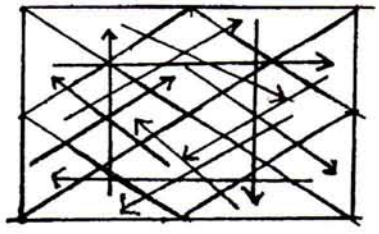

ग्रहों की अपनी दृष्टि के वक्त उनके मुश्तरका असर की मिकदार

हर देखे जाने वाले या दूसरे हमसाया ग्रह की ताकत होगी									साथ में हो या देखता हो।
केतु	राहु	शनि	बुध	मंगल	शुक्र	चन्द्र	सूर्य	वृ०	
5/6	2/1	3/1	2/1	2/1	15/4	1/2	2/0	—	वृहस्पति
ग्रहण	1/2	1/3	2/1	2/2	2/1	—	2/1	2/1	चन्द्र
1/2	ग्रहण	दौलत = 2/3, वालिद=1/2 सुख = 1/3	1/2	2/1	3/4	3/4	—	2/3	सूर्य
2/1	2/1	1/3	2/2	4/3	—	1/2	3/4	1/2	शुक्र
$1^1/_2$	0/1	4/3	2/1	मं० बद = 1/3	1/3	2/1	2	2/1	मंगल
$1^1/_4$	2/1	5/4	—	2/2	2/2	1/2	2/1	1/2	बुध
1/2	2/1	—	4/5	1/3	4/3	1/3	दौलत = 2/3 वालिद=1/2 सुख=1/3	5/4	शनि
2/2	—	2/1	2/1	2/2	1/2	1/2	ग्रहण	0/1	राहु
—	2/2	2/1	3/4	1/2	2/1	ग्रहण	1/2	2/1	केतु

दोस्ती-दुश्मनी का भाव नेक व बुरे हिस्से की मिकदार होगी :-

औसत तनारुव के हिस्सों में रकम का ऊपर का अंक देखे जाने वाले ग्रह की असर की मिकदार और नीचे का अंक देखने वाले ग्रह के असर की मिकदार होगी। सिर्फ एक ही जुज पूरा-पूरा हिस्सा देखा जाने वाले ग्रह की ताकत से मुराद होगी।

मुश्तरका दीवार

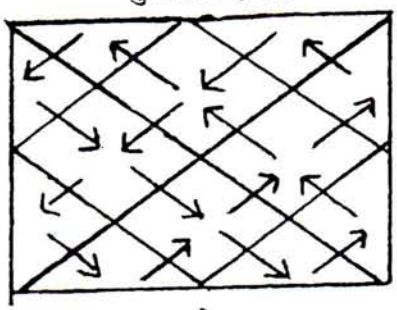

आग ज्योतिष की दृष्टि

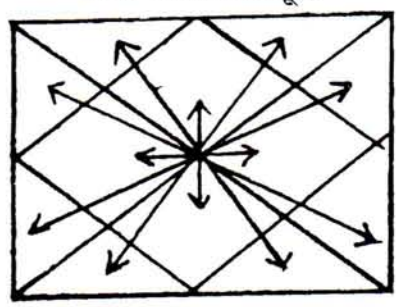

धोखा

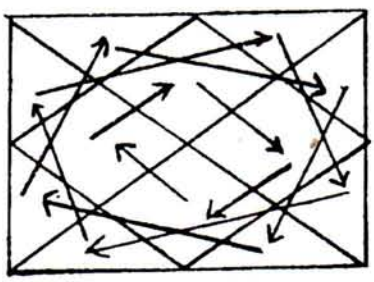

अचानक चोट

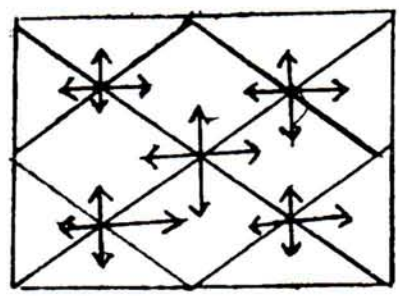

योग दृष्टि आपसी मदद :- चाहे दो ग्रह दोस्त या दुश्मन हों मगर करेंगे एक-दूसरे की मदद ही, अपने से पाँचवें घर को। योग दृष्टि की लिस्ट में खाना निशान में बीच के खाना नं० 1 के सामने दृष्टि के खानों में ल ज अ और ब लिखने में और खाना बाहमी मदद के नीचे ल ज अ के सामने पाँच अंक लिखा है और ब के सामने अंक 9 लिखा है। ये भी योग की दृष्टि में देख सकता है खाना नं० 1 को जिसका अर्थ है कि खाना नं० 1 देख सकता है खाना नं० 5 को बाहमी मदद के लिए, वही खाना नं० 1 को देखा जा सकता है खाना नं० 9 से यानि खाना नं० 9 मदद दे सकता है खाना नं० 1 को, दूसरे शब्दों में त त पर बैठे ग्रह को खाना नं० 9 के ग्रह मदद देंगे, चाहे खाना नं० 1 और 9 में बैठे ग्रह आपस में दोस्त या दुश्मन और खाना नं० 1 का ग्रह मदद देगा खाना नं० 5 को चाहे दोस्त हो या दुश्मन।

आम हालत :- इस हालत में बैठे ग्रहों की वही दृष्टि होगी जो कि आम हालत में होगी यानि 1-7, 4-1०, 5-9, 3-9 वगैरह-वगैरह। अब आपसी दोस्ती या दुश्मनी का असूल कायम है। पुरातन ज्योतिष में भाव दृष्टि हर सातवें पर होती है।

टकराव :- टकराव में बैठे ग्रह दोस्त या दुश्मन झगड़ा ही करेंगे और ऐसी टक्कर मारेंगे कि जड़ तक हिला देंगे। (अपने से आठवें को)। **बुनियाद :-** चाहे दोस्त या दुश्मन एक-दूसरे को पक्की मदद देंगे या एक के असूल की वही नींव होगी जो कि दूसरे की हो। (अपने से नौवां)। **धोखा :-** अब ग्रह यह दुगनी ताकत के होंगे, बात फैसला पक्के घर नं० 1० में धोखे के ग्रह के दिये हुए असूल पर होगा। (अपने से दसवें को धोखा देगा)।

मुश्तरका दीवार :- वो घर जुदा-जुदा बैठे हर दो दोस्त ग्रह आपस में मिले ही गिने जाते हैं। मगर दुश्मन हमेशा ही जुदा-जुदा गिने जाएंगे, या दोस्त ग्रह के बैठे हुए ग्रहों के बीच की दीवार नहीं गिनते। मगर दुश्मन दीवार की वज़ह से इकट्ठे होकर लड़ भिड़ नहीं सकते। यह असूल है वह सिर्फ एक साथ लगते घर दूसरे घर की हालत में, मगर योग दृष्टि के वक्त दूर-दूर घरों के ग्रह ी हूबहू वैसे ही गिने जाएंगे।

अचानक चोट :- आपस में दोस्त हों या शत्रु, ऐसी चोट मारेंगे कि चोट खाने वाला यह भी न समझ सके कि चोट किसने मारी है और चोट हर साल न होगी। मगर होगी फौरन झटपट, ऐसा अचानक नुक्सान कर देगी कि इस हद तक जिस का किसी को याल न हो सके।

कुण्डली में पहले या बाद के घरों के ग्रह :-

दृष्टि और एक दो तीन आदि के क्रम जो पहले आए उनमें बैठे ग्रह पहले घरों के होंगे, यानि जो ग्रह दूसरे ग्रहों को देखे और वो भी गिनती के रुख से पहले घरों के होंगे। अगर उदाहरण कुण्डली ले तो सूर्य खाना नं० 1 वाले को कहेंगे शनि खाना नं० 7 वाले से पहले घरों का। वृ० खाना नं० 4, मंगल खाना नं० 10 वाले से पहले घरों का है। मंगल से सूर्य, वृ०, शनि गिनती में तो ज़रूर पहले घरों के ग्रह से मुराद सिर्फ वृ० से होगी या मंगल अब वृ० के बाद के घरों का ग्रह है, क्योंकि खाना नं० 1 सूर्य, खाना नं० 7 के शनि, दृष्टि के असूल पर खाना नं० 10 के मंगल को नहीं देख सकते। एक ही घर का ग्रह हो और दूसरे घरों को देखे, मसलन खाना नं० 3 देखता है खाना नं० 9, 11 को,

कुण्डली में पहले या बाद के घरों के ग्रह

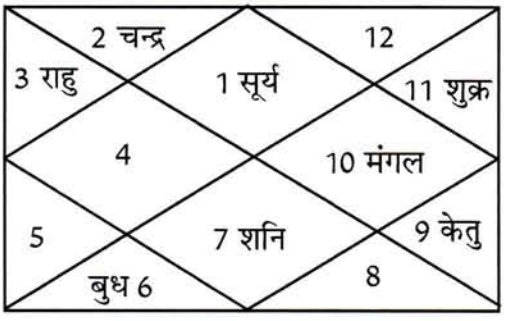

अब खाना नं० 9-11 के ग्रह तीन में बैठे हुए ग्रह से बाद के घरों के होंगे। इस तरह जब कहे कि चन्द्र दुश्मनी करता है शुक्र से तो मुराद होगी कि चन्द्र है पहले घरों में शुक्र से। कुण्डली में पहले घरों के ग्रह अपने से बाद के घरोंमें अपना असर मिलाया करते हैं। सिवाय खाना नं० 8 के जिसकी हालत में यह घर पीछे को देखता है या अपने से पहले घरों में अपना असर मिला देते हैं। बाद के घरों में किसी ग्रह का बुरा असर आना बन्द न हो जाये या पहले घरों के बुरे ग्रहों की मियाद तक बाद के घरों का असर नेक न होगा।

यही असूल खाना नं० 8 के ग्रह का खाना नं० 2 के ग्रहों के लिए होगा।

दोस्ती-दुश्मनी करता है, देखता है :- **दृष्टि के वक्त कुण्डली के खानों में 1-2-3 के क्रम से पहले घरों का ग्रह अपने बाद के घरों से दोस्ती-दुश्मनी करता है कहलाता है सिवाय खाना नं० 8 के जो खाना नं० 2 को पीछे की ओर को देखता हुआ देखता है।**

उलझन के ग्रह

जिनकी ज़रुरत बहुत कम पड़ेगी या ऐसी ग्रहचाल जिसके देखे बिना काम चल सकता है, क्योंकि ऐसे टेवे वाला प्राणी पुश्तदर पुश्त मंदी हालत में होते चले आने के कारण संसार में रह ही कहां सकते हैं। संसार में एक ऐसा प्राणी जो जन्म से या किसी एक खास दिन से सालों ही सालों लगातार मंदा पर मंदा समय देखता चला आए तो वह समय का मुकाबला करके कहां तक अपना जीवन कायम रखता चला आ रहा होगा।

ऋण पितृ का ग्रह :-

ऋण पितृ से अर्थ कुंडली वाले पर अपने बड़ों के पाप का छुपा प्रभाव होता है यानि गुनाह कोई करे सजा कोई भुगते, मगर भुगतेगा करीब संबंधी ही।

घर 9 वें हो ग्रह कोई बैठा,
ऋण पितृ उस घर से होगा,
साथी ग्रह जब जड़ कोई काटे,
5, 12, 2, 9

बुध बैठा जड़ साथी जो।
असर ग्रह सब निष्फल हो।
दृष्टि मगर वो छुपता हो।
कोई मंदे, ऋण पितृ बन जाता हो।

बुध की नाली की दृष्टि ऋण पितृ के समय :- (विस्तार के लिए बुध का हाल में देखे)

असर ग्रह घर तीसरा पहले,
बुध ग्रह घर दोनों रद्दी,
हाल मंदा न तीन का होगा,
बुध मिले स्वयं टेवे ऐसा,

बुध नाली जब मिलता हो।
शत्रु-मित्र चाहे बैठा हो।
मिला प्रभाव चाहे तीसरे हो।
बदल असर सब देवे वो।

बड़ों के पाप का प्रभाव खुद पर हो।

1. टेवे में जिस ग्रह की जड़ उसकी अपनी राशि में उसका दुश्मन ग्रह बैठ कर उसका फल रद्दी कर देता है, साथ ही साथ वह ग्रह खुद भी मंदा हो रहा है, तो ऋण पितृ होगी। जिसकी आम निशानी यह कि घर में कई व्यक्तियों में वह ग्रह एक ही जगह या मंदा चल रहा होगा। जैसे राहु खाना नं० 11, शनि खाना नं० 4, 6, बुध खाना नं० 2, 3, 8, 11, 12 उस वंश के कई एक टेवे में जाहिर हो रहा होगा।
2. दरअसल यह हालत खाना नं० 9 के ग्रहों से मुराद होती है। उस घर में यह वृहस्पति के अन्य घर में बैठे ग्रह में एक या एक से अधिक बैठे हुए ग्रह आपसी शत्रुता पर हो या वह बाहम सब हर एक वृहस्पति की शक्ति को नष्ट करते या वृ० के असर में विष मिलाते हों तो पितृ ऋण होगा।

राहु, वृहस्पति को चुप कराने वाला है, वह अगर वृहस्पति का मुँह बन्द करके खुद मंदी हालत का असर वृहस्पति के ताल्लुक से देवे तो पितृ ऋण का बोझ, जैसे या तो वह वृ० के घरों में हो या वृ० के पक्के घर में देवे।

3. ऐसे ही चन्द्र के समय मातृ ऋण आदि, और ग्रह भी ऋण देंगे। ऐसे व्यक्ति के अपने ग्रह चाहे राजयोग के हो, बुरा असर दो ग्रहों का ही होगा और उपाय भी उन दोनों का करना होगा। जैसे :- जातक के पिता ने कुत्ते मरवाये या मारे तो कुण्डली वाले पर वृहस्पति और केतु दो ही ग्रहों का पितृ ऋण होगा जो जातक पर 16 से 24 साल तक या जातक के बालिग होने की उम्र से 16 या 24 साल तक रह सकता है। इसी तरह ही बाकी सब ग्रहों का उपाय होगा, यानि एक तो उस ग्रह का उपाय करेंगे जो खुद निक मा हो गया दूसरे उस ग्रह का उपाय करेंगे जो उसकी जड़ की राशि, यानि वह राशि उसके लिए बाहैसियत मलकीयत या ग्रह मुकर्रर हो, में बैठ कर उसको निक मा कर रहा हो। मसलन वृहस्पति खाना नं० 9 में बर्बाद होने के वक्त पर मददगार होगा, लिखा है। मियाद :- उपाय के लिए ग्रह के उपाय के हालत में देखें यानि 40-43 दिन की बजाय 40-43 ह तों लगातार होगा जब तमाम वंश की बेहतरी के लिए करना हो। याल रहे कि एक वक्त में दो उपाय जारी कर देने वाजिब न होंगे क्योंकि ऐसा करने से किसी उपाय का भी फल प्राप्त न होगा। अत: पहले एक उपाय 40-43 दिन या ह ते करें फिर कुछ दिन या ह ते खाली छोड़ दें और फिर उसके बाद दूसरे उपाय 40-43 दिन या ह ते लगातार करें। राहु खुद मंदी हालत या नीच (राहु खाना नं० 12, केतु खाना नं० 6) या 2-8 में कोई उत्तम या मददगार न हो तो ऋण पितृ की हालत में केवल सांसारिक माया पर बोझ बनेंगे बाकी कभी मंदा फल न देंगे। ऋण पितृ के वक्त खुद उस ग्रह का जो मंदा हो गया हो और जिस ग्रह ने जड़ राशि से बर्बाद किया है दोनों ही का उपाय और दोनों ही की मियाद तक करना मददगार होगी। कुण्डली वाले के स बन्धी के ताल्लुक और पाप की किस्म से ऋण का नाम मुकर्रर होगा जो कि अगले पृष्ठ पर दिया है।

ऋण पितृ के उपाय में खून के स बन्धी लड़की, पोती, बहू, बहन, धोहता, पोता, बाबा, पड़दादा आदि बुआ, पुत्र, स्त्री, बहन, भांजा-भांजी, सभी शामिल है यदि कोई न बन पाये किसी कारण से भी और टेवे वाले में हि मत हो तो उसका हिस्सा भी डाल दें परन्तु यह उसके हिस्से से 10 गुणा अधिक होना चाहिए। स्त्री के माता-पिता यानि टेवे वाले के ससुराल के स बन्धियों के शामिल होने की कोई शर्त नहीं।

(जब बुध जड़ में बैठा हो)

ऋण पितृ की पहली हालत **ऋण पितृ की दूसरी हालत**

(जब बुध जड़ में बैठा हो) **(जब ग्रह की जड़ में उसका शत्रु बैठा हो)**

जो ग्रह खाना नं० 9 में हो	जब बु० बैठा हो खाने में	ग्रह	जब किस खाने से बाहर हो	और दूसरे ग्रह हो
वृं	12	वृ०	2, 3, 5, 6, 9, 12	खाना नं० 2 में शनि (पापी) खाना नं० 5 में शु० या खाना न० 9 में बुध या राहु नं० 12 या 3-6 में बुध, शुक्र, शनि (पापी) की तरह हो।
सू०	5	सू०	1, 11	खाना नं० 5 में शुक्र या पापी।
चं०	4	चं०	4	खाना नं० 4 में शु०, बुध, शनि।
शु०	2-7	शु०	1, 8	खाना नं० 2, 7 में सू०, चं०, राहु में से एक या अधिक।
मं०	1-8	मं०	7	खाना नं० 1, 8 में बुध केतु।
श०	10-11	बु०	2, 12	खाना नं० 3, 6 में चन्द्र।
रा०	12	श०	3, 4	खाना नं० 10, 11में सू०, चं०, मं०।
के०	6	रा०	6	खाना नं० 12 में सू०, शु०, मं०।
		के०	2	खाना नं० 6 में चं०, मं०।

ऋण पितृ सदा जन्म कुण्डली से देखें वर्षफल से वास्ता नहीं।

इन 2 हालतों में 2, 5, 9, 12 की मंदी हालत भी ज़रूर हो तो किसी तरह की ऋण पितृ न होगी ।

ऋणों की किस्में :-

जैसी करनी वैसी भरनी, नहीं की तो करके देख।

वृ०— ऋण पितृ :-

लक्षण :- खाना नं० 2, 5, 9, 12 में शु०, बु०, रा० हो—

पाप का कारण :- बड़ों का पाप :- खानदान का कुल पुरोहित बदला गया चाहे वज़ह कुल पुरोहित खानदान में लावल्दी के या कोई और खानदानी करवट।

आम निशानी :- साथ में (पड़ोस में) धर्म मंदिर या वृ० से चीज़ें पीपल आदि को बर्बाद ही कर चुके या करते हों।

सू०— ऋण अपना :- **लक्षण :-** खाना नं० 5 में शु० या पापी हो—

पाप का कारण :- अंत खराब :- नास्तिकपन, पुराने रस्मों रिवाजों पर पेशाब की धार मारने की धारणा का आदमी होगा।

आम निशानी :- उस घर में ज़मीन के नीचे अग्नि कुण्ड हो या आसमान की तरफ छत में से रोशनी के रास्ते आम होंगे।

चं०— मातृ ऋण :- **लक्षण :-** खाना नं० 4 में के० हो—

पाप का कारण :- माता नीयत बद :- अपनी संतान पैदा होने के बाद माता को दरबदर जुदा करना या दु:खी करना या उसका खुद ही दु:खी हो जाने पर लापरवाही करना।

आम निशानी :- पड़ोस में कुआँ दरिया नदी नाला पूजने की बजाय घर की गंदगी बहाने या जमा करने का ज़रिया बनाया जा रहा होगा।

शु०— स्त्री ऋण :- **लक्षण :-** खाना नं० 2-7 में सू०, रा०, चं० हो—

पाप का कारण :- कुटु बी मारपीट :- स्त्री को बच्चे जनने की हालत में किसी लालच के कारण से जान से मार देना।

आम निशानी :- उस घर में दांतों वाले जानवरों का पालन खासकर गाय को पालना या घर में रखना, खानदानी घृणा का

असूल चलता होगा।

मं०— रिश्तेदारी का ऋण :- लक्षण :- खाना नं० 1-8 में बु०, के० हो—

पाप का कारण :- मित्र मार :- ज़हर की घटनाएँ करना, किसी के पके हुए खेत को आग लगा देना या किसी की भैंस आखिर बच्चा देने को आई को मार दिया या मरवा दिया, मकान बनाने पर आग लगा देना।

आम निशानी :- स बन्धियों के मिलने बरतने के असूल से घृणा, बच्चों के जन्म और गृहस्थी दिन त्यौहार के समय खुशी मनाने से दूर रहता होगा।

बु०— लड़की बहन का ऋण :-

लक्षण :- खाना नं० 3-6 में चं० हो—

पाप का कारण :- जवानी धोखा :- किसी की लड़की या बहन की हत्या या हद से ज्यादा ज़ुल्म करना।

आम निशानी :- कम उम्र मासूम गुम हुए बच्चों को बेच देना या उनको लालच में बदलना ठीक समझ लेना ऐसे ढंग पर जिसका साधारण प्रजा को भेद न खुल सके।

श०— जालिमाना ऋण :-

लक्षण :- खाना नं० 10-11 में सू०, चं०, मं० हो—

पाप का कारण :- जीव हत्या :- मकान धोखे से ले लेना, मगर उसकी कीमत किसी तरह भी अदा न करना।

आम निशानी :- घर के मकानों का बड़ा रास्ता दक्षिण में होगा या लावल्दों से जगह लेकर मकान बनाया होगा या रास्ते या कुएँ की छत पर महल बनाये होंगे।

राहु— पैदा ही न हुए का ऋण :-

लक्षण :- खाना नं० 12 में सू०, शु०, मं० हो—

पाप का कारण :- ससुराल धोखा :- या आपसी ताल्लुकदारों से धोखे फरेब की घटनाएँ, ऐसे ढंग से की हो कि दूसरे का कुल ही गर्क जाये।

आम निशानी :- घर से बाहर निकलते हुए दरवाज़े की दहलीज़ के नीचे से घर का गंदा पानी बाहर निकालने के लिए नाली चलती होगी या दक्षिण की दीवार के साथ उजाड़ वीरान कब्रिस्तान या भड़भूजे की भट्टी होगी।

केतु— कुदरती ऋण :-

लक्षण :- खाना नं० 6 में चं०, मं० हो—

पाप का कारण :- कुत्ता फकीर बदचलनी :- मगर ऐसे ढंग पर कि दूसरे के गरीब कुत्ते की तरह हद से अधिक तबाही हो जाये और ऐसे काम नीयत बद की नींव है।

आम निशानी :- निशानी केतु :- दूसरों की नर औलाद किसी न किसी छुपे बहाने खत्म करवाना, कुत्तों को गोली से मरवाना या केतु की दूसरी चीज़ें स बन्धियों को अपने लालच के कारण से कुल नष्ट करना या करा देना हर हालत में नीयत बद नींव होगी।

किस प्रभाव से ऋण पितृ दृष्टिगोचर होगी और उसका उपाय :-

वृहस्पति

उस खानदान में जिस वक्त कोई पुरुष या स्त्री के बाल सफेद आने लग जाएं, उसकी किस्मत का सोना दुनियां की पीली मिट्टी में बदलता मालूम होने लगेगा यानि बालों की सफेदी से पीलेपन में आता दिखा देगा कि घर का सोना पीतल हो गया और पीतल से काला लोहा वो भी जंग से भरा हुआ। संक्षेप में बालों की स्याही तक किस्मत की खान का सोना-सोना रहेगा, नहीं तो घटता चला जाएगा, मानहानि काम (चलते) में खुद बखुद रुकावट, सुख के सांस की जगह दु:ख, प्रसन्नता की जगह निराशा हो जाएगी।

उपाय : - ***कुल खानदान के हरेक व्यक्ति जहाँ तक कि खून का असर हो एक-एक पैसा वसूल करके एक ही दिन धर्म मंदिर में देना या उसके खानदानी घर से बाहर निकलने के दरवाज़े पर अटक जाये मुंह बाहर को पीठ मकान के अन्दर अब जिधर नज़र जाती हो या जिधर बायाँ हाथ हो उन दोनों दिशाओं में 16 कदम के अन्दर वृहस्पति की चीज़ें मंदिर पीपल का पेड़ होगा उसकी पालना करना सहायक होगा।***

सूर्य :-

जो भी जवान हुआ, उस पर राजदरबारी मन्दे झोंके गरीबी अपने आप आकर मिलने लगी। बचपन की उ मीदें सूर्य की गर्मी से काफूर हो गई, मुकद्मों, किसी का कर्ज़ा किसी की डिग्री किसी और के नाम, मगर वसूल डण्डे से ऐसे प्राणी से होने तक की नौबत आ पहुँची। दर्द बाजू में आप्रेशन दिल का जैसे खराबियाँ होने लगी। लियाकत की कीमत, दिल की इच्छा की आँहें उठनी, जवानी से बुढ़ापे तक यानि 48 साल की उम्र तक जिस्म के अन्दर दबी हुई या कफन में लपेट कर जाती हुई अपनी ही हरकत में चलती हुई देखी गई और ज्यों-ज्यों अंग कमज़ोर हुए सिर हिलने लगा। शांति की सहायता के झोंके साथ देने लगे और वो भी उस वक्त जब कोई बच्चा बल्कि पोता 11 साल या 11 महीने की मियाद में आ पहुँचा।

उपाय :- कुल खानदान के हरेक सदस्य जहाँ तक खून का असर हो उन सबका मुश्तरका और बराबर का हिस्सा लेकर के यज्ञ करना।

चन्द्र :-

जब भी ऐसा प्राणी विद्या से संबंध करे या पशु जो दूध देता हो उससे संबंध करे, हो जाये या ऐसी स्त्री बच्चे वाली होकर दूध पिलाने लगे । चाँदी का पैसा, घड़े का पानी दिल की शान्ति रात का आराम, आय का शुरू होना। फव्वारा, घर का दूध, संसारी मित्र स बन्धियों की छुपी मदद, रेशम के सफेद रंग की बजाय दीवारों पर रंग बदलने के लिए मिट्टी की सफेदी में बदलने लगे अर्थात् विफल होने लगे। इन सब ने हर उपाय किया। जिस किसी ने भी हि मत की विद्या का जवाब नकारा रहा। रुपया जमा किया तो वह बुरे कामों में यानि कफनों, बीमारियों, जुर्माने में खर्च होता गया और ऐसा समय कभी न आया कि कभी दूसरे से खुशी से दूध पिया या पिलाया। अगर कोई समय आया होगा तो मित्र को भी जूती उड़ाने या मु त का माल उड़ाने की इच्दा ही पैदा हुई होगी।

उपाय :- कुल खानदान सब से बराबर के हिस्से की चाँदी लेकर दरिया में एक ही दिन बहाई जाये।

शुक्र :-

खुशी में ग़मी, शादी में बरबादी, मिलन की रात, नर संतान का नतीजा कभी भला न हुआ, शरीर की सजावट के साथ-साथ कोढ़ फुलवारी का साथ हो। अगर एक तरफ शादी हो रही हो तो, दूसरी और उन्हीं के करीबी संबंधी का मुर्दा जल रहा हो। संक्षेप में खुशी के फल में ग़मी का बीज मिल रहा हो, मगर ये पता न चले कि शादी के जोड़े में असल भाग्यवान कौन ऐसा है जिसके कारण ये सब कुछ हो रहा है। हरेक ने ऐसे आँसू बहाये जो जाहिर न हुए और ये पता न चला कि ये सब क्यों हुआ।

उपाय :- 100 गायों को जो कि अंगहीन न हो सारे कुल खानदान से मुश्तरका खर्च पर एक ही दिन मजेदार भोजन खिलाया जाये।

मंगल :-

जिस्म में खून पैदा हुआ और मुंह पर मूंछे निकलने लगी या मासिक धर्म शुरू हुआ, बच्चा बनाने की धुन पैदा हुई हर नये काम में जिसमें हाथ डाला, अपने आप होता गया। दूर-दूर से लोग मिलने लगे शत्रु-मित्र बनने लगे जो भी शत्रुता पर आया पिस गया। यानि हर जगह उसकी तलवार का डंका बजने लगा मगर एकदम ये सब क्या हो गया कि सबका सब स्वाह हो गया है आग उठी तो छत पर जाने के लिये जो रस्सी रखी थी कि वह भी अभी थोड़ा ही नीचे थी कि टूट गई। छाती की हड्डियां टूट गई किसी मित्र ने मिट्टी की डली के जुर्म में उसका खून कर दिया। रहम ने साथ छोड़ा, न्यायी ने उसे ज़िन्दा धरती में गाड़ देने का हुक्म सुना दिया। वह अपने ईमान पर चलता रहा। हरेक पर भरोसा रखे हुए मगर संसारी खांड ने शीशे के बारीक टुकड़ों की रेत का सबूत दिया। आयु में 28 से 36 साल का खाना इस जालिम चक्की में चलने का समय पाया वैद्य ने साथ न दिया। मुंह पर मूंछे क्या निकली कि मौत की आमद हो गई।

उपाय :- बाहर से गांव में दाखिल होने पर दर यानी दुकान के मालिक जो शनि के काम यानि कारोबारी पेशा अर्थात् हकीम आदि हो उसे तमाम खानदान के एक-एक पैसा इकट्ठा करके शनि के उस काम को कुछ हिस्सा मु त करने के लिए देना। गांव से पूर्व की ओर से दाखिल होते एक चौक आया, पीठ अभी गांव की ओर से बाहर को ही है और मुंह गांव के अन्दर की तरफ ऐसी हालत में चौक में ठहर गये सामने ऐसे व्यक्ति की दुकान होगी। दाएँ हाथ की ओर उस चौक से रास्ता जा रहा है उस दुकान का दरवाज़ा भी उसी हाथ पर पर बाएँ हाथ की तरफ की

दुकानों का मालिक उन्हें बेच गया है जिसने खरीदी है उसका लड़का मर गया है जिसने उन दुकानों में काम किया बर्बाद हो गया है ऐसे व्यक्ति के अव्वल तो नर संतान न होगी अगर होगी तो संतान की जवानी न देख सकेगा और अगर कहीं उसकी जवानी देख भी ले तो वो बच्चे उस आदमी को अमूमन फटकारते ही होंगे जिसका कारण वह व्यक्ति शनि खाना नं० 4 का मारा हुआ यानि हकीम होते हुए सांप का तेल बेचता रहा। कारीगर होते हुए धोखे से पक्के की जगह कच्चे सामान बेचता रहा या यूँ कहो कि दूसरे की शनि की चीज़ों को अपने धोखे से बर्बाद करता रहा और अंत में उससे खुद ही मर गया खुद ही बर्बाद हो गया।

बुध :-

लड़की पैदा हुई। बहन का भाई साथी आ पहुँचा आपस में लड़ाई झगड़ा होने लगा। बुरी चीज़ मुसीबत को हटाने की हर चंद कोशिश की गई पर अक्ल की एक न चली उल्टा मुसीबत बढ़ती हुई। लड़का पैदा हुआ। घर वालों ने शुक्र मनाया मगर बाप को पता नहीं क्या हुआ कि उसका धन-दौलत सब रेत हो गया। नाड़े खिचनें लगी, दांत हिलने लगे, जवानी के पूरे समय में पिता की उम्र शक्की, माता तो चल ही बसी, उस खानदान में जब तक कोई बाप (बेटे का) न बना या माता न हुई, खुशहाल और तन्दरुस्त रह जाये। मगर खानदान के चिराग लड़के पैदा हो वह प्राणी जो बाप बना अपने हालत देखकर रात को आँसू बहाने लगा। मगर बर्तन में गुमनाम सुराख का भेद छुपा ही रहा। अगर कोई माता बनने पर ज़िन्दा रही तो वह आखिर बुढ़ापे तक अपनी मंदी हालत देखकर हर रात रोती रही और जो बाप बना वह खर्चे से चिल्लाता रहा मगर ये न पहचान सका कि ये सब क्यों हो रहा है कौन से धन का कीड़ा उसके अपने झगड़े या जायदाद का लगा हुआ है। अगर कहीं-कहीं पैसे जुड़ भी गये तो वह एकदम खर्च हो हो गये और बचत सिर्फ ये ही रही कि रुपये से हार दी तो जानों ने साथ नहीं छोड़ा, लेकिन उस नमक हराम लौंडी (बुध) ने कई खानदानों को बर्बाद किया और उनका नाम लेना तो एक तरफ बल्कि कोई और भाई बन्धु सहायक बनने पर खानदानी पालने वाले, बड़े माता खानदान के संबंधी या आगे आने वाले छोटे-छोटे बच्चे दोनों हाथों में अपना सिर पीटते रहे। कई बार तो ये मेहरबान ऐसे गढ़े में गिरे कि दम घुट करके मर गये भला सिर्फ वही रहा जिसने अपनी ज़ुबान बन्द रखी। ससुराल खत्म हो गये या पिस गये, मामू बर्बाद मगर उस छुपी लड़की के भेद में जालिम कसाई के चक्कर का भेद खुलने न पाया। 34 से 48 साल आयु में या बोलना सीखने के वक्त से दांत निकल जाने तक तमाम शरीर की नाड़ियों ने कोशिश करके देखा कि इसमें क्या भेद है मगर ये ही पता चला—

हज़ारों भटकते हैं, जो खून करके देखा,
लाखों दाता करोड़ो स्याने। आखिर खुदा की बातें खुदा ही जाने॥

जिसने कुछ काम किया वह गुमनाम हुआ जिसने कुछ न काम किया वह बदनाम हुआ। मगर दोनों के चक्कर का निशान कोई न बचा।

उपाय :- सारे खानदान वाले पीले रंग की कौड़ियां लेकर एक जगह इकट्ठी करके जलाकर राख कर उसी दिन दरिया में बहा दे।

शनि :-

सुबह उठे दरवाज़े पर आवाज़ आई कि वो किधर गये जो शाम को मशीनों का सौदा कर रहे थे, कुछ ब्याना भी न दे गये थे। कारखानों की दीवारों तक का खर्चा पेशगी जमा करवा गये। मगर बात अभी पक्की न हुई थी कि उनकी आँ ाों में अचानक मिट्टी का कण आ पड़ा। सिर दर्द शुरू हो गया कहानी वहाँ की वहाँ रह गई। सब इन्तजार में है कि वर्षा कब रूकेगी मकान का सामान बर्बाद हो रहा है, चलें पता करें कि वो साहब कहाँ है इतने में भागती लड़की आई कि वो मकान के उस कोने में जिस जगह तेल नारियल लकड़ी का गोदाम है आग लग कर जल गया है। आग को बुझाने वाले पानी के नल की चाबी चौकीदार के पास है जो बाहर गया हुआ है। जिस किसी को इस आग में चोट आई उसको अस्पताल पहुँचाने का कोई तरीका नज़र नहीं आ रहा। अभी ये बात हो रही थी कि कोने से साँप निकलता नज़र आया, सब का दम खिंच गया, सारी कहानी स्वप्न बन गई। वर्षा के जोर बगैर छत की खड़ी दीवारें गिरने लगी, नींद से उठते ये पहला नज़ारा देखा कि ससुराल बच्चों के स्कूलों से पुलिस के और दूसरे अफसरों से झगड़े फसाद खड़े हो गये हैं। लड़का बुद्धिमान मकानों इंजिनियरों पहाड़ो खानों डॉक्टरी सब विद्याओं को जानने वाला मगर परीक्षा में सिफ़र देकर के निकाल दिया गया। मकान देखने में बड़ा शानदार मगर उसमें रहने का मौका किसी को न मिला। अगर कोई मकान बना बनाया लिया तो उसकी सीढ़ियां बीच में टूटी या तोड़ कर सीढ़ियां बार-बार बनाई गई। कई बार तो मालिक ने आराम से सोकर न देखा और कहीं सो गया तो सुबह दुबारा जागता न देखा गया। कोशिश तो बहुत की मगर

पता न चल सका कि वहाँ ऐसी घटना साँपों, हथियारों या विष की घटनाओं से खानदान क्यों घटता गया।

उपाय :- 100 जुदा-जुदा जगह की मछलियों को एक ही दिन में कुल खानदान के बराबर और मुश्तरका खर्च से खाना वगैरा दें या 100 मज़दूरों को सारे खानदान वाले पैसा इकट्ठा करे एक दिन में खाना खिलाया जाये।

राहु :-

शाम हुई नींद का समय जारी हुआ। कुछ-कुछ स्वप्न की लहरें चलने लगी जब हर तरह का आराम और शत्रुओं से बचाव का सामान मिल चुका तो अचानक बिजली का सर्कट लीक होने से सजा सजाया मकान जल उठा। मिनटों सैकिण्डों में सब कुछ बर्बाद, धोखे और फरेब की घटनाओं से धन हानि होने लगी। जो भी कोई ससुराल का स बन्धी हुआ यानि उम्र 16 से 21 साल में पहुँचा तो सिर में चोट यालात और जिसमें बेढ़ब बीमारियों से मारा हुआ जवानी में बूढ़ा। जितना ज्यादा सोच विचार करके काम किया उतना ही बेकार निर्धन और व्यर्थ पाया गया। हर समय सोच विचार का काम किया मगर सोना पीतल और नीले रंग में बदलता गया। बाल बच्चे दे ाने में बड़े अच्छे सुन्दर मगर दमे मिरगी सांस, काली खांसी सांस की तरह-तरह की तकलीफें, बेगुनाह जेल और आसामयिक मौतें जहाँ तक भी इस खानदान के खून का असर पहुँचा काली आँधी का जोर बढ़ता गया। न्यायक ने मुकद्दमें के फैसले में कुछ न कुछ जुर्माना या जेलखाना डाल ही दिया न कसूर बताया चाहे वो था या नहीं। सब कुछ उल्ट-पुल्ट कर दिया। सुबह से शाम तक ज़मीन से आसमान तक सब और छानबीन की मगर विचार उत्तर यही मिला कि ये सब वहम है और फर्जी याल है किसी हद तक पागलपन का पैमाना है जो ये गुमनाम सजाए आफत और दिलतरदी की बुनियादें खड़ी कर रहा है।

उपाय : खानदान के हरेक सदस्य से एक-एक नारियल लेकर एक जगह इकट्ठे करके एक ही दिन दरिया में बहा दें।

केतु :-

बच्चों की अकाल मृत्यु यानि बच्चे खेल रहे थे इधर-उधर भागने लगे। कुत्तों के बच्चे साथ आ गये एक मुसाफिर आया जिसका पैर फिसला और कुत्ते के बच्चे के मुंह पर लगा। बच्चा अपनी जान बचाने के लिए भागा और सड़क पर पहुँच गया सड़क पर एक मोटर आई वह उसके नीचे आकर दब गया। उसकी माता जो उससे छोटे बच्चे को मकान की दूसरी मंज़िल पर नहला रही थी। घटना देखकर नहलाते बच्चे को वहीं छोड़कर नीचे भागी। तीसरी मंज़िल पर एक उसका भाई धूप सेक रहा था घटना को देखते हुए नीचे देखने पर वो भी नीचे गिर गया। माता जब मोटर के नीचे आये हुए और छत से गिरे हुए को उठा कर ऊपर पहुँची तो देखा कि तीसरा भी पानी में गोते खाकर मर गया। अब उस बेचारी को किसी की सलाह सुनती नहीं क्योंकि उसकी रीढ़ की हड्डी बगैर किसी के मारे टूट रही है। किस को कहे कि किसने क्यों और कब मारे। खानदान में तो किसी के नर औलाद हुई नहीं अगर हुई तो चलने फिरने के समय रोगों से नकारा हो गई। अगर किसी कारण यहाँ से भी बच गई तो जवानी में कानों से बहरापन, अधरंग, पेशाब की बीमारियों से दु:खी हो। अगर अपना खानदान बच गया तो मामा खानदान बर्बाद हो गया। दो पैसे जमा किए तो सफर में गुम कर दिये। किसी पर एतबार किया तो उसने धोखा दिया। मगर उसे ये पता न चला कि यह सब कुछ क्यों हो रहा है।

उपाय :- 100 कुत्तों को एक ही दिन में सारे खानदान इकट्ठे खर्च से मनमाना खाना खिलाये या खानदानी घर से दाखिल होने के लिए बाहर दरवाज़े पर ठहरे पीठ बाहर को मुंह मकान की ओर उनके घर साथ लगते हुए बाएँ हाथ के मकान में एक विधवा स्त्री होगी जो अपनी छोटी उम्र से ही दुखिया हो चुकी होगी, उसके आशीर्वाद से मदद मिले।

महादशा का ग्रह :-

मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की और और टूटते-फूटते आखिर एक दिन मृत्यु का देवा बन बैठा और मृत्यु हो गई।

विशेष ग्रह महादशा के समय :-

देवता जिस जगह बैठे हो उस बैठे होने वाले घर को पहला घर मान कर गिन कर चौथा या आठवाँ आदि महादशा के समय ग्रहों की मियाद इस प्रकार होगी -सूर्य 6 वर्ष, शनि 19 वर्ष आदि।

मंगल देखता 8 चौथे को,
शनि देखे घर 10 तीजें को,
एक अके ला या मुश्तरका,
9 ही ग्रह घर 6 वें बैठे,
गुरु देखे 5-9 घर।
दृष्टि हो कुल पूर्ण घर।
बंद मुट्ठी के खानों में,
देखा करें उन तरफों में।

किसी भी ग्रह का लगातार ही मंदी हालत का समय महादशा का समय होगा और आयु के एक 35 साल चक्र में सिर्फ

एक ही ग्रह महादशा में हो सकता है और एक भाग्य के संबंध में मनुष्य की सारी आयु में ऐसा समय ज्यादा से ज्यादा 39 साल हो सकता है। एक महादशा के बाद यदि दूसरी शुरू हो जाये तो दोनों महादशाओं के बीच का समय यानि एक की समाप्ति दूसरे का शुरू महादशा के मंदे असर का न होगा।

महादशा के समय ग्रहों की दृष्टियां इस प्रकार होगी :-

मंगल 4-8-7, श० 3-10-7, वृ० 5-9-7

बाकी सभी अपने से सातवें। यह दृष्टियां जिस जगह ग्रह बैठा हो वहाँ से एक नं० यानि लग्न गिन कर बनाएंगे।

यह महादशा का चक्र 120 साल है जैसे :-

वृ०	सू०	चं०	शु०	मं०	बु०	श०	रा०	के०	कुल
16	6	10	20	7	17	19	18	7	120

नोट :- भाग्य का ग्रह, राशिफल का ग्रह, उच्च, नेक ग्रह कभी महादशा में न होगा।

जब 1, 4, 7, 10 कोई भी ग्रह बैठा हो और साथ ही दूसरे घरों में कोई उच्च ग्रह हो यानि चन्द्र खाना नं० 9 में, राहु खाना नं० 3, खाना नं० 6 में बु०, रा०, खाना नं० 9 में केतु और खाना नं० 12 में शुक्र या केतु बैठा हो तो या खाना नं० 4 में खुद चन्द्र स्वयं अच्छा हो तो महादशा हरगिज नहीं होगी।

महादशा के समय धोखे का ग्रह हालात को बदलेगा। हर सातवें साल राहु और 8 वें साल खाना नं० 8 का ग्रह। महादशा में हो चुके ग्रह का दूसरों पर कोई बुरा प्रभाव न होगा।

महादशा के समय हर ग्रह का जो महादशा में हो गया हो अपना प्रभाव वर्षफल में इस तरह करेंगे :-

वृ०— 10 वें साल यह दसवें साल वृ० की गुरु पदवी और रियायती साल में जुदा होगा।

सू०— आयु के वह वर्ष जो 2 पर भाग न हों यानि 1, 3, 5 आदि में अपना प्रभाव देंगे (ताक)।

चं०— आयु के वह वर्ष जो 2 पर भाग हों यानि 2, 4, 6 आदि पर अपना प्रभाव देंगे (जिफत)।

शु०— 11 वें, मंगल चौथे - ये ग्रह के आम चक्र के 3 साल समय का पहल साल शुक्र में मंगल के ग्रह का प्रभाव अधिक होता है।

बु०— 5 वें में अपना प्रभाव देगा, शनि 6 वें में और राहु 7 वें में तथा केतु तीसरे वर्ष में अपना प्रभाव देगा।

वृ० का समय 16 वर्ष कहा है मगर वृ० की हालत में ही महादशा 9 वें में शुरू होगी और यह ग्रह अपनी महादशा के समय का 1, 2, 8, 10, 14 वर्ष विशेष अपने प्रभाव को रखेगा और गुरु होने की हैसियत से अपनी उम्र के आधे अर्से यानि 8 साल तक कभी बुरा असर न देगा। 9 वें साल का/से महादशा के समय का हाल और उसकी औरत का हाल चन्द्र कुण्डली (लाल किताब की) से देखा जाएगा जिसके लिए वर्षफल भी उसी कुण्डली से बनाएंगे।

लाल किताब की चन्द्र कुण्डली

जिस घर में ज्योतिष वालों ने शब्द चन्द्र का ग्रह लिखा हो उस घर को जन्म लग्न वाली राशि का नं० लगा कर तमाम 12 सं या पूरी कर लें इस तरह जहाँ तक एक की सं या आए वो घर सामुद्रिक में पहला खाना चन्द्र कुण्डली के देखने के लिए होगा।

उदाहरण के तौर पर

(1) उदाहरण जन्म कुण्डली

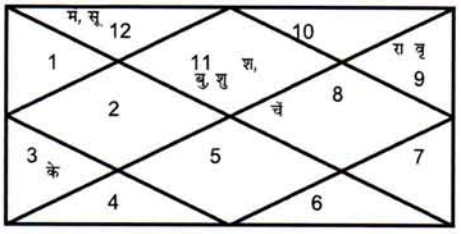

पैदाईश शनिवार स वत् 1992 मुकाम लाहौर 5 बजे सुबह 1-3- 36 तो कुण्डली यों होगी (चित्र1) लाल किताब के लिए पैदाईश के दिन वाली चन्द्र कुण्डली में (चित्र 2)में चन्द्र को जन्म लग्न की राशि यानि यानि खाना नं० 11 यानि जन्म लग्न राशि, दिया(चित्र 3) वही यानि सं या नं० 11 खाना नं० 1 में लिखा फिर लग्न घुमा कर 1 कर दिया यानि (चित्र 4) अब इस चन्द्र कुण्डली में उस व्यक्ति की पत्नी का हाल उसी तरह देखेंगे जैसा जन्म कुण्डली से पुरुष को देखा। वर्षफल भी उसी हिसाब और ढंग पर होगा जिस तरह कि जन्म कुण्डली व पुरुष का है। अन्तर केवल इतना है कि शादी से पहले उसकी चन्द्र कुण्डली अचानक और साहूब (आसानी) से प्रभाव करेगी मगर शादी के दिन का औरत आने पर पूरा फल देगी जो स्त्री का पूरा हाल होगा और उसी पुरुष को राशिफल बना कर मदद देगी।

(2) साधारण चन्द्र कुण्डली

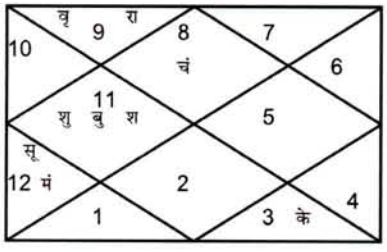

(3) पर लग्न वही रहा

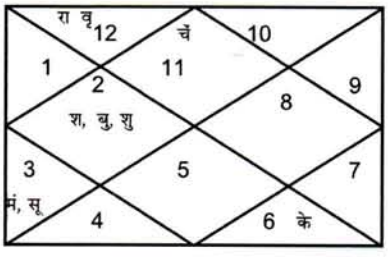

(4) फिर घुमा दिया (मेष लग्न)

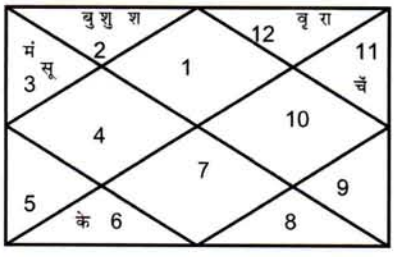

स्त्री सुख

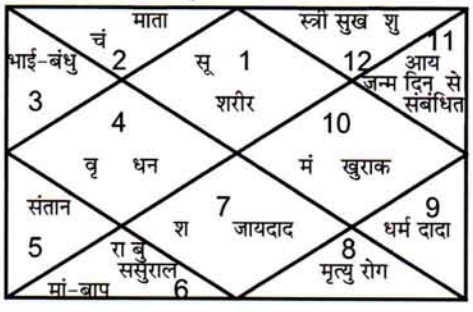

लाल किताब की चन्द्र कुण्डली

इसका प्रभाव महादशा के खाली रखे सालों में धोखे ग्रहों के सालों में जो होगा वह पक्का न हो, जिसे राशिफल कह कर शक का लाभ उठा लेंगे। जब किसी ग्रह के बराबर के ग्रह नीच और रद्दी हो मगर वो खुद नीच और रद्दी न हो तो ऐसा ग्रह त त पर आने के बाद वर्षफल के हिसाब जिस मास खुद ही नीच और रद्दी हो जाए उस दिन से महादशा में हो गया माना जाए लेकिन जब वो ग्रह खुद भी नीच और रद्दी हो और उसके बराबर के ग्रह भी नीच और रद्दी हो तो त त पर आने के दिन (वर्षफल के या जन्म दिन के हिसाब सब तरफ रद्दी हाल हो) से ही महादशा में हो गया होगा। महादशा के वक्त मित्र ग्रह की कोई मदद न होगी मगर शत्रु ग्रह कटे पर नमक छिड़केगें।

महादशा के साल	महादशा के सालों में कितने साल मंदे होंगे।	ग्रह खाना नं०	बराबर के ग्रह किन घरों में हों।	टेवे में ये ग्रहचाल हो तो आयु का साल मंदा होगा ।	जिस साल वर्षफल के हिसाब खाना ऐ बी सी डी की ग्रहचाल कायम हो जाए उस साल को पहिला साल गिनने मे फिर उस से आगे महादशा का साल होगा।
वृ० 16	16 में से वृ०3 मंदे	वृ० 10	रा० 9, 12 श०1,के० 3-6	20, 21, 22	11, 12, 13
सू० 6	6 में से 1मंदा	सू० 7	बु० 12	12	महादशा का 6वां वर्ष
चं० 10	10 में से चं०1मंदा	चं० 8	शु० 6, श० 1 मं० 4, वृ० 10	17	महादशा का 10 वां वर्ष
शु० 20	20 में से 8 मंदे	शु०6	मं० 4, वृ० 10	9, 11, 12,13,17, 18,21, 25, 27	1, 3, 4, 5, 9, 10 12, 17, 19
मं० 7	7 में से 4 मंदे	मं० 4	शु० 6, श० 1 रा० 9, 12	4, 5, 6, 9	1, 2, 3, 6
बु० 17	17 में से 7 मंदे	बु० 12	श० 1, के० 3, 6, मं० 4, वृ० 10	11, 14, 15,17, 22 24, 28	1, 3, 4, 6, 11, 13, 17
श० 19	19 में से 4 मंदे	श० 1	के० 3, 6,वृ० 10	1, 2, 11,13	1, 2, 11,13
रा० 18	18 में से 11 मंदे	रा० 9	वृ०10,चं० 8	6, 8, 9, 10 14 से 18-20-22	1, 3, 4, 5, 9 10 से 13-15, 17
		रा० 12		12, 14, 16,17,20 22,23, 24, 26, 28	1, 2, 4
के० 7	7 में से 4 मंदे	के० 3	वृ० 10, श० 1, बु० 12, सू० 7	3, 4, 6	1, 3, 5, 6, 9,11, 12, 13,15, 17, 18
			के० 6	9, 12, 13	1, 4, 5
कुल 120	120 में से 42 मंदे	ए, बी	सी	डी	ई

1. जिस साल वर्षफल के हिसाब ए, बी, सी, डी, ई की ग्रहचाल कायम हो जाये उस साल को पहला साल गिने फिर उसमें आगे महादशा का साल होगा।
   महादशा हो चुके ग्रह की तरफ मंगल, शनि और वृहस्पति की दृष्टि नज़र अलग होगी।

किस ग्रह की चाल के वक्त महादशा होगी :-

किस खाना नं० में कौन-कौन से ग्रह महादशा में हो जाने वाले ग्रह के बराबर का मगर नीच हालत में बैठा हो। बराबर के ग्रह मंदे होने पर भी जो किसी तरह मंदे हो सकते हैं चाहे किसी जगह हो, महादशा का समय होगा।

किस ग्रह की महादशा होगी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	दी गई ग्रह चाल के वक्त अगर उसी वक्त ही
वृ०	श०		के०			के०			रा०	वृ०		रा०	खाना ग्रह बैठा हो
सू०							सू०					बु०	2 चं०
चं०	श०			मं०		शु०		चं०		वृ०			3 रा०
शु०				मं०		शु०				वृ०			6 बु०, रा०
मं०	श०			मं०		शु०			रा०			रा०	9 के०
बु०	श०		के०	मं०		के०				वृ०		बु०	12 के०, शु०
श०	श०		के०			के०				वृ०			या खाना नं० 4 के ग्रह
रा०							चं०		रा०	वृ०		रा०	अच्छे या खुद चं० किसी भी अच्छे प्रभाव का हो
के०	मं०		के०			के०	सू०			वृ०		बु०	तो महादशा न होगी

दी गई ग्रहचाल के वक्त अगर उसी-उसी वक्त हो।

खाना नं० 2 में	*चं० बैठा हो।*
खाना नं० 3 में	*रा० बैठा हो।*
खाना नं० 6 में	*बु०, रा० बैठा हो।*
खाना नं० 12 में	*के०, शु० बैठा हो।*

या खाना नं० 4 के ग्रह अच्छे या खुद चं० किसी भी घर में अच्छे प्रभाव का हो तो महादशा न होगी।

<u>महादशा के वक्त अगर :- मं० बैठा हो खाना नं० 4 में तो वह खाना नं० 7, 11 के ग्रहों को देखता है।</u>

वृ० बैठा हो खाना नं० 10 में तो वह खाना नं० 2, 6 के ग्रहों को देखता है।

श० बैठा हो खाना नं० 1 में तो वह खाना नं० 3, 10 के ग्रहों को देखता है।

1. महादशा के प्रभाव के वक्त महादशा वाले ग्रह का कुण्डली के सिर्फ उस खाना नं० का जिसमें कि वह बैठा है और उन चीज़ों पर जो चीज़ें कि उस ग्रह (महादशा) में हो जाने वाले की उस बैठे हुए खाने की स बन्धित हो पर मंदा प्रभाव होता है।
2. महादशा में हो जाने वाले ग्रहों का दूसरे ग्रहों पर मित्रता या शत्रुता या दृष्टि के हिसाब से वही प्रभाव होगा जैसा कि उस समय होता था यदि वह महादशा में न होता।
3. महादशा के समय चाहे किसी भी ग्रह की हो अधिक से अधिक 1 से 40 तक अक्षर नीचे लिखे टेबल ए ढंग पर 12 खानों में लिख लें और पेशानी नं० 1 (अंक नं० 1) 13, 25, 37 खाना नं० 1 में लिखें फिर उसमें उस ग्रह का नाम लिख दें जो कि महादशा में हो गया हो मसलन वह शुक्र है तो शुक्र को खाना नं० 1 के ऊपर लिख दिया। बाकी ग्रहों को भी दिये हुए क्रम से लिख लें। जिस हिस्सा नं० के सामने भाग पर जो कोई भी ग्रह लिखा वह साल उस ग्रह की मार्फत उस महादशा के समय हालात की बदली पैदा करने वाला होगा। टेबल में खाना नं० 1 का अर्थ महादशा का पहला नं० 2, का दूसरा साल आदि लेंगे चाहे वह आयु के किसी भी साल में शुरू हुई हो।

टेबल 'ए'

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
शु०	नं०	सू० 12 के ग्रह	चं०	के०	मं०	बु०	श०	रा०	नं०	नं० 8 के ग्रह	वृ० 9 के ग्रह
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
37	38	39	40								

धोखे के ग्रह :-
(देखते जाओ कहीं धोखा ही न कर जाए)

1. दुगना अच्छा होगा या दुगना मंदा मगर चलेगा ज़रूर दुगनी र तार से।
2. धोखे का ग्रह अच्छा फल देगा या बुरा इस बात के फैसले के लिए (पक्का घर नं० 10) देखें।
3. औसत आयु के 120 साल को 12 X 10 = 120 खानों की टेबल में लिख कर पेशानी सामने का भाग खाली छोड़ दें और सूर्य टेवे के मुताबिक जिस खाने में बैठा हो उसी खाना नं० की पेशानी जगह पर सूर्य लिख दें सिवाय, खाना नं० 6 के सूर्य को खाना नं० 9 की लाईन की पेशानी पर, खाना नं० 9 के सूर्य को खाना नं० 6 की लाईन की पेशानी पर, तथा खाना नं० 7 के सूर्य को खाना नं० 5 की लाईन को पेशानी पर सिर्फ उस वक्त जब खाना नं० 1 खाली वरना खाना नं० 7 को 7 के ऊपर 1 बाकी ग्रह उसी तरतीब से लिखें जिस ढंग से वह अगली टेबल 'बी' में लिखें हैं।

जैसे किसी का सूर्य टेवे में खाना नं० 3 का है, तो 12 खानों की टेबल में सूर्य को खाना नं० 3 वाले खाने पर लिखकर खाना नं० 4 के ऊपर चन्द्र नं० 5 के ऊपर केतु आदि लिख दें जिस अंक नं० के खाने के ऊपर जो ग्रह आये वह ग्रह उस साल धोखे का ग्रह होगा जिसके भले-बुरे के लिए पूरा हाल खाना नं० 10 में देखें।

4. धोखे का ग्रह अपने धोखे से साल में जब खाना नं० 10 में ही आ जाये तो पूरा धोखा देगा यानि दुगना नेक या दुगना मंदा।

टेबल 'बी'

(सूर्य नं० 12 वाला टेवा)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
चं०	के०	मं०	बु०	श०	रा०	के०	चं० वृ०	वृ०	शु०	सू०	सू०
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	2.4
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96

टेबल 'सी'

धोखे के ग्रह की तलाश (सूर्य नं० वाली 11कुण्डली)

के०	मं०	बु०	श०	रा०	चं० वृ०	वृ०	वृ०	शु०	बु०	सू०	चं०
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96

स्मृति :- जन्म कुण्डली के ग्रहों का कोई याल न करेंगे सिर्फ सूर्य को हम जन्म कुण्डली से देख लेंगे और जन्म कुण्डली के बाकी किसी भी ग्रह का कोई याल न करेंगे।

पेशानी के ग्रहों का क्रम :- जन्म कुण्डली के खाना नं० 10 का ग्रह जब वर्षफल के अनुसार दुबारा खाना नं० 10 में आये तो वह धोखे (अच्छे या बुरा) का ग्रह होगा। अब अगर वह नीचे दी गई टेबल के अनुसार भी वह खाना नं० 10 में आया हुआ ग्रह धोखे का ग्रह साबित हो तो ऐसा ग्रह अवश्य ही धोखा देगा । अच्छा या बुरा देखने के लिए खाना नं० 10 देखें।

1	2	3	4	5	6	7	8 *	9 *	10	11	12 *
सू०	चं०	के०	मं०	बु०	शु०	रा०	खाना	खाना 8 के	वृ० 9 के ग्रह	शु०	खाना नं० 12 के ग्रह ग्रह

* अगर जन्म कुण्डली के हिसाब खाना नं० 8, 9, 12 खाली हो तो खाना नं० 8 के लिए मंगल तथा शनि, 9-12 के लिए वृ०।

नोट:- कोई ग्रह दो दफा लिखा जाने का वहम न करें इसके बाद दूसरी दो लगातार महादशा के वक्त दोनों का दर यानी साल बुरा प्रभाव न देगा उदाहरण के लिए शुक्र पहले का 20 वां साल मंदा असर न देगा जब शुक्र की लगातार 2 महादशाएँ शुरू हो जाएगी।

किस्मत का ग्रह :-

खाना नं० 2 का होगा, मगर किस्मत साथ लाने का घर बंद मुट्ठी के खाने की तरतीब से लिया हुआ घर होगा।

वृ०, श० एक साथ की कुण्डली :-

जब वृ० और श० टेवे में एक साथ हों तो उम्र के फैसले के लिए खाना नं० 11 के ग्रह करेंगे ऐसे टेवे में दृष्टि व उपाय वगैरा आम टेवे से फर्क पर होंगे यानि खास-खास खानों में विशेष-विशेष ग्रह की निश्चित दृष्टि होगी जिनकी रुह से फैसला होगा।

फरमान नं० 9:- सहायता के लिए उपाय

रुह बुत से झगड़े की तरह ग्रह को रुह और राशि को बुत माना है तो ग्रह के फल के उपाय की इस विद्या में जगह नहीं, राशि या ग्रह या राशि/ग्रह फल के शक का इलाज और ग्रहों से धोखे के धक्के से बच कर चलना मानव की ताकत में माना गया है। जिस तरह बुध का हीरा सब को काटता है पर खुद उसी बुध की नर्म टांका लगाने वाली नली से कट जाता है इसी तरह ही:-

1. पापी ग्रह :- राहु, केतु, शनि सभी पर अपना धक्का लगाते हैं पर उनको मारने के लिए उनका अपना ही पाप (राहु केतु) महाबली होंगे।

   राहु के मंदे असर को केतु का उपाय दूर करेगा।
   केतु के मंदे असर को राहु का उपाय दूर करेगा।
2. पाप की बेड़ी भर कर ही डूबेगी यानि पापी ग्रहों का उपाय, उनकी चीज़ों की पालना करना आशीष या उनसे माफी मांगना होगी।
3. शुक्र की मदद के लिए गाय को अपने भोजन का हिस्सा दें। धान्य से स बन्धित सब सुख मिलेंगे।
4. शनि की सहायता के लिए (काग रेखा— धन-दौलत की हानि) कौंवे को रोटी का टुकड़ा डाले (धन की हानि रूकेगी)।
5. केतु की मदद के लिए दरवेश कुत्ते को रोटी का टुकड़ा डाले (औलाद होगी)।
6. हर ग्रह की मसनुई हालत में दो ग्रह होते है जब कोई ग्रह मंदा हो जाए तो उसकी मसनुई हालत में दिये हुए दो ग्रहों में से उस एक ग्रह को हटाना चाहिए, जिसके हटने से नतीजे नेक हो जाये। जिसके लिए कोई ऐसा ग्रह कायम करें जो बुरे फल के हिस्से को देने वाले ग्रह को ही गुम या नेक कर दे। उदाहरणत: शनि मंदा हो जाये तो उसकी मसनुई हालत के ग्रह शुक्र, वृहस्पति में से वृहस्पति को हटाने के लिए यदि बुध कायम करे तो शुक्र बाकी रह जाता है। अब शुक्र के साथ बुध मिलने पर शनि नेक हो जाता है।
7. उपायों के इलावा हर एक पक्के ग्रह का उपाय तो लाल किताब के अनुसार लेंगे। हर एक ग्रह की मसनुई हालत में दो ग्रह एक साथ माने गए हैं। पक्के ग्रह का जिस चीज़ का असर या जो असर मंदा हो उस असर के देने वाले ग्रह को उसकी मसनुई जड़ भाग से हटाने की कोशिश करें। उदाहरणत: शुक्र जब खराब करे या खराब हो तो शुक्र के मसनुई भाग में से राहु केतु में से राहु को हटा दें तो बाकी केतु बचा यानि शुक्र के नेक करने को राहु नेक कर लेना मददगार होगा।
8. बुध— वृहस्पति दोनों को ही कायम रख कर चलाने के लिए बुध की हरे रंग की चीज़ें मदद करेंगी, जैसे सोने के ज़ेवर को हरे रंग की तह में रखने की तरह। बुध, शुक्र, शनि की एक ही चीज़ गाय ग्रास देना लाभदायक होगा।
   गाय ग्रास :- अपनी खुराक में से तीन टुकड़े लें, एक गाय को, एक कुत्ते को व एक कौंवे को देना होता है।
9. मंदे फल वाले ग्रह के लिए मंदा करने वाली चीज़ को दूर करें, जैसे मंगल बद के असर से मृगछाला बचायेगी।
   मंगल बद का इलाज :- मंगल बुध = मंगल बद, शनि के साँप की ज़हर और मंगल, बुध, शनि एक साथ हो तो मृगछाला रक्षा करेगी, जिस पर शनि का साँप न चढ़ेगा। इसी कारण से उसे साधु ने पसन्द की है। शुतर (ऊँट) बेमुहार के कहने के मुताबिक उसकी दिल की बात उसके नाखून से जाहिर कर देंगे क्योंकि उसका दिल या चन्द्र नहीं होता या ऊँट को उसके पांव के नाखून केतु की न सज़ा दिलवायेंगे या केतु के बुरे असर को बर्बाद करने के इलाज से काबू होगा, या चन्द्र की उपासना भी मदद करेगी। चन्द्र जिस घर का कुण्डली में हो वही इलाज करे। चन्द्र उम्र का मालिक है, हर एक पर मेहरबान होगा। मौत का फंदा मंगल बद हर एक के लिए फिरता है। इसलिए कहा है कि जहाँ चन्द्र होगा वहाँ मंगल बद न होगा। यानि जिस जगह आयु होगी, मौत कहाँ होगी। अत: मंगल बद का इलाज चन्द्र की पूजना या सहायता ढूंढे।
10. तन्दूर में मिठ्ठी रोटी बनाकर बांटने से मंगल बद का असर दूर हो जाता है।

11. राहु का मंदा असर दूर करने के लिए जौ (अनाज) को किसी बंद जगह में बोझ के नीचे दबाए या दूध से धोकर चलते पानी में बहा दें। अगर तपेदिक का ल बा बुखार तंग करें तो जौ को गाय के पेशाब में धोकर लाल सुर्ख कपड़े में बंद करें और गाय के पेशाब से ही दांत साफ करें।
12. जो ग्रह उच्च हो उससे स बन्धित चीज़ की मदद से मंदे ग्रह का असर दूर हो जाता है।
13. अपनी निश्चित जगह की बजाय जब काग़ रेखा या मच्छ रेखा और जगह हो तो जिस ग्रह की राशि या पक्के घर (पर्वत के हिसाब से) में हो तो उस घर की पूजना से नेक फल हो। उदाहरणत: मच्छ रेखा बुध की सिर रेखा पर स्थित है तो शनि व बुध की पालना (काले पक्षी की पालना करना) मुबारक हो, अगर शुक्र पर हो तो काली गाय पालना मुबारक हो।
14. धोखे का ग्रह जो छुपा छुपाया होता है उसे भी देख लेना ज़रूरी होता है, अगर लड़का-लड़की दोनों ही बाप के लिए मंदे हो जाये तो सूर्य (लड़का) बुध (लड़की) या लड़की के गले में तांवे का टुकड़ा मुबारक होगा जो बुध को दबायेगा।
15. पापी ग्रहों के साथ जब वह एक ही बजाय कोई दो इकट्ठे हो तो मंगल को कायम रखना उत्तम रहेगा, बशर्ते जब कि कुण्डली वाले का अपनी कुण्डली में मंगल राशिफल का हो। यदि मंगल खाना नं० 1, 3, 8 में हो तो मंगल का उपाय न करें, बुध काम देगा।
16. इसी प्रकार ही स्त्री ग्रहों (चन्द्र, शुक्र) में बुध की ताकत मदद देगी, जबकि बुध खाना नं० 3, 6, 7 या 9 का न हो, ऐसी हालत में मंगल मदद देगा। संक्षेप में उपाय के समय देख लें जिस ग्रह की मदद लेनी हो वह खुद तो ग्रह फल का ही तो नहीं है।
17. खाना नं० 9 के ग्रहों का उपाय, रंग की मदद से मकान के फर्श से होगा। यानि जो ग्रह मंदा हो और खाना नं० 9 में शुक्र या बुध या मंगल बद आदि हो तो उनके मित्र ग्रह की पालना करें या कम से कम उस नेक ग्रह के रंग की चीज़ें फर्श पर न लगायें जो कि खाना नं० 9 का बनता है।
18. जब आम उपाय काम न दें तो घंटों में असर देने वाले यह उपाय काम देगें।

नाम ग्रह	उपाय
वृहस्पति	केसर नाभि या ज़ुबान पर लगायें या खायें केसर नाभि या ज़ुबान पर लगायें या खायें।
सूर्य	पानी में गुड़ बहायें।
चन्द्र	दूध या पानी का बर्तन सिरहाने रखकर कीकर को डालें।
शनि	तेल का छाया पात्र करें।
शुक्र	गोदान या चरी ज्वार दान करें।
मंगल नेक	मिठाई, मीठा भोजन दान करें या बताशे दरिया में डाले।
मंगल बद	रेवड़िया पानी में बहायें।
बुध	तांबे के टुकड़े में सुराख करके चलते पानी में बहा दें।
राहु	मूली दान करें या कोयलें दरिया में डाले।
केतु	कुत्ते को रोटियां डाले।

19. हर उपाय की मियाद 40 या अधिक से अधिक 43 दिन है। कुल की बेहतरी के लिए उपाय की अवधि 40-43 ह तेवार करना है, यानि हर आठवें दिन, जो कि ह ता है, करना होगा। उपाय बीच में हटना नहीं चाहिए, यानि किसी कारण तोड़ना पड़ जाये तो चावल दूध में धोकर पास रख लें। ऐसा करने से पहले किये का फल निष्फल नहीं होगा। (उपाय के समय चाहे आखिर दिन 39 वें या 40 वें दिन ही भूल जायें या बंद कर बैठे तो सब किया कराया निष्फल हो जायेगा। नये सिरे से पूरी मियाद तक पूरी करें)।

जन्म दिन और जन्म दिन के हिसाब से सहायक उपाय :-

उदाहरण :- जन्म सोमवार, पक्की शाम को तो दिन का ग्रह चन्द्र और समय का ग्रह राहु है। जन्म समय के ग्रह को जन्म दिन के मुतल्लका पक्के ग्रह के घर लिखेंगे। इस तरह पर राहु जो जन्म समय का ग्रह है चन्द्र जो दिन का ग्रह है, के घर में होगा, खाना नं० 4 राशिफल उपाय के योग्य। जन्म समय का ग्रह (ग्रह फल, अटल, बुरा या भला) जिसका कोई उपाय नहीं होता। इसलिए जातक के लिए जब कभी और जो भी खाना नं० 4 का असर होगा, राशिफल होगा जिसका चन्द्र के

उपाय से नेक असर होगा या राहु इस आदमी के खाना नं० 4 की चीज़ों पर बुरा प्रभाव करने के समय राशिफल का होगा। चाहे वह ग्रह (जन्म समय का) राशिफल का न भी हो लेकिन जन्म समय का ग्रह (जन्म के हिसाब से जो भी आए) ऊपर के उदाहरण के अनुसार हर ग्रह के खास-खास घर राशिफल वालों में आ जाये, तो दिया हुआ फल मददगार होगा। जिसके लिए बदला जाने वाला या उपाय के योग्य जन्म दिन का ग्रह लेंगे, जन्म समय का नहीं।

उदाहरण :- जन्म दिन :- मंगलवार।

जन्म समय:- प्रात: के बाद दिन का पहला हिस्सा (वृ० का समय)।

अब जन्म समय वृ० का ग्रह मंगल के पक्के घर खाना नं० 3 में होगा। अनुमानित— अब वृ० का ग्रह खाना नं० 3 में होता हुआ बीमारी ही बीमारी खड़ा करता जाये तो मंगल का ग्रह राशिफल का होगा जो जन्म दिन का ग्रह गिना था मगर मंगल सिर्फ खाना नं० 4 और 6 में राशिफल का लिखा है मगर फिर भी ऐसी हालत में मंगल का ही उपाय मदद देगा और वृ० का उपाय मदद नहीं देगा।

ग्रह फल का उपाय नहीं मानते, राशिफल का उपाय हर समय उपाय योग्य है। उपाय सूर्य उदय होने से अस्त तक ही करें, रात को शनि का राज्य होता है उपाय ठीक नहीं होता, कई बार खतरनाक भी हो सकता है। उपाय जब चाहे शुरू करें, 40-43 दिन तक करना है। अपने खून का कोई भी नाती उपाय कर सकता है, शुरू किसी भी दिन वार से किया जा सकता है। मरने से पहले आशीर्वाद (अन्तिम) किसी ग्रह की चीज़ें पीछे रह जाने वाले का शुभ लाभ करेगा।

नष्ट हो चुके ग्रह या पितृ ऋण, की हालत में या औलाद आदि के लिए नीचे के उपाय कारगर होंगे।

ग्रह	छुपी शक्ति	किस्म	रंग	उपाय औलाद हेतु	उपाय की चीज़ें आय के लिए
वृ०	ब्रह्मा जी	नर	पीला	हरि पूजन	दाल चना/सोना
सू०	विष्णु जी	नर	गंदमी	हरि पूजन	कनक/सुर्ख ताँबा
चं०	शिव भोले जी	स्त्री	दूध का	महादेव पूजन	चावल/दूध/चाँदी
शु०	लक्ष्मी जी	स्त्री	दही का	लोगों की पालना	घी/दही/काफूर/मोती
मं०	हनुमान जी	नर	लाल	गायत्री पाठ	दाल मसूर/लाल मूंगी
बु०	दुर्गा जी	नपुंसक	हरा	दुर्गा पाठ	साबुत मूंगी/जमुर्द
श०	भैरव जी	नपुंसक	काला	राजा की उपासना	साबुत माह/लोहा
राहु	सरस्वती जी	नपुंसक	नीला	कन्यादान	सरसों/नीलम
केतु	गणेश	नपुंसक	चितकबरा	कपिला गायदान	तिल

जो ग्रह नीच फल दें उसका दान ऊपर लिखे अनुसार करें।

विवाह के समय के उपाय :-

विवाह के समय (हिन्दू धर्म के अनुसार) मंदे ग्रहों का उपाय सब से कारगर रहेगा। आदमी के चाहे स्त्री के, परन्तु मर्द के मंदे ग्रह के उपायों को अवश्य कर लेना चाहिए, क्योंकि शादी होते ही मर्द के ग्रह औरत पर हावी हो जाते हैं।

जन्म कुण्डली के हिसाब से उपाय :-

1. वृ० मंदा हो तो लड़की का संकल्प करने की ठीक उसी समय बाद में सोने के दो टुकड़े बराबर वज़न के एक जैसे ठीक उसी तरह दान किये जायें जैसे कि लड़की का, फिर उनमें से एक टुकड़ा पानी में बहा दिया जाये और दूसरा लड़की सारी आयु अपने पास रखे, किसी कीमत पर भी उसे बेच न खाये। वृ० के मंदे असर से बचाव होता रहेगा। ऐसा टुकड़ा चोर चुरा नहीं सकते, यदि किसी कारण सोना गुम हो जाये तो और सोने का टुकड़ा बना लें। दोबारा नदी में बहाने की ज़रूरत नहीं। यदि सोना न मिले तो केसर की दो पुड़ियां या हल्दी की दो गठियां ऊपर के ढंग से कायम करें। परन्तु सोना मिल जाये तो बहुत ठीक है।
2. सूर्य मंदा हो तो सोने की जगह ताँबा ऊपर की तरह करें।
3. चन्द्र मंदा हो तो सोने की जगह सुच्चा मोती ऊपर की तरह करें। यदि सुच्चा मोती न मिले तो चाँदी, चावल और मनुष्य के भार के बराबर दरिया, नदी, नाले का पानी शादी के समय घर में कायम रखें।

4. शुक्र मंदा हो तो सफेद मोती ऊपर की तरह कायम रखें।
5. मंगल मंदा हो तो लाल पत्थर लें, जो रंग में लाल मगर चमकीला न हो।
6. बुध मंदा हो तो हीरा लें, न मिले सीप लेंगे।
7. शनि मंदा हो तो लोहा— फौलाद लेंगे, न मिले तो काला नमक या काल सुरमा लेंगे।
8. राहु मंदा हो तो चन्द्र वाला उपाय करेंगे। यहाँ ध्यान रहे कि मंदे राहु के समय कभी नीलम की अंगूठी नहीं देनी वरना दुल्हा-दुल्हन के जबरदस्त हाथी पुरानी खंदकों में घिर जाते हैं।
9. केतु मंदा हो तो दो रंगा पत्थर कायम करें (वृ० की तरह उपाय करें)।
10. शुक्र नं० 6 के समय लड़की के माता-पिता की ओर से शादी के समय लड़की के लिए उसके सिर पर कायम रखने के लिए शुद्ध सोना दान की तरह लड़की को दे दें जिसे वह कभी-कभी प्रयोग करें। शुक्र खाना नं० 6 की मंदी हालत को ठीक रखेगा। थोड़ा सा शुद्ध सोना लड़की की शादी में देना ठीक है जब तक लड़की स्वयं उसे न बेचे, वृ० का असर अच्छा ही होता रहेगा।
11. पुरुष या स्त्री के टेवे में जब नीचे की ग्रहचाल हो यानि शुक्र के साथ या शुक्र के खाना नं० 2, 7 में उसके शत्रु सूर्य, राहु, चन्द्र आदि जैसे :- राहु-शुक्र, सूर्य-शुक्र, चन्द्र-शुक्र चाहे किसी भी घर में हो या शुक्र अकेला या किसी के साथ में खाना नं० 4 में हो या राहु अकेला या किसी के साथ खाना नं० 1, 7, 5 में या शनि खाना नं० 5, 9 में हो या केतु खाना नं० 8 में अकेला हो, खाना नं० 5 में केतु या केतु के साथ उसके शत्रु केतु-मंगल, चन्द्र-केतु या बुध-केतु चाहे किसी भी घर में हो तो लड़की के माता-पिता की ओर से खालिस चाँदी दें, या मंदे केतु का इलाज जैसे धर्म स्थान पर दो रंगों का क बल देना या केतु जब पितृ ऋण से मंदा हो तो 100 कुत्तों की बारात को खाना देना, यानि खुराक साथ लेकर कुत्तों को बांटते जायें और सूर्य अस्त होने से पहले 100 की गणना पूरी करें।

पहली स्त्री से पहला ही पुरुष दो बार कुछ समय देकर विवाह कर लें तो शुक्र खाना नं० 4 की दो स्त्रियाँ जीवित रहने की शर्त दूर होगी।

बुध खाना नं० 12 शादी के समय लोहे का छल्ला जिसमें जोड़ न हो जातक का हाथ लगवा कर नदी में बहा दें और वैसा ही दूसरा छल्ला जातक अपने हाथ में डाले रखें तो बुध खाना नं० 12 सदा सहायक होगा।

12. नीचे लिखे ग्रहों का मंदा असर नेक करने के लिए किस का उपाय ठीक है।

नाम ग्रह	*किस का उपाय मदद देगा*
राहु	केतु का उपाय सहायक, केतु नब्ज प्रायः खाना नं० 10 में होगी।
केतु	राहु का उपाय सहायक। (मंदे केतु का उपाय खाना नं०10 के ग्रहों की मदद से होगा, पापी ग्रहों का उपाय उन ग्रहों की चीज़ों की पालना करने से होगा)।
शनि	धन की मंदी हालत में कौंवे को रोटी डालें, औलाद की मंदी हालत में कुत्ते को रोटी डालें।
शुक्र	गाय को अपने भोजन का ाग दें।
मं० बद	मृगछाला मदद देगी। मंगल के लिए तन्दूर में मीठी रोटी पका कर कुत्तों को डालें या भिखारियों में बांटे।
मं० बद	दूध को जौ में डूबो कर चलते पानी में बहा दें। बुखार के लिए गाय पेशाब में जौ धो कर लाल रंग के कपड़े में बांधे। गाय के पेशाब से दांत साफ करें, कड़े से कड़ा बुखार उतर जायेगा। रेवड़ियां पानी में बहायें, केसर नाभि पर लगायें, गुड़ पानी में बहायें।

स्त्री-पुरुष की कुण्डली का फर्क

1. पुरुष की जन्म कुण्डली खुद पुरुष के लिए पुरुष ग्रहफल का।	पुरुष की चन्द्र कुण्डली खुद पुरुष के लिए पुरुष पर राशिफल को चमकार, यानि महादशा की हालत के उल्ट नेक और अचानक चमकारा।
2. पुरुष की चन्द्र कुण्डली उसकी स्त्री पर ग्रहफल का— हुओं में भाग्य का नेक और एक दम असर देगी।	उस पर पुरुष की जन्म कुण्डली उसकी स्त्री पर राशिफल पर नेक प्रभाव यानि महादशा के अर्से में खाली साल रखे का असर देगी। मर्द की जन्म कुण्डली उसकी स्त्री पर साधारण असर देग
3. स्त्री की जन्म कुण्डली स्त्री के लिए स्त्री पर ग्रहफल का हालत की राशिफल का असर देगी।	स्त्री की जन्म कुण्डली उसके पुरुष के लिए आम असर देगी।
4. स्त्री की चन्द्र कुण्डली उसके पुरुष के लिए नेक नज़ारा। राशिफल।	स्त्री की चन्द्र कुण्डली स्त्री के लिए स्त्री पर महादशा के खाली सालों में भाग्य की अचानक व नेक चमक होगी।
5. पुरुष के लिए दायाँ हाथ खुद के लिये ग्रहफल का।	पुरुष का बायाँ हाथ खुद अपने लिए राशिफल।
6. स्त्री का बायाँ हाथ उस स्त्री के लिए ग्रहफल का।	स्त्री का दायाँ हाथ स्त्री के अपने लिए राशिफल का।
7. पुरुष का बायाँ हाथ उसकी स्त्री के लिए ग्रहफल का नेक देने वाला	पुरुष का दायाँ हाथ उसकी स्त्री के लिए राशिफल असर का।
8. स्त्री का बायाँ हाथ उसके पुरुष के लिए ग्रहफल का नेक	स्त्री का दायाँ हाथ उसके पुरुष के लिए राशिफल असर देने वाला।
9. बच्चा दोनों के लिए राशिफल का देने वाला होता है।	

हर ग्रह अपने बैठा होने वाले घर का फल अच्छा या बुरा न देगा जब तक उसकी ओर (दिशा) या स्थान में उस ग्रह से स बन्धित वस्तु न हो।

यदि किसी कारण (पितृ ऋण या महादशा आदि) कोई ग्रह सो जाये या नष्ट हो जाये तो सबसे पहले खाली खानों के मालिक ग्रह का उपाय करें, जबकि वह ऐसे ग्रह के बराबर का या मित्र हो उसके बाद महादशा के समय में काम देने वाले ग्रह लें। फिर शत्रु ग्रहों की शत्रुता हटा दें या राशिफल के समय राशिफल का लाभ लें। यदि यह भी काम न दे तो सूर्य को कायम करें। यदि यह भी काम न दें तो पापी ग्रहों के उपाय करें और सबसे अंत में बुध का उपाय करें।

ग्रह राशि का निशान हाथ पर :-

अगर किसी राशि का निशान अपने स्थित जगह की बजाय किसी दूसरी जगह हथेली पर अंगुली पर पाया जाये तो उस निशान का स बन्धित राशि नं० कुण्डली के उस पक्के घर में लिख दें जिस नं० पर कि वह निशान हथेली या कुण्डली पर पाया जाये। जैसे मसलन मिथुन राशि का निशान II जो राशियों की गिनती में नं० 3 पर है किसी के हाथ के खाना नं० 12 में पाया गया तो कुण्डली के पक्का घर नं० 12 में अंक तीन लिख दिया और गिनती के क्रम से कुण्डली के 12 ही खाने पूरे कर दिये। इस तरह पर जो अंक लग्न पर आये वह उस व्यक्ति की जन्म राशि होगी जिसका स्वामी ग्रह (घर के स्वामी के बतौर) कुण्डली वाले के लिए सदा राशिफल का होगा।

इसी तरह राशि के निशान की बजाय अगर ग्रह का निशान पाया जाये तो जिस खाना नं० में वह निशान हो, कुण्डली के पक्के घरों के हिसाब से उसी नं० पर उस ग्रह को लिख दें। जैसे चन्द्र का निशान हाथ पर खाना नं० 5 पर है तो चन्द्र को खाना नं० 5 पर लिखेंगे। इस तरह चन्द्र जातक के लिए खाना नं० 5 के स बन्धित चीज़ों, काम, स बन्धियों पर सदा ग्रहफल का होगा।

फरमान नं० 10 :- ग्रह का असर

हर ग्रह के लिए उसका घर स्वामित्व के तौर पर, पक्का घर, उच्च-नीच हालत आदि सदा के लिए निश्चित है, चाहे वह किसी भी और ग्रह के घर मेहमान बन चला जाये। ग्रह यदि लै प माने तो उसकी मियाद खत्म होने पर लै प बुझ गया मानेंगे जिसके लिए टेबल देखें। हर ग्रह अपनी निश्चित राशि में नेक फल देगा बेशक वह राशि किसी दूसरे ग्रह का पक्का घर हो चुकी होगी।

राशि नं०	किस ग्रह की राशि है	किस ग्रह का पक्का घर है	इस राशि नं० में किस ग्रह का नेक असर देगी
2	शुक्र	वृहस्पति	शुक्र का नेक असर होगा।
3	बुध	मंगल	बुध का असर नेक जब मंगल नेक हो।
5	सूर्य	वृ०, सू० एक साथ	सूर्य का नेक असर होगा।
6	बुध, केतु	केतु	बुध का उत्तम, केतु का खुद केतु की चीज़ों पर मंदा, पर दूसरों पर अच्छा, यदि दोनों साथ हों तो बुध का और बुध की चीज़ों का अच्छा मगर केतु और उसकी चीज़ों का बुरा।
7	शुक्र	शुक्र, बुध	शुक्र का नेक, बुध बाकियों को भी मदद दें।
8	मंगल	मं०, श०, चं०,	(आयु) यदि तीनों जुदा-जुदा हों तो अच्छा वरना मंदा।
11	शनि	वृ०	(प्राय: मंदा) शनि का नेक, बाकी ग्रह बेरी, (शनि का वृक्ष) के गला घोटने वाले पीर जाहिदा उ दा, मगर झाग के बताशे

ग्रह बैठा होने वाले घरों में ग्रह की चीज़ें कायम होने से उस ग्रह का असर बढ़ता है। जैसे केतु नं० 9 हो तो जद्दी मकान में कुत्ता या दोहता आदि कायम करें।

1. जन्म कुण्डली से ग्रह जिस हैसियत से बैठा हो उसका (अच्छा-बुरा) असर केवल इसी साल देगा जब वह वर्षफल में आ बैठा होने से हैसियत के लिए मुकर्रर की हुई राशि या पक्के घर में आ जाये। उदाहरण के लिए वृ० उच्च असर तभी होगा, जब वह वर्षफल में खाना नं० 4, 2 आदि में आयेगा। जन्म से उच्च है मगर अपना उच्च असर अब केवल 2, 4 खानों पर ही देगा। इसी तरह सभी ग्रहों का असर देखें।
2. इसी प्रकार धोखे के ग्रह जिस साल खाना नं० 10 (धोखे का घर) में आये धोखा दे, वह भी मंदा धोखा। धोखे का ग्रह जब खाना नं० 2 भाग्य के ग्रह का घर, खाना नं० 11 भाग्य को जगाने वाले ग्रह के घर में आये तो लाभदायक धोखा दे।
3. मंदा ग्रह खाना नं० 8 में आने पर ही मंदा होगा। इसी तरह ही वर्षफल में आने पर देखें।

नेक ग्रह का मंदा असर :-

हर ग्रह अपना खानावार हाल में दिया असर करता है, पर यदि अपने जाती असर से कोई नया काम करें, जो कि इस उस ग्रह के उल्ट हो तो तो प्रभाव बदल जायेगा। जैसे राहु नं० 4 में पाप नहीं करता पर यदि वर्षफल में राहु नं० 4 हो राहु के काम करें तो झगड़ा हो जाता है।

राहु के काम :- मकान की सिर्फ छत बदलवाना, कोयले की बोरियां जमा करना, टट्टी की नई जगह बनवाना, और काने लोगों को भागीदार बनाना।

इसी तरह वृ० नं० 4 वाला (जन्म या वर्ष कुण्डली में) ***यदि पीपल कटवायें या साधु को सताए तो तबाह हो जायें, सोना मिट्टी हो जाये।***

केतु नं० 12 वाला यदि कुत्तों को मरवाये (कुत्ते पालने की बजाय) तो केतु नं० 12 का असर मंदा हो जाए।

दृष्टि और टकराव में भी यही असूल है। हर ग्रह की अपनी जाहिर करने की निशानी के लिए ग्रह की स बन्धित खानावार चीज़ें होंगी।

नर ग्रह सू०, वृ०, मं० दिन को असर करेंगे।

स्त्री ग्रह चं०, शु० रात को असर करेंगे।

नपुंसक ग्रह बु०, श०, रा०, के० प्रात: और सायं संध्या के समय असर करेंगे।

वर्षफल में सूर्य के हिसाब से मासिक चक्र पर जब ग्रह वर्षफल में आए तो अपना असर करेगा जो कि उस ग्रह का उस घर के लिए है, अच्छा या बुरा, 12 घण्टे का दिन, 12 घण्टे की रात, 12 मास का साल, 12 राशि, 12 साल तक बच्चा मासूम, 12 साल के बाद अच्छे दिनों की आशा, सभी 35 के चक्र में शामिल है और वृ० जमाने की हवा की तलाश में है।

हर ग्रह का रंग अपना-अपना है जब कभी भी किसी ग्रह का समय होगा वह ग्रह उस रंग की चीज़ों पर उसी रंग की चीज़ों से अपना असर दिखायेगा (दुनियां की हर चीज़ों पर) वर्षफल के अनुसार, कुण्डली के लग्न या खाना नं० 1 में आया हुआ ग्रह अपने राज्य के समय सबसे पहले अपना असर जिस जगह वह जन्म कुण्डली में है, करेगा, उसके बाद अपने शत्रु ग्रहों पर चाहे वह शत्रु ग्रह उस घर में ही हो यहाँ पर वह खुद बैठा था, फिर मित्रों पर, फिर बराबर वालों पर।

यदि किसी घर में एक से अधिक ग्रह हों, तो खाना नं० 1 का ग्रह हर एक के ऊपर की तरतीब से बारी-बारी शत्रुओं से टकरायेगा और मित्रों से मित्रता करेगा। यदि एक ही घर में उस ग्रह के कई मित्र या शत्रु हो तो ग्रहचाल की तरतीब से (जो कि लाल किताब की है जैसे वृ०, सू०, चं० आदि) करेगा।

यदि कुण्डली के खानों के मित्र ग्रह जुदा, शत्रु ग्रह जुदा खानों में हों, खानों के क्रम से यानि खाना नं० 1, 2, 3, 4 बर्ताब करेगा।

क्याफा :- खूब ज़ोर से मिलाने पर देखा, जिस तरफ से अधिक सुर्ख हो उसी तरफ से उसकी रेखा या शाखा के शुरू होने की तरफ है।

खाना नं० 11 के ग्रह वर्षफल के अनुसार खाना नं० 1 में आने पर चाहे उ दा पर होंगे अपनी आयु पश्चात् नकारा हो जाते हैं (जैसे सूर्य 22 वर्ष के बाद आदि) विशेषकर जब वह जन्म कुण्डली में सोये हुए हों।

खाना नं० 2 के ग्रह सदा उच्च फल देंगे जब तक खाना नं० 8 खाली रहेगा। खाना नं० 2 के ग्रह टेवे वाले के बुढ़ापे में अपना असर उच्च रखते हैं। दाएँ हाथ की हथेली में दाएँ भाग में जिस ग्रह का चिन्ह हों वह ग्रह हमेशा ही नेक फल देगा।

मंदे ग्रह के बैठा होने वाले घर से स बन्धित वस्तु का हाल मंदा न होगा, बल्कि सहायक होगा। जैसे सूर्य नं० 6 का राज दरबार केतु (लड़का) पक्का घर नं० 6 के जन्म दिन से अच्छा हो जायेगा।

हर ग्रह खानावार वस्तुओं की सूची में जो चीज़ें दी है जब वह पैदा होगी तो उस खाना नं० में यह असर शुरू होगा जैसे शुक्र नं० 1, 9 में तो सफेद गाय घर आने या शादी 25 वें वर्ष होने पर मंदा फल शुरू हो।

हर ग्रह जिस जगह वह मलकीयत घर का निश्चित है बैठा होने के समय अपना बैठा होने वाले घर से स बन्धित वस्तु पर नेक असर देगा जैसे सूर्य नं० 5 अपना राज दरबार औलाद सब ठीक और उच्च प्रभाव देने वाले होंगे।

उच्च ग्रह बर्बाद होकर भी बुरा असर न देगा।

हर ग्रह अपनी राशि में सदा नेक फल देगा। जब कोई ग्रह किसी ऐसे घर में बैठा हो जहाँ कि वह उच्च-नीच फल का माना गया है तो वह उच्च ग्रह अपने साथ बैठे हुए शत्रु ग्रह या किसी ऐसे घर में बैठे हुए शत्रु ग्रहों पर जहाँ कि वह उच्च ग्रह दृष्टि या किसी तरह से भी अपना असर भेज सके, कभी बुरा असर न करेगा। भला चाहे करे या न करे।

ग्रह	किस खाना में हो	उसके शत्रु	किस घरों में हो
वृहस्पति	4	शुक्र, बुध	10
सूर्य [1]	1	शुक्र, राहु, केतु, शनि	7
चन्द्र	2	बुध, शु क्र, पापी	6, 12
शुक्र	12	सूर्य, चन्द्र, राहु	2
मंगल	10	बुध, केतु	2
बुध	6	चन्द्र	12
शनि	7	चन्द्र, सूर्य, मंगल	7
राहु	3, 6	शुक्र, मंगल, सूर्य	12
केतु	9, 12	चन्द्र, मंगल	2

1. सूर्य स्त्री की सेहत मंदी होगी, तपेदिक तक हो सकती है और कोई मंदा असर न होगा।

जिस ग्रहों ने अपने पहले 35 साल चक्र में बुरा असर दिया हो, वह अपनी अगले चक्र में बुरा असर न करेंगे चाहे अच्छा न करें। इसी तरह 100 साल चक्र के बाद खानदानी हालत ज़रूर बदलेगी चाहे अच्छी या बुरी। अगर टेवे के अनुसार जन्म कुण्डली में सभी ग्रह मंदे हों तो वह अकेला ही लाखों का मुकाबला कर सकता होगा, उत्तम फल देगा।

मसनुई ग्रहों का असर विशेष बातों का होगा जैसे :-

ग्रह पक्का	मसनुई ग्रह	असर
वृहस्पति	सूर्य, शुक्र (खाली हवाई)	औलाद की पैदाईश का मालिक
सूर्य	बुध, शुक्र	सेहत का स्वामी
चन्द्र	सूर्य, वृहस्पति	माता-पिता के खून का है वीर्य के कतरे का स बन्ध
शुक्र	राहु केतु	सांसारिक सुख
मंगल	सूर्य, बुध (मंगल नेक) सूर्य शनि (मंगल बद)	संतान जीवित रखने का स्वामी
बुध शनि	वृहस्पति, राहु वृहस्पति, शुक्र (केतु स्वभाव) मंगल, बुध (राहु स्वभाव)	मान सेहत बीमारी
राहु	मंगल, शनि (उच्च) सूर्य, शनि (नीच)	झगड़ा
केतु	शुक्र, शनि (उच्च) चन्द्र, शनि (नीच)	ऐश का स्वामी

नीचे दिए हुए एक साथ ग्रहों से उनके सामने दिये हुए खाना नं० का असर पैदा होगा अर्थात् उसके सामने दिए हुए खाना नं० का असर उनसे ज़रूर बहाल करेगा चाहे वे किसी भी घर में इकट्ठे क्यों न हो। यदि सूर्य के लिए खाना नं० 1 में जो असर लिखा है, जो बिना ग्रह के खाना नं० 1 की तासीर बताई है वह सूर्य, मंगल एक साथ के असर में अवश्य घरेलू खून की तरह लेंगे। चाहे वे दोनों ग्रह किसी भी घर में किसी भी तरह कितने ही मंदे क्यों न हो।

मसनुई हालत में ग्रह की हालत में उसके हर दो ग्रह का असर जुदा-जुदा कर लेना संभव होगा या दोनों का असर एक साथ कर लेना हो सकेगा। अर्थात् ऐसा असर राशिफल का होगा।

ग्रह एक साथ	खाना नं० जिसका असर मंदा होगा मगर जीवित रहेगा
सूर्य, मंगल	1
शुक्र, वृहस्पति	2
बुध, मंगल	3
मंगल, शुक्र	4
सूर्य, वृहस्पति	5
बुध, केतु	6
शुक्र, बुध	7
मंगल, शनि, चन्द्र	8
बुध, शनि दोनों का आपसी स्वभाव	9
शनि	10
वृहस्पति, शनि	11
वृहस्पति, राहु	12

क्याफा :- किस्मत की हेराफेरी पक्का ग्रह बड़ी रेखा शायद ही कभी बदला करती है। मसनुई ग्रह यानि शाखा रेखाओं को बदलना मुमकिन है वह भी उम्र के हर सातवें साल मगर 21 साल की उम्र की रेखा में कोई तबदीली नहीं मानते। यह बालिग होने

का समय आयु हर सातवें साल तबदीली होनी मानी है। अल्पायु वाले की आयु के हर आठवें साल (8, 16, 24) जीवन खतरे में गिनते हैं जिसके बारे में अल्पायु वाले अध्याय में लिखा है।

ग्रहचाल में चीज़ों पर रंग का असर :-

सब चीज़ें किसी न किसी ग्रह से स बन्धित है परन्तु कुछ नहीं भी है। जैसे दो रंगों का कुत्ता यदि काला-सफेद है तो केतु, परन्तु यदि वह दो रंगों का मगर लाल रंग साथ में, चाहे वो केतु है पर होने पर भी बुध का असर हो जायेगा। इसी तरह भैंस काली होने पर शनि की चीज़ है परन्तु भूरी हो तो सूर्य की है। इसी तरह यदि काली भैंस का माथा सफेद हो तो शनि के साथ चन्द्र का भी असर लेंगे। घोड़ा चन्द्र की चीज़ है यदि पीले रंग का हो तो चन्द्र को वृहस्पति की मदद और साथ होगा। यदि काला घोड़ा हो तो चन्द्र के असर को दबायेगा और शनि का असर प्रबल होगा। हर मनुष्य के टेवे में जो भी ग्रह जिस असर का हो उसे उस ग्रह से स बन्धित उस रंग का मिलना वही असर देगा जैसा कि उस चीज़ का और रंग का ग्रह उस मनुष्य को अपने टेवे के अनुसार अच्छा या बुरा साबित हो रहा हो।

क्याफा :- मर्द सीधे खत या रेखा, दो शाखी से मुराद औरत होगी।

नर ग्रह नरों पर असर देंगे और स्त्री ग्रह स्त्रियों पर। असर करेंगे।

नाम ग्रह	किन पर असर देंगे
वृहस्पति	रुह के स बन्धियों पर
सूर्य	जिस्म के स बन्धियों पर
मंगल	खून के ताल्लुकदारों से मसनुई ग्रह पशुओं और बेजानों पर
चन्द्र	माता की हैसियत वालियों पर
शुक्र	औरत के दर्जे वालियों पर
शनि	धातु जमादात पर
बुध	नवादात (वनस्पति पौधे)
राहु	हरकत दिमाग पर
केतु	हरकात पांव पर

क्याफा :- हस्त रेखा में रेखा 21 साल पर बालिग और 12 साल उम्र तक नाबालिग गिनते हैं।

1. कुण्डली में वर्षफल के हिसाब से आयु के जिस दिन (सबसे पहले) सूर्य का राज्य या शुरु हो जाये उस दिन से सारे ग्रह बालिग गिने जाते हैं चाहे आयु 21 साल हो या कम हो।
2. सूर्य यदि कुण्डली के खाना नं० 1, 5, 11 में चाहे अकेला हो या किसी के साथ तो जन्म दिन से सब ग्रह बालिग गिने जाते हैं।
3. सूर्य का दौरा शुरू होने से पहले मनुष्य पर उसके पिछले कर्मों का फैसला तकरीबन 7 या 8 साल की आयु या हर सातवें या आठवें साल असर किया करता है जो तबदीली का युग होता है।

क्याफा :-

बिन रेखा वाला हाथ डाकू या निर्दय का होगा, बहुत रेखा वाला हाथ वहमी हो। एक ही घर में बहुत अधिक ग्रह दोष युक्त या नीच होंगे तो मंदे भाग वाला होगा।

अधिक चौड़ी रेखाएँ बहुत कम नेक असर देगी जैसे कई तरफ की दृष्टियों से टकराए हुए दुश्मन ग्रह।

मध्यम सी रेखा बेमायनी होगी, देर बाद असर देगी, जैसे बहुत शत्रु ग्रह मुकाबले पर हों।

किसी ताकत के ग्रह की पहचान उसके पर्वत से होगी जो व्यक्ति किसी ग्रह का मालूम हो तो वह ग्रह उसके खाना नं० 9 में बैठे की तरह काम देगा।

जिस किसी व्यक्ति में जिस ग्रह की शक्ति ज्यादा होगी, वह मनुष्य अधिक ताकत वाले ग्रह की चीज़ों का अधिक प्रयोग करने वाला न होगा। जैसे सूर्य का नमक, मंगल का मीठा। अब सूर्य ताकत वाला होने पर वह नमक कम खाएगा और अपनी कमी पूरी करने के लिए यदि मंगल उसका कमज़ोर हो तो मीठा अधिक खाएगा। इस तरह मंगल शक्तिशाली हो तो इससे उल्ट होगा।

9 ग्रहों का स बन्धियों से स बन्ध :-

1. जब वृहस्पति प्रबल लगे तो जिस घर में वृहस्पति है उस मनुष्य के खाना नं० के ताल्लुकदार में वृहस्पति की लिखी सिफत के होंगे। यदि वृहस्पति हो तो अपने घरों का या घरों में तो उसके बाबे या बाप की हालत होगी जो वृहस्पति की कही होगी। इसी प्रकार और ग्रह लेंगे।
2. यदि किसी का सूर्य प्रबल है परन्तु पड़ा हो केतु के खाना नं० 6 में तो उसका लड़का सूर्य की लिखी सिफतों का मालिक है।
3. यदि केतु पड़ा हो तो मंगल के पक्के घर नं० 3 में तो उसके भाई में केतु की लिखी बातें मिलेगी।

एक साथ के ग्रहों का असर :- ग्रह मुश्तरका बुरा नहीं करते, बंद मुट्ठी के खानों में।
फल 2-11 अपना-अपना, धर्म मन्दिर (2)गुरुद्वारे (11) में।

1. वृ०-सू०, वृ०-बु०, वृ०-श०, सू०-बु०, सू०-श०, बु०-श० इकट्ठे होने के समय माता-पिता के सुख सागर और जायदाद जद्दी के सुख से कोई स बन्ध न होगा बल्कि केवल जाती गृहस्थी सुख से मुराद होगी। चाहे अकेले-अकेले यह सब ग्रह टेवे में अपनी-अपनी वस्तु काम या स बन्धी ग्रह मुतल्लका के ताल्लुके में कैसे ही क्यों न हो।
2. स्त्री ग्रह (चन्द्र या शुक्र) या दोनों साथ बुध के साथ जब नर ग्रह हो तो नेक फल होगा।
3. जब दो या दो से अधिक ग्रह एक ही घर में हों तो उनमें आपसी शत्रुता वाले ग्रह अपनी शत्रुता छोड़ देंगे मित्रता को न छोड़ेगें। चाहे वह कितने ही शत्रुओं के साथ एक ही घर में अपने मित्रों से मिल कर बैठे हों।
4. बुध अपने पक्के घर खाना नं० 7 में बैठा हुआ और नर ग्रहों सूर्य, मंगल, वृ०, या शनि में से कोई भी 1, 4, 7, 10 में आया हुआ या खाना नं० 2, 11 में बैठा हुआ टेवे वाले की सेहत और आयु और दूसरी साथ की जानों (चाहे मनुष्य या पशु) पर कभी बुरा असर (मौत) नहीं डालता। जबकि इन घरों में बैठा होने के समय शनि के साथ स्त्री ग्रह (चन्द्र या शुक्र) का ताल्लुक या साथ न हो शनि के साथ स्त्री ग्रह हो जाने का असर शनि के हाल में आएगा।

सांझें घरों का असर देखने का ढंग :-

(दृष्टि की शर्त नहीं मगर दोनों घरों के ग्रहों को इकट्ठे गिन कर) इसके लिए (दृष्टि वाले अध्याय में पढ़े) निम्नलिखित घर सांझें में व्यवहार करते है :-

1. खाना नं० 1-7-11-8 का सांझा प्रभाव (राजा) इन सब का हाल जैसा एक का वैसा सब का चारों घरों में होगा।
2. खाना नं० 3, 11, 4, 7 का सांझा असर धन की आमदन, फालतू धन और खर्च की नहर की हालत।
3. खाना नं० 8, 2, 3, 4 का सांझा असर बीमारी का बहाना, सेहत का, आखिरी वक्त, जायदाद जद्दी की हानि, चोरी, मित्रता आदि देखेंगे।

मुश्तरका घरों का आपसी स बन्ध :-

साझें घरों (दृष्टि की शर्त नहीं, मगर दोनों घरों के ग्रहों को इकट्ठा ही गिन कर) का प्रभाव देखने का ढंग :-

दृष्टि के हाल में दृष्टि का दर्जा दिया है, यानि एक घर में बैठे हुए ग्रह दूसरे घर में बैठे हुए ग्रहों को खास-खास दर्जा दृष्टि से देख सकते जाने हैं, लेकिन असल में दर्जा दृष्टि 100, 50, 25% का याल रखने की कोई खास ज़रूरत नहीं। याद सिर्फ यह रखें कि कौन से घर के ग्रह को किस घर का ग्रह देख सकता है, जैसे खाना नं० 1 के ग्रह अगर देख सकते हैं तो सिर्फ खाना नं० 7 वालों को, मगर खाना नं० 7 के ग्रह कभी खाना नं० 1 के ग्रहों को नहीं देख सकते। इस बात का मतलब ये है कि खाना नं० 1 में अगर कोई ऐसा ग्रह बैठा हो जो खाना नं० 7 में डाल सकता है, मगर खाना नं० 7 वाले की ज़हर का (अगर कोई मंदा असर इस नं० 7 वाले का नं० 1 वाले के ग्रह के लिए हो) नं० 1 वाले पर कोई बुरा असर न हो सकेगा। इस बात को ध्यान में रखते हुए नीचे दिये हुए घरों के ग्रहों को इकट्ठा मिलाकर देखें तो उनके इस मिले हुए प्रभाव से जो बातें सामने दिखेंगी, वो नीचे लिखी प्रकार से होंगी।

खाना नं० 1, 7, 11, 8 मुश्तरका का असर (राजा वज़ीरी हालत)

अगर 11 खाली हो तो राजा बेलगाम, अगर 8 खाली हो तो वज़ीर बेदलील।

इसी तरह अगर खाना नं० 8 में ऐसा ग्रह बैठा हो जो खाना नं० 1 में बैठे ग्रह का शत्रु हो तो खाना नं० 8 का ग्रह खाना नं० 1 यानि त त पर बैठे राजे को उसी तरह चलाएगा जैसे कि राजे की आँखों में ज़हर डाल दी गई हो, जिससे कि वो रास्ता चलते

वक्त देखने की बजाय अपना सिर दर्द के मारे पीटता रहे। दूसरी तरफ यदि नं० 11 का ग्रह नं० 1 के ग्रह का शत्रु हो तो वह त त पर बैठे राजा को उसी तरह चलाएगा जिस तरह की किसी और व्यक्ति का हाथ पकड़ कर (जिस राजा की आँखें खराब हो रही हो) चल भी पड़े तो अपनी टांगों में ज़हर भरी होने के कारण चलने की बजाय दर्द से दु:खी होकर चिल्लाता होगा। इसके उल्ट अगर 11, 1, 8 आपस में मित्र हों तो त त पर बैठा राजा (खाना नं० 1 का ग्रह) अपनी टांगें (खाना नं० 11) आँखों से (खाना नं० 8) सदा मदद पाता रहेगा और उसकी वज़ीरों में मदद के लिए खाना नं० 7 के ग्रह सहायक होते होंगे, शर्त ये कि खाना नं० 1 में खाना नं० 7 से अधिक ग्रह न हों याल सिर्फ गिनती का रखें, मित्रता-शत्रुता का नहीं, क्योंकि तब खाना नं० 7 का वज़ीर खाना नं० 1 के कई राजाओं के हुक्म तले दबकर अपनी जड़ कटवाता रहेगा और अब खाना नं० 7 का ग्रह अपनी चीज़ें काम या संबंधियों के मंदे प्रभाव का होगा।

खाना नं० 7 के ग्रहों को अगर वज़ीर माना तो खाना नं० 8 के ग्रहों को हुक्मनामा यानि वज़ीरों की दिमाग़ी दलीलबाजी। उदाहरणत: मंगल खाना नं० 7 हो तो शुभ परन्तु बुध खाना नं० 8 के होने पर सब कुछ मंगल से संबंधित मंदा प्रभाव होगा। इसी तरह अगर खाना नं० 1 में बुध और खाना नं० 7 में मंगल हो तो भी मंगल खाना नं० 7 का दिया फल निक मा होगा। बुध खाना नं० 8 या बुध खाना नं० 1 की विष जब खाना नं० 7 के मंगल को मिलती हुई मानी तो ऊपर की दोनों हालतों में फर्क ये हुआ कि बुध खाना नं० 1 के वक्त उसके धन-दौलत, परिवार, राजा खाना नं० 1 की जालिमाना कारवाईयों से हुई, मगर कुदरत की ओर से कोई धोखा नहीं हुआ, लेकिन बुध खाना नं० 8 के समय उसी मंगल खाना नं० 7 का फल कुदरत की तरफ से रद्दी हो गया, चाहे समय का राजा उसकी कितनी भी मदद करता रहा हो। दूसरे शब्दों में खांड (मंगल) में (बुध) रेत और खून में आंतों का रास्ता बंद यानि स्वास्थ्य और गृहस्थ दोनों ही मंदे होते चले गये।

<u>खाना नं० 2, 8, 12, 6, 11 का साँझा प्रभाव :-</u>

रात का आराम, साधु की समाधि आदि जब नेक हालत हो तो, लेकिन मंदी हालत में अचानक मौत मुसीबत मनुष्य, पशु, चरिन्द-परिन्द इस ग्रह से संबंधित होगी जो खाना नं० 8 में हो, दूसरे सांसारिक साथियों की संबंध से किस्मत का प्रभाव आयु के लिहाज से खाना नं० 8 से खाना नं० 2 को मंदा असर जाने के वक्त खाना नं० 11 के ग्रह अगर खाना नं० 8 के शत्रु हों तो खाना नं० 8 की ज़हर खाना नं० 2 को नहीं जाएगी।

ए) खाना नं० 8 का असर खाना नं० 2 में मिल सकता है मगर खाना नं० 2 का असर खाना नं० 6 में मिला करता है। खाना नं० 2 और ाना नं० 12 आपस में साधु (खाना नं० 2 और खाना नं० 12) मिलते मिलाते रहते हैं किसी रजिस्ट्री के दर्जे का कोई लिहाज नहीं। इसी तरह खाना नं० 2 अपना असर मिला दिया करता है खाना नं० 6 और खाना नं० 6 अपना प्रभाव सिर्फ वही प्रभाव जो कि खाना नं० 6 का ग्रह हो, जिसमें कि ाना नं० 2 का कोई असर मिला हुआ न हो (यानि खाना नं० 2 के असर के बगैर जो भी असर खाना नं० 6 का जाती तौर पर हो सकता हो, सिर्फ उतना ही) खाना नं० 12 में मिलाया करता है और खाना नं० 12 अपना असर खाना नं० 6 में नहीं मिलाता। इस असूल से खाना 12 का बुध खाना नं० 6 के शनि में अपना ज़हर फैंकेगा और खाना नं० 6 का शनि साँप अपने ज़हर भरे खर्राटे से खाना नं० 2 को फूंक देगा।

बी) खाना नं० 6-8 के ग्रह भी आपस में ऐसे मिले जुले रहा करते हैं जैसे कि 2-12 के ग्रह आपस में (6-8 पाताल में मंदी लहरों के कारण है), ऊपर के खाना नं० 8, खाना नं० 6 की सलाह लेता हुआ खाना नं० 11 के रास्ते, खाना नं० 2 में अचानक आने वाली मुसीबत, जो कि खाना नं० 8 में बैठे हुए ग्रह से संबंधित हो, भेजेगा जो कि इंसान, पशु, पक्षी किसी पर भी होगी। ऐसी ग्रहचाल में व्यक्ति पर अचानक कोई मुसीबत या मौत का भय आ खड़ा हो तो संसार के दूसरे साथियों के संबंध में भी, जो कि ऐसे व्यक्ति के आयु के साथी हो भाग्य का अच्छा प्रभाव नहीं होगा। लेकिन अगर खाना नं० 2-12 हों तो अच्छे हो, खाना नं० 8-11 शत्रु हों तो न कोई अचानक मुसीबत आएगी और न ही कोई संसारी संबंधी धोखा देगा और अगर कोई मुसीबत आ भी जाये तो संसारी संबंधी उसकी मदद करके उसके बचा लेंगे।

सी) अगर खाना नं० 12 और खाना नं० 8 में ऐसे ग्रह हों जो आपस में मिल जाने पर शत्रुता का भाव पैदा कर लें, साथ ही खाना नं० 2 खाली हो तो ऐसी हालत में अगर ऐसे टेवे वाला प्राणी मंदिर में आने-जाने लग जाए तो खाना नं० 12 और खाना नं० 8 के आपसी शत्रु ग्रहों का बुरा असर होना शुरू हो जाएगा। मंदिर न जाने पर बुरा असर न होगा (मूर्ति को कोई अंग नहीं छुआना चाहिए, मंदिर के बाहर से इष्ट देव को नमस्कार में हर्ज नहीं), इसके खिलाफ अगर खाना नं० 8-12 में मित्रता हो और या खाना नं० 6 में कोई उत्तम ग्रह है तो ऐसी दोनों हालतों में खाना नं० 2 खाली हो तो ऐसे प्राणी को धर्म स्थान के अंदर मूर्ति को अंग लगाने से सब तरह का अच्छा प्रभाव मिल सकता है।

खाना नं० 3, 11, 5, 9, 11 का मुश्तरका असर :-

किस्मत का हुआ प्रभाव, हवाई वर्षा उतार-चढ़ाव, पूर्वजों से संबंधित किस्मत की चमक का समय (जवानी) यानि भाईयों के जन्म के दिन से अपनी जवानी और अपने बच्चों के जन्म दिन से आगे आने वाले जीवन का हाल, अपने बड़ों और अपनी संतान का हाल या अपना गुजरा हुआ समय, जन्म से पहले का समय और आगे आने वाले समय का हाल होगा। खाना नं० 9 पूर्वजों की हालत बताता है, लेकिन जब खाना नं० 3 में कोई ग्रह हो तो भाईयों के जन्म दिन से उस खाना नं० 9 के ग्रह का असर जातक पर शुरू होगा और वह औलाद के जन्म दिन तक जाएगा। औलाद के जन्म दिन से फिर तबदीली आएगी। अगर खाना नं० 5 और 9 में पापी ग्रह बैठे हो तो संतान के जन्म दिन से कोई खास नेक हालत हो जाने की उ मीद नहीं लेते। मगर जब खाना नं० 5 में पापी और खाना नं 8 में शत्रु या मंदे ग्रह बैठे हों तो खाना नं० 11 का ग्रह बिजली की तरह बुरे असर देने शुरू कर देगा और बिजली अंत में या खाना नं० 8 के स बन्धित संबंधियों या खाना नं० 5 के स बन्धित रिश्ते की मार्फत या उस पर (8 या 5) पड़ेगी, अगर खाना नं० 11 ाली हो तो अपनी आय के स बन्ध में सोई हुई किस्मत का समय होगा। भाई बन्धु से कोई लाभ नहीं गिनते। यदि खाना नं० 10 और खाना नं० 5 में कोई न कोई ग्रह बैठै हों तो दोनों घरों के ग्रह आपस में ज़हरी दुश्मन होंगे जैसे खाना नं० 10 में चन्द्र और खाना नं० 5 में मंगल, यह आपस में मित्र हैं पर जातक की 24 (चन्द्र), 28 (मंगल) साल उम्र माता (चन्द्र), भाई (मंगल) पर भला न होगा। अगर खाना नं० 9 में सूर्य और चन्द्र बैठे हों तो खाना नं० 5 में पापी बैठे का औलाद के खाने पर बुरा असर न होगा और न ही जीवन में दु:ख देने वाली मंदी बिजली पड़ेगी।

1. खाना नं० 9 को अगर एक समुद्र गिनें तो खाना नं० 2 पहाड़ों का ल बा सिलसिला होगा। दोनों के मिलाने के लिए यह हवाई शक्ति का स्वामी वृहस्पति (खाना नं० 9 और 2 दोनों का स्वामी) हवा की लहरों से अपना असर करता या फोकी उ मीदों में पहाड़ी औरर समुद्री सैरें करता या कराता होगा। खाना नं० 9 की निकली मौनसून, खाना नं० 2 से टकरा कर धन की वर्षा करेगी। लेकिन अगर खाना नं० 2 खाली हो तो खाना नं० 9 की हवा बिन बरसे निकल जायेगी यानि अगर खाना नं० 9 में अच्छा ग्रह हो और खाना नं० 2 में कोई न कोई ग्रह बैठा हो तो ऐसे प्राणी को खाना नं० 2 में बैठे ग्रह की उम्र में अपने पूर्वजों की शान तथा धन का लाभ होगा। लेकिन यदि खाना नं० 2 खाली हो बैठे तो पूर्वजों के धन-दौलत का ऐसे प्राणी को सिर्फ वहम या गुमान ही होगा लाभ न होगा।
2. अगर खाना नं० 2 में कोई ग्रह हो और खाना नं० 9 ाली हो तो ऐसे प्राणी के पास धन दिखावे का ही होगा, नज़ारा जले पहाड़ का ही होगा।

खाना नं० 4, 10, 2 साझाँ प्रभाव :-

किस्मत के मैदान की ल बाई-चौड़ाई कितनी होगी। ऐसे मैदान में किसी दूसरे संबंधी का ताल्लुक न होगा। किस्मत के मैदान का क्षेत्रफल खाना नं० 10 का ग्रह बता देगा मगर उसकी मिट्टी की चमक खाना नं० 2 और ऐसे मैदान में कैसा पानी चाहिए खाना नं० 4 से प्रकट होगा। अगर खाना नं० 4 खाली हो या जब उसमें पापी हो तो भाग्य के मैदान में चाहे लाख चमक हो मगर अपनी प्यास के लिए पानी ज़रूरत के समय वहाँ बैठे पापी (शनि, राहु, केतु) के भयानक नज़ारे पैदा करते रहेंगे। यानि ऐसा व्यक्ति अपनी हि मत से बना तो बहुत कुछ लेगा मगर थैली में हाथ डाल कर देखेगा तो कुछ भी नहीं होगा। खाना नं० 10 की शानदार ईमारत में बिस्तरा तक जला हुआ, शाहजहाँ या समय के खानदान गुलामों के खून का सबूत देने वाला, दो ही रंगों का असर जुगनू का असर टिमटिमाता हो। खानों के कीमती पत्थर लाल हीरे की रोशनी की चमक से अंधेरी रात में भी चमकते हुए चाँद से उत्तम रोशनी देने वाला होगा। यानि अंधेरी रात में भी चमकते हुए चाँद से उत्तम रोशनी देने वाला होगा। यानि अगर खाना नं० 8 मंदा हो तो मंदी हवा बेशक मौत का कोई सदमा या नुक्सान हुआ या न हुआ हो इसके विरुद्ध यदि खाना नं० 2 उत्तम हो तो गरीबी की काली रातों में मामूली से चिराग की बजाय प्राकृतिक रोशनी रास्ता दिखाने के लिए अपने आप पैदा हो जायेगी, चाहे ऐसा व्यक्ति नीच जाति का ही क्यों न हो।

अगर ाना नं० 2 खाली हो तो खाना नं० 10 किस्मत का मैदान चाहे कितना ही ल बा-चौड़ा हो उसमें चमक शायद ही आयेगी। इसी तरह अगर खाना नं० 2 में कोई ग्रह बैठा हो और खाना नं० 10 खाली हो तो किस्मत में लिखी मालधन का पार्सल डाकखाने या रेलवे स्टेशन पर चाहे पहुँच जाये पर उसको लेने के लिए अपनी पहचान का सबूत या रसीद पर्चा कहीं गुम ही हो गया होगा, जिसकी तलाश के लिए कई कुछ किया मगर वह वह वापिस न मिला और ऐसा प्राणी उसकी उ मीद से रास्ता देखता ही थक गया। अगर खाना नं० 2, 10 दोनों ही खाली खाना नं० 4 में कोई अच्छा ग्रह बैठा हो तो पीने के लिए पानी तो नज़र आता है मगर मृगतृष्णा की तरह उस तक पहुँचा कैसे जाये, की तरह का हाल होगा। यानि जीवन माया धन होंगे तो ज़रूर मगर

कब अपनी ज़रूरत के लिए पूरे होंगे इस बात का जवाब शायद ही कभी आयेगा।

विशेष प्रभाव :-

ग्रह मित्र नहीं आपस में लड़ते,
शनि सूर्य दो इकट्ठे बैठे,
स्त्री ग्रह जब शनि से मिलकर,
उन बैठे ग्रह जो कोई देखें,
इस ज़हर को घर 9 वें से,
अगर मदद न उनकी लें,
एक दीवार के घर दो साथी,
शत्रु ग्रह चाहे कभी न मिलते,
कारण किसी दीवार फटे अगर[2]
अक्ल बुरी किस्मत हो मंदी,
ग्रह शत्रु में गुरु जो आए,
माता चन्द्र जब साथी हो,

झगड़ा करवाते दूसरे हैं।
लड़ते ग्रह स्त्री से हैं।
बैठे 2 या कहीं भी हो[1]।
मरते सन्तान से हों।
राहु, केतु हटाते हैं।
मंगल, केतु मर जाते हैं।
ग्रह मुश्तरका होते हैं।
दोस्त मिले ही लगते हैं।
दोगुनी ज़हर हो जाती है।
मौत खड़ी हो जाती है।
वैर खत्म हो जाता है।
मित्र सभी बन जाते है।

1. स्त्री ग्रह जब शनि से मिल कर खाना नं० 2 में या और किसी जगह बैठे हो तो जो ग्रह उन (स्त्री ग्रह और शनि) को दृष्टि के असूलों पर देखेगा, उस ग्रह का मुतल्लका रिश्तेदार औलाद से दु:खी होगा।
2. जब कोई ग्रह ऐसे घर में आये या बैठा हो तो जहाँ कि वह नीच है या ऐसे घर में बैठा हो जो कि उसके शत्रु ग्रह का घर है (बतौर मालकियत का पक्का घर) तो ग्रह का प्रभाव देखने में प्राय: मंदा ही आता है इसके उल्ट जब वह ऐसे घरों में हो जो उसके लिए उच्च हालत का है या अपने मित्र ग्रहों के घर में (बतौर मलकीयत या पक्का घर) तो उसका असर नेक होगा। जब कोई ग्रह अपने पक्के घर में बैठा हो या कायम हो या उसके साथ बराबर की हैसियत का ग्रह बैठा हो तो औसत हालत में उसका असर नेक ही होगा। जब कोई ग्रह नीच घर में हो या शत्रु ग्रह का घर हो तो मंदे असर का होगा। उच्च या मित्र गृही घर तो उच्च असर कायम ग्रह या बराबर का ग्रह बैठा हो तो नेक असर।

विशेष प्र ाव :-

ाना	कौन ग्रह बैठा हो	किस ग्रह पर हर प्रकार से असर करेगा	क्या असर करेगा
1	केतु	सूर्य	सूर्य उच्च फल का होगा।
	राहु	सूर्य	सूर्य जिस घर बैठा हो उस घर में सूर्य ग्रहण होगा।
2	बुध	वृहस्पति	हर तरह से बर्बाद होगा।
4	बुध	चन्द्र	हर तरह से बर्बाद होगा।
6	मंगल	सूर्य	उच्च होगा।
	मंगल	केतु	बर्बाद करेगा।
11	राहु	वृहस्पति	बर्बाद करेगा।
	केतु	चन्द्र	बर्बाद होगा जब बुध खाना नं० 9 में न हो।
	वृहस्पति	राहु	बर्बाद होगा जब बुध मंदा हो।
12	चन्द्र	केतु	बर्बाद करेगा।

कौन सा ग्रह केवल अकेला ही बैठा हो तो कौन क्या प्रभाव करेगा :-

ग्रह	प्रभाव
वृहस्पति	कभी मंदा असर न देगा।
सूर्य	खुद मेहनत करके अमीर बना होगा।
चन्द्र	अपनी दया और नर्मी से फांसी तक भी माफ करवा ले। कुल को नष्ट नहीं होने देगा।
शुक्र	कभी मंदा न होगा। यदि होगा तो किसी के साथ होने पर ही होगा।
मंगल	चिड़िया घर का कैदी या बकरियों में पला शेर।
बुध	लालची देश-परदेश में खाली चक्कर।
शनि	अकेले सूर्य के साथी खाली बुध का ही काम देगा।
राहु	हर तरह से रक्षक, माली हालत की शर्त न होगी। तमाम ग्रहों की परवाह न करेगा।
केतु	हर समय राहु के इशारे पर चलेगा यानि न अमीर बनाए न गरीब और सदा यही असूल रखे कि मैंने अपनी शक्ति तु हारे हवाले कर दी है, अब तुम जानो।

हर ग्रह के अच्छे-मंदे हो जाने की निशानी :-

ग्रह	निशानियाँ	उपाय
वृहस्पति	सिर पर चोटी के बाल बिना कारण उड़ जाएं, गले में माला रखने का आदी हो जाए, सोने की हानि, शिक्षा बिना कारण बंद हो जाए, फ़िजूल अफवाह, बदनामी।	माथे या पगड़ी पर ज़र्द पीला तिलक लगाना, नाक साफ करके काम शुरू करना मदद देगा। बचपन में नाक का पानी खुद खुश्क होना मदद देगा ।
सूर्य	शरीर के अंग अकड़ जाएं कठिनाई से हिले, मुंह से हरदम थूक जाने लगे, लाल गाय या भूरी भैंस गुम हो जाए या मर जाए।	मुंह में मीठा डाल कर पानी के कुछ घूंट पी कर काम करना मदद देगा।
चन्द्र	घर में दूध वाले पशु या घोड़े की मौत हो, कुआँ तालाब सूख जाए, किसी वस्तु के असर का पता न चले।	दूसरों के चरण छू कर आशीर्वाद लेना मदद देगा।
शुक्र	अंगूठा बिना कारण खराब हो जाए, त्वचा खराब हो जाए।	कपड़ों का ध्यान रखना मददगार होगा।
मंगल	बच्चा पैदा होकर चला जाए, आँख कानी हो जाए खून ख़राब हो जाए, शरीर के जोड़ चलने से रह जाएं, शक्ति हो पर बच्चा न हो, खून का रंग मुर्दे की तरह।	सफेद सुरमा का प्रयोग मदद देगा मंगल बद का उपाय।
बुध	दांत गिर जाएं, सुगन्ध-दुर्गन्ध का फर्क चला जाए। संभोग शक्ति धोखा दे।	नाक छेदन तथा दांत साफ रखना मदद देगा।
शनि	मकान गिर जाए, शरीर के बाल झड़ने लग जाए विशेषकर पलकों और भंवों के, भैंस आदि मरे, आग़ लगे।	मिस्वाक का प्रयोग मदद देगा (सुरती आदि)।
राहु	पूरा काला कुत्ता मर जाए, गुम हो जाए, हाथ के नाखून झड़ जाए, दिमाग़ खराब हो जाए, शत्रु पैदा हो जाएं।	इकट्ठे परिवार में रहें, ससुराल से स बन्ध न बिगाड़े सिर पर चोटी रखें, खुदमु तारी न करना मदद देगा।
केतु	पांव के नाखून झड़ जाएं, पेशाब या दर्द जोड़ों की बीमारी हो, संतान के विघ्न या कष्ट और खराबियाँ हों।	कान में सुराख करवाना, केतु की पालना मदद देगी।

औसत ग्रहों का असर प्राय: उन घरों में होगा जो घर किसी ग्रह के लिए पक्के घर की तरह निश्चित नहीं है। कायम और नेक हालत का असर उस समय होगा जब कि उस ग्रह का साथ हो जाए जो उस ग्रह के बराबर का दिया है और वह ग्रह जागता हो।

जब दृष्टि की नज़र से बाहर ग्रह अकेला ही बैठा हो [1] ।	किन घरों में अमूमन मंदा होगा [2] ।	कहाँ अमूमनन अच्छा अच्छा होगा [3] ।
वृहस्पति	6, 7, 10 मंदे गुरु को केतु से मदद मिलेगी।	1 से 5, 8, 9, 12
सूर्य	6, 7, 10	1 से 5, 8, 9, 11, 12
चन्द्र	6, 8, 10 से 12	1 से 5, 7, 9
शुक्र	1, 6, 9	2 से 5, 7, 8, 10, 11, 12
मंगल	4, 8	1 से 3, 5 से 7, 9 से 12
बुध	3, 8 से 12 खाना नं० 9 सदा मंदा न होगा, न ही खाना नं० 11 में सदा बुरा होगा।	1, 2, 4, 5, 6, 7
शनि	1, 4, 5, 6	3, 2, 7 से 12
राहु	1, 2, 5, 7 से 12	3, 4, 6
केतु	3 से 6 और 8	1, 2, 7, 9 से 12

1. दृष्टि की नज़र से बाहर का अर्थ है कि उस ग्रह को कोई भी और ग्रह और किसी तरह की दृष्टि से न देख सकता हो या ऐसा ग्रह अकेला बैठा हो।
2. अमूमन मंदे का अर्थ है कि जब ग्रह ऐसे घरों में हो जहाँ कि वह नीच स्थापित किया गया या अपने शत्रु ग्रहों के साथ घर में बैठे हों।
3. अमूमन अच्छे का अर्थ होगा जहाँ वह अपने घर का स्वामी हो या अपने मित्र के घर में बैठा हो या उच्च स्थापित किये जाने के घर में हो।

फरमान नं० 11
ब्रह्माण्ड में ग्रहचाली बच्चे की बदलती हुई अवस्था

1. बच्चा पैदा हुआ, बंद हवा से इस ज़माने की हवा में आया। यह ज़माना वो है जबकि बच्चे का जिस्म नर्म, पोला और तबीयत बिल्कुल भोली-भाली है। अभी सात ग्रह का असर पूर्ण नहीं हुआ और लोक-परलोक सांझें विचार उसमें पैदा हो रहें हैं। गुरु से विद्या ग्रहण की तो उस पर इस समय की हवा का असर पूरा होने लगा। धर्म-कर्म करना सीखा, मान-अपमान का फर्कमालूम हुआ तो आयु का वह समय आया जो रुहानी हालत का हुआ। पुट्ठे अब जो बढ़ने थे बढ़ चुके गोया वृहस्पति की उम्र हुई 16 साल।
2. इल्म हुनर के बाद राज दरबार से खुद अपने हाथों से धन कमाना शुरू किया तो यह समय सू० का हुआ या यों कहें कि बच्चा बालिग हुआ। उम्र हुई 22 साल।
3. अपनी कमाई से माता की सेवा करने लगा और चन्द्र का समय आया, उम्र हुई 24 साल।
4. स्त्री संबंध, बड़े परिवार गृहस्थ आश्रम, बाल बच्चों की बरकत का समय, शुक्र का समय हुआ तो आयु हुई 25 साल।
5. खाना-पीना भाई बन्धुओं की सेवा शारीरिक दु:ख बीमारी, लड़ाई-झगड़े का समय, मंगल नेक तथा बद गिना तो उम्र हुई 28 साल।
6. बुद्धि के काम, व्यापार हाथ के काम दिमाग़ी बुद्धिमता आदि से धन-दौलत का समय, बुध का समय बना, आयु हुई 34 साल।
7. संन्यास या मकान या जायदाद या चालाकी की आँख से धन-दौलत का ढंग पकड़ा तो शनि का राज्य फैला, आयु हुई 36 साल।
8. संसार के अंदेशे की फर्जी सोच विचार और उनका ज़ोर हुआ तो राहु का समय आया, उम्र हुई 42 साल।
9. अपने आप जब दुनियां का सवाल हल न हुआ तो इधर-उधर सलाह के लिए पैरों का चलना शुरू हुआ तो केतु का समय, उम्र हुई 48 साल।

या दुनियां का लाल, ग्रहचाली बच्चा 12 राशि के 4 चक्र लगा कर संसार के चारों खूंटों में आ रोशन हुआ।

सूर्य को आज तक किसी ने मुड़ते नहीं देखा न ही आज तक उसने अपना रास्ता बदला है। सूर्य ज्यों-ज्यों ऊंचा होता है, सफेदी में बदलता है और दुनियां को रोशन करता है या ऐसा कहें कि मंगल अपनी किरणों से दुनियां और ज़मीन शुक्र के बीच खूब ज़ोर से तन गया। दुनियां के इंसान के दिल (चन्द्र) ने अपनी खिचड़ी अलग पकानी छोड़ दी और अपना घोड़ा, सफेद रंग के सूर्य के रथ में जोड़ दिया। वृहस्पति की हवा या राजा इन्द्र ने परलोक से इस दुनियां का रुख किया और निकलते ही सूर्य के हुक्म को पूरा करने के लिए पीले हवाई शेर को सिंह राशि के स्वामी सूर्य को प्रणाम करने के लिए भेजा, जो मेष नं० 1 के मंगल को उच्च कर रहा है और मंगल की किरणों को बना-बना कर शुक्र की ज़मीन को खूनी झण्डे के मालिक के मैदाने जंग के असूलों को चलाने वाला है मुकाबले पर शुक्र की ज़मीन सब को एक ही आँख से देखने वाली कानी औरत है। अत: मंगल उस पर हमला नहीं करता। किरणों को वापिस ले जाता है और सूर्य और वृहस्पति के शेरों को कानी अबला की (निहायत गरीब) असलियत बताता है। मंगल इंसाफ का स्वामी है। वृहस्पति हवाई शेर रहम का देवता है, किसी से शत्रुता नहीं करता। सूर्य

न्यायी है जिसमें रहम और इंसाफ दोनों शामिल है क्योंकि उसके अंदर चन्द्र की शांति वाला दिल बैठा सब कुछ देख रहा है। फैसला होता है कि पांव पड़ी नीचे लेटी एक ही आँ ा की मालिक कानी औरत पर हाथ उठाना मंगल का काम और हमला करना शेर बहादुरों का काम नहीं। चुपचाप बैठा हुआ बुध अपना दायरा बड़ा करता है जिसमें मिथुन राशि पैदा हो जाती है यानि बुध, शुक्र की अपने ही घर में पालना करने लग जाती है। मर्द-औरत का जोड़ा बन जाता है। दूसरी तरफ शनि जिसने शुक्र को देखने के लिए अपनी आँख उधारी दी थी समझता है कि मेरे होते हुए ये सब तेरी आँख (शुक्र की आँख) सिर्फ एक मामूली करिश्मा है गोया शनि ने अपने बाप सूर्य के खिलाफ भी औरत को सिखा दिया सलाह दी, जो अमूमन भोली भाली ही मानी गई है और वह उसके फरेब में आई गई। उसकी आँख शनि, मगर मिट्टी शुक्र की चाहे देखने में भोली भाली गाय नज़र आ रही है, मगर उसकी शैतान आँख के एक ही करिश्मे से सूर्य और वृहस्पति के शेरों को नीचा कर दिया। सब तरफ नीच फल पैदा हो गया। मंगल वर्गाकार राहु की शक्ल बन गया, जिससे दिमाग़ में नकलों हरकत लहरें होने लगी। अब मंगल की पेश चलनी बंद हो गई। वो सूर्य और वृहस्पति दोनों की खातिर जो सबके पिता है, आँख से मार देने वाली अबला से तंग होने लगा और खुद अपने हाथ से उसे मारे देने पर तैयार हो गया। ऐसी हालत में अगर वो अकेला हो तो कायरता के काम कर जाये। अत: चुप है और मंगल के मौजूद होते राहु भी गुम है इसके कारण स्त्री-पुरुष का जोड़ा कामदेव को अंदर छुपाए फिर रहा है। मंगर मंगल शत्रुता नहीं छोड़ता। जब काबू आया स्त्री को मार ही देने का असूल रखने लगा। संक्षेप में केतु को मदद मिलने पर या कामदेव की कृपा और मंगल की सलाह से किरणें फिर ज़मीन पर शुक्र को मार देने या नीच करने की बजाए उसे चमकाने को वापिस हुई। अब ज़मीन क्या चमकेगी। सब ग्रहों को शनि की शैतानी मालूम हो गई। वृहस्पति की हवा हुक्म बजा ला रही है। मंगल का मैदान (लड़ाई का) अंदरुनी तौर पर गर्मी नहीं छोड़ता। वह सूर्य के हुक्म और मंगल की किरणों को इधर-उधर करता है कि किरणें शुक्र का कुछ बिगाड़ नहीं सकती। वृहस्पति की हवा ज़ोर पकड़ रही है। शुक्र की माया के झगड़े और मिट्टी के कण-कण साथ उड़ कर सब की आँखों में पड़ने लगे मगर उसकी अपनी आँ ा लगातार देख रही है क्योंकि शनि की बनी हुई है। यही कारण संसार के झगड़े है। इसलिए उनसे वही बचा जिसने शनि की आँख से आँख न मिलाई। कणों से गर्मी बढ़ी। मैदान गर्म, पहाड़ ठण्डे यानि स्त्री की मुस्कुराहट और आँ ा की शरारतों से सैकड़ों झगड़े होने लगे। मंगल ने नज़ारा दिखाया, चन्द्र ने तमाशा देखा मगर रेखाओं के समुद्र ने शांति न छोड़ी। पानी धीरे-धीरे गर्म हुआ। मगर खुश्की का सारा ब्रह्माण्ड या शुक्र की सारी ज़मीन या हाथ का सारा मैदान सूर्य और शुक्र की आपसी शत्रुता के कारण इतना दु:खी हुआ कि सूर्य को दबा लेने के लिए सारा का सारा ही उठ कर दौड़ता हुआ मालूम होने लगा। वृहस्पति के हवा से भी शुक्र की मिट्टी के कण बड़ी तेज़ी से फैल गये। तमाम संबंधी तंग हो गये। चाहे सूर्य की तपश को भी मध्यम किया मगर उसके रथ को न रोक सके और आखिर में सब ने अपना आप ही खराब किया और सूर्य का कुछ न बिगाड़ सके या यों कहें कि धीरे-धीरे सूर्य का रथ छुपने लगा। शनि का पहरा होने लगा, किरणें समाप्त, मंगल चला गया। अब मंगल की गैर हाजिरी में राहु भी आ निकला रात हो गई। सूर्य की पुरानी चमक वृहस्पति की ठण्डी हवा के साथ चन्द्र की शक्ति से फिर दोबारा नज़र आने लगी गर्मी घटी, सर्दी बढ़ी। ज़मीन को शांति मिली। राहु ने रात समाप्त की तो फिर ठण्डी हवा चलने लगी जिस पर रात के बाद दिन के फर्क की हदबंदी या केतु निकल आया। दिन समाप्त रात शुरू होने के बाद राहु था। अब नये सूर्य की उ मीद हुई या राशि मंडल में ग्रहचाली बच्चे को ज्यों-ज्यों हवा लगने लगी, बुद्धि या अटकल आने लगी। ज़र्द पीला (कनक, जौ के पौधे और वृक्षों के पत्ते निकलते ही ज़र्द रंग होते हैं) बंद बर्तन में पैदा हुए पौधे इस बात को साफ करते हैं। ये सब्ज रंग होने लगा। जो बुध का रंग और ज़माना है। अब समय है कि हवा अक्ल तो देगी मगर पीली से हरी करेगी। यानि वृहस्पति की मदद कम होती जाएगी और उस बुध के हरे रंग से मिली अक्ल से ही मनुष्य धन-दौलत के कमाने की धुन और लग्न में रात-दिन चलता रहेगा। क्योंकि बुध की वृहस्पति से दुश्मनी है। माँ कहती है कि बच्चा बड़ा हुआ मगर वृहस्पति की उम्र घटती जायेगी। जन्म समय वृहस्पति पूरा उम्र का था, हर तरह से साफ व ज़माने की हवा से उसके कई रंग बनने लगे। ज़र्द (पीला) से हरा हुआ तो नीला रंग राहु के साथ मिला यानि दिमाग़ में हरकत पैदा हुई, यानि नेकी के साथ बदी का भी कुछ अंश आ मिला। आखिर में यहाँ तक कि सारा समय उलझन बन गया। सोच विचार खड़ी हुई मगर शुक्र की दशा ऐसी हैं कि राहु और वृहस्पति यहाँ बराबर हैं दोनों आपस में कभी शत्रुता नहीं करते दोनों के मिलने पर सब्ज रंग (हरा) पैदा होता है जो बुध बन जाता है और पीला रंग बिल्कुल खत्म हो जाता है। यानि अक्ल पूरी होने पर ज़माने की हवा का एतबार उड़ जाता है और कुदरत का लिखा भूल जाता है। इतना ही नहीं बल्कि इस बुध की अक्ल का गोल दायरा वृहस्पति के बुर्ज पर आया तो वृहस्पति की हवा का वो चक्र घूमा कि उसे खाली आकाश की तरफ ही जाना पड़ा। भाग्य का एतबार ही खत्म हो गया। बहरहाल इतने में सूर्य आसमान से गायब हो गया, रात आ गई और आग़ बुझने और सर्दी उभरने लगी। घबराहट

खत्म हुई और शांति आने लगी। चन्द्र चमक पड़ा, दिन के थके हारे सोने लगे कि कई तरह की खराबियाँ होने लगी जिसके पर्दे में हवा से आग़ हुई, आग से पानी, पानी से मिट्टी बनी या बच्चा जवानी की हवा से गर्मी-सर्दी महसूस करने लगा और माता-पिता के साये में आराम करने लगे और वही बंद मुट्ठी के आकाश की हवा उसे सांस का काम देने लगी। इसी असूल पर माना है कि हर सांस के के आने-जाने में इंसान के भाग्य का संबंध है। इसके कारण कोई बुद्धिमान या बुध का मालिक दावे से नहीं कह सकता कि दूसरा सांस आयेगा कि नहीं, मगर हरदम यही इच्छा करती है कि अगर एक सांस बाहर आया तो दूसरा अंदर आ जाये, यानि अगर किस्मत ने एक तरफ आग़ लगा दी तो दूसरी तरफ मदद दी और इसी तरह 24 घंटे में 12 राशि गुणा 7 ग्रह या 84 लाख सांस पूरे कर लेता है और इस संसार की नर्क चौरासी या बुध 12 राशियों में सातों ग्रहों की चोट को सहारता चला आ रहा है। अगर यह सांस हवा या वृहस्पति न होता तो सब 84 समाप्त हो जाती क्योंकि वृहस्पति बुध मुश्तरका ग्रहचाली बच्चे से वृहस्पति उड़ जाने पर बुध का गोल अण्डा या सिफर खाली फैलाव रह जायेगा जो कि सांसारिक विचार में अण्डे से वृहस्पति की ज़र्दी से निकाला हुआ अण्डे का ाली खलाव या ढांचा सिर या बच्चे की ऊपर की झिल्ली होगी। जो वृहस्पति या राहु के बीच हदबंदी करने वाली चीज़ आसमान की नींव कहलाएगी जिसकी जांच पड़ताल सामुद्रिक शास्त्र में होगी।

फरमान नं० 12
कुण्डली की बनावट और दुरुस्ती

ज्योतिष कुण्डली :-

क्याफा :- हाथ और पांव की अंगुली के नाखून के सिरों से कलाई और टखने तक 9 ग्रह और 12 राशि की कुण्डली से 12 और दरमियानी भाग में वृक्ष पौधे व जड़ की चीज़ें, किस्म-किस्म के लोग, मकान पराया या अपने रहने वाले मकान, स्वप्न शुगुन, परिंद-चरिंद, दोस्त-दुश्मन, दरिंदे ज़हर और अमृत वाले सांसारिक सब साथी और क्याफा लिखा जो सामुद्रिक शास्त्र के ज़रूरी भाग है वक्त से पहले ही लिखे 9 निधि, 12 सिद्धि के घेरा बंदी के अनुसार कुदरती और न बताये जा सकने वाले को पढ़ा जा सकता है।

(रंग रलिया ग्रहों की)

12 सिद्धि, ब्रह्म (वृ०), 9 निधि (सू०);
(राहु)– राई घटे न तिल बढ़े (केतु) ;

मोह (शुक्र), माली (चन्द्र), आकाश (बुध)
मच्छ (शनि), भाई (मंगल), प्रकाश (सूर्य) 11

टेवे की आसान दुरुस्ती :-

ज्योतिष विद्या के मुताबिक बनाई गई जन्म कुण्डली के लग्न के खाना नं० को 1 का हिस्सा देकर जब कुण्डली बनाई तो मालूम हुआ कि लग्न से हर ग्रह कौन-कौन से घर में है इस तरह बैठे हुए ग्रहों के मुताबिक फलादेश दे ें और दिये हुए लग्न को तीन बार हिला कर जांच कर लें। जहाँ से ही मालूम हों वही पक्का लग्न रख लें।

उदाहरणतः जिस तरह से ही मकान कुण्डली बनाई और हरेक ग्रह की संबंधित चीज़ों से पड़ताल की या उसके खून के रिश्तेदारों हरेक से संबंधित का हाल देखें तो मालूम हुआ कि वो दिये हुए टेवे के मुताबिक ठीक नहीं।

फिर वृहस्पति को खाना नं० 2 या 12 देकर देखा तो वृहस्पति को खाना नं० 12 में रख कर बाकी सब ग्रहों का फल मिला। अब सब हाल आम उम्र व साल अनुसार देख लें। सही जवाब होगा ऊपर के ढंग हों तो फर्क सिर्फ इस हालत तक ही होगा जबकि जन्म समय में मामूली फर्क लिखा गया हो। लेकिन हो सकता है कि किसी की पैदाईश हो सुबह, लिखी जाये पक्की शाम। ऐसी हालत में दिये हुए पैदाईश के दिन की चन्द्र कुण्डली बनाए और चन्द्रमा बैठा होने वाले घर को खाना नं० 1 देकर या चन्द्रमा को खाना नं० 1 में करके बाकी घरों के ग्रह क्रम में लिख लें और देखें कि हाथ रेखा के असूलों पर कुण्डली बनाने के ढंग से नर ग्रह कहाँ-कहाँ मालूम हो रहे हैं। जिस घर कोई एक नर ग्रह भी कोई पूरे तौर पर तसल्ली का मालूम हो उसे उस घर में करके बाकी सब ग्रहों को बारी-बारी से लिख दें। अब लग्न सारणी के अनुसार देख लें कि जन्म का असल समय क्या हुआ। साथ ही इस तरह ठीक किये टेवे का फलादेश बोल कर देखें कि क्या गुजरा हुआ हाल मिला है। ग्रह स्पष्टी के लिए हर ग्रह में उसकी खानावार असर की पेशानी पर दी गई चीज़ों व उस ग्रह में आम चीज़ों का संबंध ताल्लुक भी बोल कर देख लें।

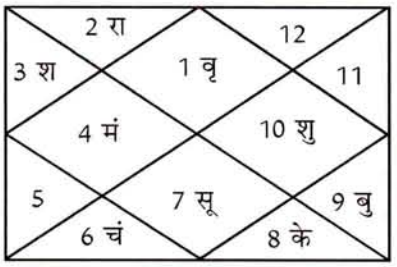

जब मकान कुण्डली के मुताबिक भी वह टेवा ठीक हो गया है तो फलादेश देखें।

ज्योतिष विद्या की बनाई कुण्डली (कुण्डली जन्म दिन के मुताबिक सामान्य रीति से बनायें और इल्म ज्योतिष की कुण्डली में राशि नं० को हटा कर लग्न को खाना नं० 1 (जो मेष राशि नहीं) लि ा कर कुण्डली बनाने से वह लाल किताब की पक्की कुण्डली होगी। अब हम लाल किताब के मुताबिक जवाब देखना शुरू करेंगे।

क्याफा की मदद

हस्त रेखा से जन्म कुण्डली बनाने का ढंग

जब कोई रेखा एक बुर्ज से दूसरे बुर्ज पर चली जाये तो जिस बुर्ज से निकली थी उस तरफ के बुर्ज का घर वह कुण्डली में होगा जहाँ जाकर वह रेखा समाप्त हुई। यानि अगर चन्द्र से शनि को रेखा हो तो कुण्डली में शनि को खाना नं० 4 मिलेगा और चन्द्र को खाना नं० 10, बाकी जब ग्रह का निशान और जिस बुर्ज पर पाया जाये वह ग्रह उसी नं० पर कुण्डली में होगा यानि यदि चौकोर शनि के बुर्ज पर हो तो मंगल खाना नं० 10 में होगा आदि। हाथ में यदि कोई रेखा (निशान) न ही हो तो बुर्जों की ऊँचाई-निचाई से ही कुण्डली को पूरा कर लिया जाता है और इसी तरह से बुर्जों के घर और निशान और क्रम सदा के लिये स्थापित है। जिस बुर्ज का निशान जहाँ कहीं पाया जाये उसी हिसाब से ग्रहों के कुण्डली में भर लिया जाये। नीचा बुर्ज और वह ग्रह जिसका निशान न मिले नीच फल और नीच राशि का होगा। यदि बुर्ज कायम हों और निशान उसका न मिले तो अपने घर का मालिक गिना जायेगा। बुर्ज से संबंधित रेखा से शक दूर होगा।

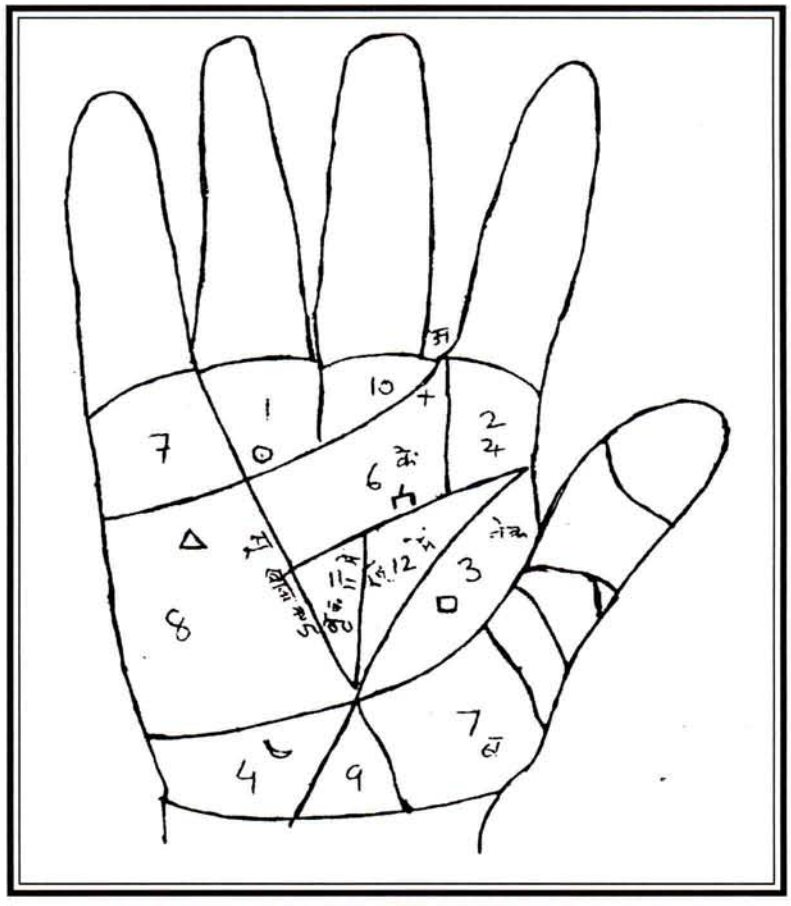

<u>हाथ पर जन्म कुण्डली के खाने :-</u>

1. हर ग्रह की स्थापित रेखा भी कुण्डली का खाना नं० हो जाती है।
2. तर्जनी और मध्यमा के मध्य 'अ' खाना नं० 11 तथा शनि का मु यालय शब्द 'ब' की जगह खाना नं० 8 होता है।

वृ०होगा खाना में	हाथ पर वृहस्पति का निशान
1.	भाग्य रेखा की जड़ पर चार ⋀ रेखाई रेखा हो। सूर्य के बुर्ज पर बुध का एक चक्र हो। वृहस्पति का खास अपना निशान ५ या दोनों हाथों को इकट्ठा गिन कर अंगुलियों पर गिनती मे केवल एक शंख या एक चक्र का एक सीधा खत वृहस्पति के अपने बुर्ज पर पाया जाएं।
2.	दो सिदफ या वृहस्पति के बुर्ज पर दो सीधे खत।
3.	तीन सिदफ या सात चक्र या सात सीधे खत या गृहस्थी रेखा वृहस्पति के बुर्ज पर।
4.	चार सिदफ या चार शंख या चार खत या दो चक्र चन्द्र पर शंख हो, सिर्फ एक चन्द्र रेखा वृहस्पति के बुर्ज पर खत्म हो।
5.	पाँच सिदफ, पाँच चक्र या पाँच खत सब अंगुलियों पर हो या स्वास्थ्य रेखा नीचे जाकर भाग्य के शुरू भाग में मिल जाये, यानि कलाई से भाग्य रेखा निकल कर सेहत रेखा से मिल जायें।
6.	छः चक्र या किस्मत रेखा की जड़ में केतु का निशान हो या वृहस्पति से रेखा खाना नं० 6 हाथ की बड़ी आयत में खत्म हो।
7.	तीन चक्र, तीन शंख या तीन सिदफ, तीन खत, छः खत, चार चक्र, पाँच शंख या शुक्र का वृहस्पति हो यानि वृहस्पति का बुर्ज बहुत बड़ा हो या नर्म हाथ का वृहस्पति हो। संतान रेखा शादी रेखा को काटे। भाग्य रेखा पर बुध का चक्र हो। शुक्र के बुर्ज पर भाईयों की रेखा ल बी टेढ़ी हो। सिर रेखा आयु रेखा से अलग होकर वृहस्पति के बुर्ज का रुख लें।
8.	दो शंख, आठ सीधे खत गृहस्थ रेखा सीधी खड़ी हो (1), 9 चक्र या ग्यारह चक्र जब छः अंगुलियां हों, भाग्य रेखा सूर्य रेखा से न मिले, वृहस्पति का बुर्ज बिल्कुल न हो। हाथ पर △ हों। भाग्य रेखा दो रेखाई ⟨ हो, किस्मत रेखा की जड़ पर △ त्रिकोण हो।
9.	भाग्य रेखा सीधे डण्डे की तरह शुरू होकर खड़ी हो।
10.	सूर्य के बुर्ज पर बुध की ओर एक सिदफ हो, दस चक्र हो या आयु रेखा चन्द्र पर समाप्त हो यानि पितृ रेखा बनी हो, उर्ध रेखा पाई जाये।
11.	वृहस्पति और शनि के बुर्ज दो रेखाई रेखा से मिले हों, नौ चक्र या सिर की श्रेष्ठ रेखा हो।
12.	तीन खत, छः शंख, बारह चक्र (जब अंगुलियां छः हो)। भाग्य रेखा की जड़ पर राहु का निशान हो या मच्छ रेखा शुक्र के बुर्ज पर या शुक्र व चन्द्र दोनों बुर्जों के मध्य में मुंह ऊपर को किये हुए और उर्ध रेखा या आयु रेखा उसके मुंह में हो।

नोट :- अंगुलियों की पोरियों से लिया वृहस्पति सिर्फ राशि नं० का होगा बुर्ज नं० का न होगा। हाथ की हथेली से लिया हुआ वृहस्पति बुर्जों के खाना नं० का होगा मगर शर्त यह है कि वृ० के निशान चक्र शंख, सिदफ से न लिया हो क्योंकि ऐसे निशानों से लिया हुआ वृहस्पति भी राशि नं० का होता है। सिर्फ वृहस्पति की रेखा या खत या ाास निशान ५ इन्द्रियों से लिया हुआ वृ० बुर्ज नं० का होगा।

सू० होगा खाना में	हाथ पर सूर्य का निशान
1.	शुक्र, बुध दोनों सूर्य की सेहत रेखा से मिल जायें और सूर्य रेखा स्वयं ठीक हालत में बुर्ज न० 1 में पाई जाएं। सूर्य का सितारा सूर्य के अपने बुर्ज पर बुध की ओर हो। सूर्य का बुर्ज टेवे का खाना नं० 1 है, मगर सूर्य खाना नं० 1 में तभी होगा जबकि सूर्य के बुर्ज पर बुध की तरफ सूर्य का सितारा कायम हो, नहीं तो सूर्य खाना नं० 5 का होगा। (सूर्य रेखा या सेहत रेखा खाना नं० 11 के अंत तक)।
2.	भाग्य रेखा या सूर्य रेखा जब वृहस्पति का रुख करे मगर शनि के बुर्ज पर न हो।
3.	सूर्य रेखा से मंगल रेखा नेक हो।
4.	सूर्य के बुर्ज से रेखा चन्द्र के बुर्ज को मगर मंगल बद का ताल्लुक न हो। चन्द्र और सूर्य के बुर्जों के बीच में रेखा दोनों बुर्जों को मिलाती मालूम हो मगर मिलाये नहीं। शराफत रेखा जब मध्य से ऊपर को झुकी हो ⌒। सूर्य रेखा दिल रेखा पर समाप्त हो।
5.	सूर्य रेखा बिल्कुल सीधी सूर्य के बुर्ज पर ही हो और सूर्य के अपने घर में ही मालूम हो और सूर्य का बुर्ज कायम हो। सेहत रेखा बुर्ज से चल कर हथेली से खाना नं० 11 में खत्म हो।
6.	सूर्य रेखा हाथ की बड़ी आयत में खत्म हो।
7.	शुक्र के बुर्ज से रेखा सूर्य के बुर्ज को, शुक्र का पतंग हथेली पर कायम हो। खाना नं० 7 में जो बुध का भी घर है, बुध जुदा असर नहीं करता।
8.	सूर्य के बुर्ज से रेखा मंगल बद को, भाग्य रेखा न हो, सूर्य रेखा न हो या भाग्य व सूर्य रेखा आपस में न मिले।

9.	किस्मत रेखा की जड़ पर चार रेखाई खत हो।
10.	सूर्य रेखा शनि के बुर्ज पर हो।
11.	सूर्य रेखा हथेली पर खाना नं॰ 11 (बचत) में समाप्त हो।
12.	सूर्य रेखा हथेली पर खाना नं॰ 12 (खर्च) में समाप्त हो।

चं॰होगा खाना में	**हाथ पर चन्द्र का निशान**
1.	चन्द्र पर्वत से सूर्य को रेखा।
2.	प्यार रेखा भाग्य रेखा, चन्द्र से शुरू होकर वृहस्पति पर समाप्त हो
3.	मंगल नेक से रे ा चन्द्र को या चन्द्र रेखा मंगल नेक के बुर्ज पर खत्म हो।
4.	धन रेखा जब चन्द्र से शुरू हो या सिर रेखा के नीचे त्रिकोण हो। △
5.	दिल रेखा सूर्य के बुर्ज की जड़ तक ही समाप्त हो। चन्द्र के बुर्ज से रेखा सेहत रेखा में जा मिले।
6.	चन्द्र रेखा जब सिर रेखा को पार करके हाथ की बड़ी आयत में समाप्त हो।
7.	दिल रेखा जब कनिष्ठका की जड़ या बुध के बुर्ज पर समाप्त हो जाए, चन्द्र रेखा सिर रेखा से मिल कर खत्म हो जाए तो आयु खत्म मालूम होगी। ऐसी दशा में फकीरी रेखा नशेबाजी की रेखा, शराफत रेखा। सिर रेखा और दिल रेखा मिल जाएं। सेहत रेखा दिल रेखा को काटे।
8.	सिर रेखा के ऊपर △ त्रिकोण हो, मंगल बद चन्द्र को रेखा, पितृ रेखा या भाग्य रेखा चन्द्र के बुर्ज पर त्रिकोण △ सा बनाए। आयु रेखा या भाग्य रेखा दो शाखी हो जाये, कलाई की तरफ खाना नं॰ 9 के पास आपस में मिल कर।
9.	भाग्य रेखा चन्द्र के बुर्ज से कलाई पर शुरू हो।
10.	दिल रेखा मध्यमा की जड़ यानि शनि के बुर्ज तक हो। आयु रेखा दिल रेखा से मिल जाए, सिर, आयु और दिल रेखा तीनों मिल जाए।
11.	चन्द्र या दिल रेखा वृहस्पति को जा निकले मगर वृहस्पति तक न हो या हथेली पर खाना नं॰ 11 में (बचत) में ही खत्म हो।
12.	चन्द्र से रेखा हथेली पर खाना नं॰ 12 (खर्च) में समाप्त हो जाए।

शु॰होगा खाना में	हाथ पर शुक्र का निशान
1.	शुक्र के बुर्ज पर अंगूठे की जाड़ में सूर्य का सितारा, शुक्र से रेखा सूर्य के बुर्ज को हो, शुक्र का पतंग पूरा हो।
2.	अकेली शुक्र रेखा वृहस्पति के बुर्ज पर हो, प्यार रेखा, संतान रेखा, विवाह रेखा को काटे, भाईयों की रेखा ल बी और टेढ़ी वृहस्पति को हो जाए।
3.	गृहस्थ रेखा मंगल नेक से शुक्र के बुर्ज में अंगूठे की जड़ में झुक जाये, धन रेखा शुक्र के बुर्ज से शुरू होकर मंगल नेक पर खत्म हो।
4.	फकीरी रेखा, नशा रेखा, शराफत रेखा, सीधी लकीर लेटी हुई चन्द्र, शुक्र को मिलाये।
5.	सेहत रेखा या सूर्य की प्रगति रेखा शुक्र से चल कर बुध पर समाप्त हो।
6.	सेहत रेखा या सूर्य की प्रगति रेखा जब शुक्र से चल कर हथेली की बड़ी आयत खाना नं॰ 6 में समाप्त हो। शुक्र पर राहु का निशान हो।
7.	सेहत रेखा बुध से चल कर शुक्र की बुर्ज के जड़ में समाप्त हो या शुक्र के बुर्ज पर बुध का वृत हो।
8.	शुक्र से मंगल बद को रेखा।
9.	धन रेखा से कोई रेखा आकर शादी रेखा को काट दे।
10.	शुक्र का पतंग या शुक्र रेखा शनि के बुर्ज पर मध्यमा की जड़ में हो।
11.	शुक्र से रेखा हथेली पर खाना नं॰ 11 (बचत) पर खत्म हो।
12.	शुक्र से रेखा हथेली पर खाना नं॰ 12 में खर्च में समाप्त हो या हाथ में मच्छ रेखा हो।

मं०होगा खाना में	हाथ पर मंगल (नेक) का निशान
1.	सूर्य के बुर्ज पर चौकोर □ हो। मंगल नेक से रेखा सूर्य के बुर्ज पर चली जाए।
2.	गृहस्थ रेखा वृहस्पति के बुर्ज पर जा निकले।
3.	मंगल नेक और चौकोर या गृहस्थ रेखा मंगल नेक के अन्दर-अन्दर समाप्त हो।
4.	श्रेष्ठ धन रेखा या पितृ रेखा चन्द्र से शुरू होकर मंगल नेक पर खत्म हो।
5.	मंगल नेक से रेखा जब सेहत रेखा को काटे।
6.	मंगल नेक से रेखा जब आयत खाना नं० 6 में समाप्त हो।
7.	मंगल नेक से गृहस्थ रेखा जब शुक्र में समाप्त हो, मंगल नेक से रेखा बुध में जा निकले।
8.	मंगल नेक से रेखा मंगल बद को।
9.	भाग्य रे ॥ की जड़ में चौकोर □ हो।
10.	गृहस्थ रेखा शनि पर समाप्त हो।
11.	मंगल नेक से रेखा खाना नं० 11 (बचत) में हो।
12.	मंगल नेक से रेखा खाना नं० 12 (खर्च) में हो।

मं०(बद) होगा खाना में	हाथ पर मंगल (बद) का निशान
1.	मंगल बद से रेखा सूर्य के बुर्ज को।
2.	मंगल बद से रेखा वृहस्पति के बुर्ज को।
3.	मंगल बद से रेखा मंगल नेक हो।
4.	मंगल बद से रेखा चन्द्र को।
5.	मंगल बद से रेखा सेहत को काटे या कलाई रेखा हथेली के अन्दर घुस जाए।
6.	मंगल बद रेखा बड़ी आयत खाना नं 6 में हो।
7.	शुक्र से रेखा मंगल बद में या सिर रेखा मंगल बद से या सिर रेखा आखिर में दो रेखाई हो।
8.	सिर रेखा के ऊपर त्रिकोण △ हो।
9.	भाग्य रेखा की जड़ में त्रिकोण हो या <∧ हो।
10.	आयु रेखा दो शाखी <∧ मंगल बद से शनि के बुर्ज को रेखा चले।
11.	मंगल बद से रेखा खाना नं० 11 (बचत) में हो।
12.	मंगल बद से रेखा खाना नं० 12 (खर्च) में हो। काग् रेखा मंगल बद की पूरी निशानी होगी।

_बुध होगा खाना में	हाथ पर बुध का निशान
1.	सूर्य के बुर्ज से बुध के बुर्ज को रेखा।
2.	सिर रेखा जब आयु रेखा से जुदा होकर वृहस्पति के बुर्ज का रुख करे।
3.	सिर रेखा मंगल नेक में समाप्त हो।
4.	दिल रेखा और सिर रेखा मिल जाएं, सेहत रेखा दिल रेखा को काटे। सिर रेखा झुक कर चन्द्र के बुर्ज में समाप्त हो।
5.	सेहत या प्रगति रेखा कायम हो, ज़रूरी नहीं कि शुक्र के बुर्ज की जड़ तक हो। ठीक हालत यह होगी हथेली में खाना नं0 11 की जड़ तक ही हो।
6.	बुध से शुक्र तक सेहत रेखा कायम हो, सिर की श्रेष्ठ रेखा मौजूद हो।
7.	सिर रेखा की ल बाई सेहत रेखा की हद तक हो। शादी रेखाएं बुध पर गिनती में दो बराबर हो।
8.	सिर रेखा मंगल बद में समाप्त हो या आखिर पर दो शाखी हो।
9.	धन रेखा से रेखा बुध पर या भाग्य रेखा की जड़ में दायरा हो।
10.	बुध का दायरा शनि के बुर्ज पर हो।
11.	बुध से रेखा खाना नं० 11 (बचत) में हो।
12.	बुध से रेखा खाना नं० 12 (खर्च) में हो।

शनि होगा खाना में	हाथ पर शनि का निशान
1.	सूर्य का सितारा शनि के बुर्ज पर या सूर्य के बुर्ज पर शनि की ओर हो या शनि से रेखा सूर्य के बुर्ज को चली जाए।
2.	आयु रेखा वृहस्पति के बुर्ज से शुरू हो।
3.	शनि से रेखा आयु रेखा को काट कर मंगल नेक में, वृहस्पति रेखा शनि के बुर्ज पर हो।
4.	आयु रेखा, दिल रेखा आपस में मिल जाएं।
5.	शनि से रेखा सेहत रेखा को काटे।
6.	शनि से रेखा आयत खाना नं० 6 में जाए।
7.	आयु रेखा, सिर रेखा मिली हो या शनि से रेखा सिर रेखा में या शुक्र के बुर्ज पर हो।
8.	मंगल बद से रे ॥ शनि में शनि का मु यालय खाना नं० 8 होता है।
9.	भाग्य रेखा की जड़ पर त्रिशूल जमा हो। उर्ध रेखा हो।
10.	(अच्छा) शनि के बुर्ज पर अपनी रेखा।
11.	(बुरा) वृहस्पति, शनि के बुर्जों की मध्य की जगह खाना नं० 11 होगी।
12.	मच्छ रेखा, जब आयु रेखा या उर्ध रेखा मच्छली के मुंह में जाए।

राहु, केतु हाथ पर :- इन ग्रहों की कोई रेखा स्थापित नहीं है, सिर्फ निशान है जहाँ वह निशान मिले वह घर कुण्डली का होगा और निशान अगर न हो तो दोनों ग्रह अपने-अपने घर के होंगे अर्थात् राहु खाना नं० 12 में और केतु खाना नं० 6 में होगा। मच्छ रेखा के समय राहु, केतु उच्च घरों में यानि राहु नं० 3-6, केतु नं० 9-12 उच्च घर। काग् रेखा के समय यह दोनों नीच घरों के होंगे अर्थात् राहु नं० 9-12 और केतु नं० 3-6 में होगा।

हथेली पर खास निशान (मर्द दाईं हथेली और दाएँ भाग पर शुभ असर)

नं० निशान	ग्रह	प्रभाव	जिस खाने में होगा
1. मछली	शनि उत्तम	दौलतमंद, नेक, भाग्यवान।	शनि नं० 12 में
मछली	वृ० से मिला हुआ	घर का चिराग।	राहु 3-6, केतु 9-12 में
2. शेर	सूर्य और वृहस्पति	बहादुर, बेधड़क, बेरहम हो।	सूर्य नं० 2 में
3. साँप	शनि, राहु ज़हरीला न होगा	खज़ाने का स्वामी (साँप) हो। इच्छाधारी साँप (शेषनाग)।	दाएँ हाथ— शनि नं० 12 में बाएँ हाथ— शनि नं० 12 में
4. हाथी	राहु, मंगल	राजा समान हो।	राहु 3-6 में
5. कौवा	सूर्य, शनि	फरेबी	शनि नं० 1 में, राहु, केतु दोनों रद्दी हो
6. गाय, बैल	शुक्र, शनि	खेती से लाभ उठाएं।	शुक्र नं० 12 में
7. चूल्हा	मं० (बद) श०	चोर, फरेबी हो।	मंगल नं० 4, शनि नं० 1में
8. कमान	मं० (नेक) श०	बहादुर, हौसले वाला हो।	मंगल नं० 3 में
9. फूल	बुध उत्तम	धनी अच्छा जीवन हो।	बुध नं० 6 में
10. झण्डा	वृ० का डण्डा	धार्मिक विद्या में निपुण हो।	वृहस्पति नं० 7 में
11. छत्र	चन्द्र, वृहस्पति	धनी, ध्वजा धारी हो।	चन्द्र नं० 2, वृहस्पति नं० 4 में
12. पहाड़	सूर्य, बुध	राजा समान मन्त्री जो नेक राय दे।	सूर्य नं०1, बुध नं०7 में
13. गाँव	बुध, शनि	रईस हो।	शनि नं० 7, बुध नं० 11में
14. ढाल	मंगल (बद), वृ०	बुजदिल, दरिद्री हो।	मंगल (बद) नं० 4, वृहस्पति 8 में
15. तलवार	मंगल, सूर्य	शत्रु पर विजय पाए।	मंगल नं० 1में
16. घोड़ा	चन्द्र उच्च	दौलतमंद हो।	चन्द्र नं० 2 में
17. मंदिर	वृ० अपने घर	पूजापाठी, परहेज़गार, सात्त्विक हो।	वृहस्पति नं० 2 में
18. चौसर, चौपड़	शनि, केतु	माना हुआ खिलाड़ी हो।	शनि 6, केतु 10 में
19. कलम	बुध अपने घर	मीर मुंशी, कलम का धनी हो।	बुध नं० 7 में
20. अंकुश कान का दायरा कुंड़ल	मं० नेक वृ० शंख, चक्र,	तीनों निशान इकट्ठे हों तो बड़ा ही अमीर हो।	वृहस्पति नं० 1, मंगल नं० 1में वृहस्पति नं० 1 में

21. मुसल	बु०, वृ०, रा०	कंजूस हो।	बुध नं० 12 में
22. उखल	बुध, वृहस्पति	रोटी से भी तंग हो।	वृहस्पति नं० 7 में
23. चूल्हा	मंगल (बद)	तंग हाथ हो।	मंगल नं० 8 में
24. सूर्य पर बढ/पीपल	दोनों इकट्ठे ग्रह (वृ०, सू०)	राजा समान हो, दूसरों से टैक्स लें, मृत्यु अचानक हो।	खाना 1 में या 4 में
25. वृक्ष	शनि	जायदाद का स्वामी हो।	शनि नं० 10 में
26. चौकी	मंगल (नेक)	त त का मालिक हो।	मंगल (नेक) 10 में
27. रथगाड़ी	सूर्य, चन्द्र	राजा सवारी का सुख हो।	सूर्य नं० 4 में
28. तराजू	बुध, शुक्र	व्यापारी आढ़ती हो।	खाना नं० 12, 7 में
29. पालकी	वृहस्पति घर का	बहुत आराम पाने वाला हो।	वृहस्पति नं० 9 में
30. आँख	शनि उत्तम	धनी मगर फरेब से कमाए।	शनि नं० 11 में
31. नाक	बुध, वृहस्पति	मामूली व्यापारी हो।	बुध नं० 12 में
32. त्रिशूल	शनि	जीवन अच्छा हो।	शनि नं० 12 में
33. पद्म	शनि	1 से 4 तक राजा बड़ा, 5-8 तक महाराजा 8 से अधिक 9 या अधिक तो योगी।	
34. गदा गुर्ज	शनि	एक सरदार हुकूमत, 2-5 तो सिंहासन का स्वामी, परमात्मा का प्यारा परहेज़गार हो। पाँच से ज्यादा ब्रह्मज्ञानी होगा। पेशानी पर निशानों का असर सिर्फ आयु पर ही हो। जिसके बारे में आयु रेखा पर कहा गया है।	

नोट :- पद्म-(तिल छोटा स्याह चिन्ह होता है), बड़ा स्याह निशान हो तो पद्म होगा जो राहु होता है और सबसे बड़ा निशान स्याह लहुसन होगा। दाएँ हाथ की हथेली पर जो मुट्ठी बंद होने पर मुट्ठी के अन्दर छुप जाये तो धनी होगा। अगर हथेली की पीठ पर या बाएँ हाथ पर हो तो फ़िजूल खर्च, रुपये बर्बाद करें। जिस्म के सामने और दाएँ भाग पर शुभ असर हो। पीठ की तरफ और बाएँ भाग पर अशुभ असर हो।

बंद मुट्ठी व कुण्डली का आपसी स बन्ध :-

बुध (आकाश) वृहस्पति (हवा) को गांठ लगाकर बांध लेने वाली चीज़ को बच्चा गिना तो बच्चे की हर गांठ से नौ ग्रहों की मिलाई हुई चमक इंसानी भाग्य का खज़ाना हुई और इन सब गांठों से गठा हुआ सामुद्रिक शास्त्र सब भेदों को खोलने वाला होगा। जिसमें बंद मुट्ठी को ग्रह कुण्डली माना गया है। यह कुण्डली तमाम ग्रहों के अपने-अपने उच्च होने की नींव पर रखी गई है। बंद मुट्ठी का अंदर या बच्चे का साथ लाया हुआ अपने भाग्य का खज़ाना (सभी नर ग्रह), जवानी का हाल देखने के लिए खाना नं० 1, 4, 7, 10 देखें, बचपन और जन्म से पहले माता-पिता की हालत के लिए खाना नं० 9, 11, 12 देखें। अब संतान के जन्म दिन से अपना बुढ़ापा मरण देखने के लिए और बाकी रहने वालों का हाल देखने के लिए 2, 3, 5, 6 देखें। मौत बीमारी, मंदा हाल, मारक स्थान नं० 8 है जो पीछे को देखता है और मौत का फंदा है।

100%दृष्टि के खाने 1-4-7-10 होंगे:- साथ लाये भरे खज़ाने हैं।

50%दृष्टि के खाने 3-11-5-9 होंगे:- दूसरों की मदद से पैदा हुए हाल।

25%दृष्टि के खाने 2-6-8-12 होंगे:- रिश्तेदारों से ली गई चीज़ें।

फलादेश देखने का ढंग :-

राशियों के बगैर सिर्फ ग्रहों से हर घर का असर देखने का ढंग :-

देख लो कि हरेक ग्रह क्या है चाहे वह कुण्डली के किसी भी खाने में हो जैसा उस बैठे हुए ग्रह का कुण्डली के हिसाब से होगा वैसा ही उसका असर इस जगह दिए हुए खाने के नं० पर होगा। जैसे वृहस्पति शुक्र कुण्डली में रद्दी हो तो नीचे दी गई तालिका के अनुसार खाना नं० 2 पर भी उनका रद्दी प्रभाव होगा।

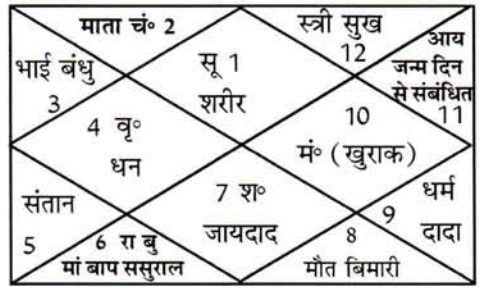

खाना	ग्रह
1.	बुध (सूर्य, मंगल, शनि)
2.	(वृहस्पति) शुक्र
3.	(बुध) मंगल शनि
4.	(वृहस्पति) सूर्य का चन्द्र से स बन्ध
5.	(वृहस्पति) सूर्य, राहु, केतु का स बन्ध
6.	(बुध) केतु, शुक्र
7.	(शुक्र) बुध
8.	(मंगल) शनि चन्द्र का स बन्ध
9.	(वृहस्पति) वृहस्पति
10.	(शनि) राहु, केतु के दाएँ-बाएँ मिले स बन्ध
11.	(शनि) वृहस्पति का साथ
12.	(राहु) वृहस्पति से शनि का स बन्ध

हर खाना नं० में दिए गए ग्रहों का जुदा-जुदा असर देखेंगे, जैसा असर हो वैसा ही असर उस ग्रह का दिए हुए खाने पर होगा। इधर-उधर राशियों के एक साथ हिसाब से लिखे हुए असूल के मुताबिक लिया हुआ असर, उस ग्रह का अपना और उस घर पर जहाँ पर वह बैठा है, होगा, मगर तालिका के ढंग का असर उस ग्रह का अपने बैठे हुए घर के अतिरिक्त ऊपर लिखित संबंधित खाना पर होगा।

नर ग्रह बोलते जिफत के घर में, स्त्री बोलते ताक में है।
बुध है बोलते 3-6 में, पापी नहीं बोलते 2 में है।

नर ग्रह कहीं भी बैठा हो मगर उसका उस बैठे हुए घर के होने वाले घर के अनुसार का असर कुण्डली के 2, 4, 6, 8, 10, 12, खानों में मिल रहा होगा। स्त्री ग्रहों का 1, 3, 5, 7, 9, 11 में होगा। पापी ग्रहों का हर घरों में, सिवाय खाना नं० 2 के जो सबका धर्म स्थान है, होगा।

आमतौर पर जिस कुण्डली में केतु कायम उच्च हो उसमें बुध, राहु नीच या नर ग्रह/स्त्री ग्रह से घिरा हुआ होगा (केतु प्रबल)। जिस कुण्डली में बुध कायम या उच्च हो उसमें केतु नीच दुर्बल होगा, लेकिन अगर दोनों ही एक हालत या ताकत के हों तो लड़का और लड़की (बुध, केतु) दोनों ही एक हो तो लड़का (केतु) समाप्त होगा। अगर केतु के घर नं० 6 में या केतु के साथ बुध हो तो केतु नीच होगा, बुध नीच न होगा या कि उच्च होगा अगर राहु खाना नं० 12 में बुध के साथ हो तो बुध नीच मगर राहु उच्च होगा।

कुण्डली के खाके की रेखाएँ :-

रेखा 'अ''ब' बुध की रेखा है जो कि शुक्र के बुर्ज पर जा निकलती है। हाथ पर यही रेखा सूर्य की प्रगति रेखा कहलाती है। रेखा 'स''द' वृहस्पति की रेखा है जो चंन्द्र से वृहस्पति में जा निकलती है और पितृ रेखा कहलाती है। रेखा 'अ''ब' के नीचे की ओर की त्रिभुज 'स''ब''अ' के खानों में सूर्य या बुध किसी भी घर (3 से 8) में इकट्ठे हों या अकेले-अकेले हों

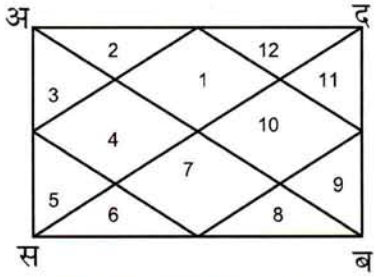

तो बुध मदद देगा सूर्य को उच्च होने में अर्थात् सूर्य नेक होगा (आयु के वास्ते खुद जातक व कबीला उसका)। रेखा 'अ''ब' के ऊपर की त्रिभुज 'ब''द''अ' के खानों में शनि या बुध चाहे इकट्ठे या जुदा-जुदा किसी भी घर में हों (1, 2, 9 से 12) बुध मदद देगा शनि को उच्च फल देने के लिए, शनि नेक होगा (खुद जातक की आयु के वास्ते मालिक व कबीला उसका)। ऊपर की त्रिभुज में अगर सूर्य हो जाये शनि वालों में और शनि हो जाये सूर्य वालों में तो ऊपर के हिसाब से बुध का संबंध न लेंगे और न ही इस हालत में सूर्य, शनि एक साथ हों। त्रिभुज 'द''अ''स' (1 से 5, 12) में खुद वृ० उच्च होगा और सूर्य को मदद देगा चाहे सूर्य किसी भी घर में हो। त्रिभुज 'स''ब''द' (6 से 11) में वृ० उच्च होगा और मदद देगा शनि को चाहे कुण्डली में शनि 1 से 5 या 12 किसी भी घर में हो (ऊपर अंक नं० 6, 12 का मुकाबला) 1 से 5 का वृहस्पति मदद सूर्य को भी और शनि को भी देगा। 6 से 11 का वृहस्पति सिर्फ शनि को मदद देगा। खाना नं० 12 का वृहस्पति सूर्य को भी और शनि को भी मदद देगा। (ऊपर के भाग 8, 9 का मुकाबला)। एक और दो का बुध मदद देगा शनि को। 3, 6 घर का बुध मदद देगा सूर्य को, खाना 9, 12 का बुध शनि को मदद देगा।

ग्रह कुण्डली की मकान कुण्डली के हिसाब से दुरुस्ती की जांच :-

कुण्डली के खाना नं० 9 वाले ग्रह का संबंध मकान और उस कुण्डली वाले का जद्दी मकान होगा और खाना नं० 1 के ग्रह की ऊपर लिखित तमाम शर्तें उसके अपने बनाए मकान में मौजूद होगी। अगर यह खाने खाली हों तो दूसरे मकानों से ग्रह कुण्डली की दुरुस्ती देखेंगे। कुण्डली के खाना नं० 1 से चल कर अगर 9 को जाए या मकान से बाहर निकले तो जिस तरफ दायाँ हाथ है उस तरफ मकान के सब ग्रह जो खाना नं० 1 से 8 तक हैं अपना सबूत देंगे। इसी तरह अगर नं० 12 खाने से चले, अपने आप को खाना नं० 9 की तरफ आते हुए गिने या या मकान में बाहर से दाखिल होने लगे तो खाना नं० 12 से 12, 11, 10 के ग्रह (दाईं तरफ मकान के) सबूत देंगे। भाग्य का ग्रह जिस घर में मिले उसी खाना नं० से संबंधित मकान से तमाम कुण्डली के ग्रह की दुरुस्ती मालूम होगी। मकान से ग्रह दृष्टि देखते वक्त जिस तरह भाग्य का ग्रह ढूँढ़ते हैं उसी तरह क्रम से हर खाने में से ग्रह ढूँढ़ेंगे। मकान की शक्ल जिस ग्रह से मिल जाए वो ग्रह कुण्डली में जिस तरह हो वह ठीक गिना जाएगा। जिस ग्रह का असर उसके संबंधित मकान में देखना हो उसे बुध की खाली जगह (मकान के बीच खाली जगह समझ कर) रख कर इस ग्रह के दाएँ-बाएँ की चीज़ों का असर देखेंगे।

कुडली में मकान

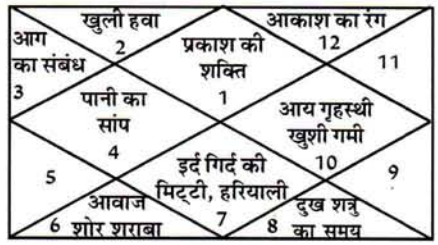

मकान में ग्रह और खाना किन दिशाओं में है

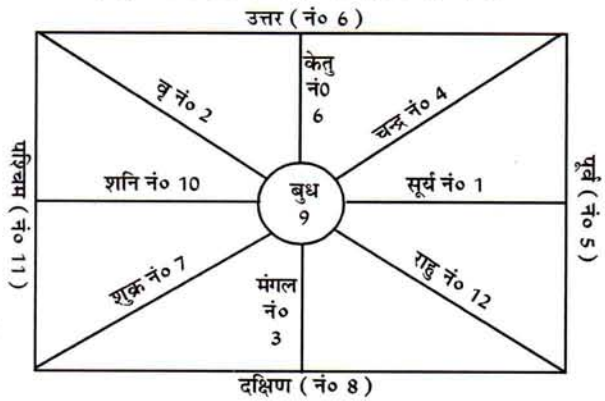

कुण्डली में मकान :- मकान के ग्रह और खाना किन दिशाओं में हैं :-

हर मकान किस ग्रह का हैं, मकान की शक्ल जिस स्थापित शक्ल से मिलती हो वो मकान उस ग्रह का होगा। मकान के हर कोने के दिए हुए ग्रह अपने-अपने मकान में अपना-अपना असर दिखा दिया करते हैं जैसे कि वे कुण्डली में बैठे हों। हरेक मकान में हर ग्रह की पक्की जगह कुण्डली में दी हुई जगह होगी। कुण्डली के खानों में मकान दृष्टि से संबंध रखने वाला खाना उस मकान का सेहन होगा। घर वाले ग्रह का अपने मकान के सेहन पर अपना हक होगा बेशक ग्रह का घर कुण्डली के बाद के नं० का ही क्यों न हो। लेकिन माने हुए खाने के ग्रह के असर का आखिरी फैसला करना मालिक मकान के अधिकार में होगा।

सेहन के मुंसिफ को नीचे के टेबल में देखेंगे :-

ग्रह (मुंसिफ सेहन का)	मं०	चं०	सू०,	बु०	चं०	वृ०	के०	शु०	मं० बद	सू०	श०	बु०रा०
खाना सेहन होगा	7	8	11	10	9	12	1	2	5	4	3	6
खाना नं० अगर घर हो	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

मकान कुण्डली के पक्के घर :-

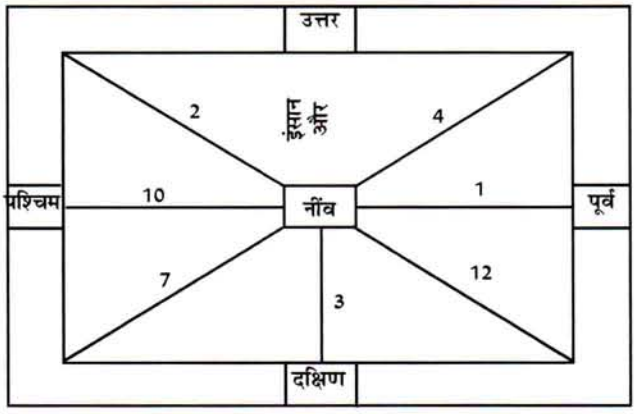

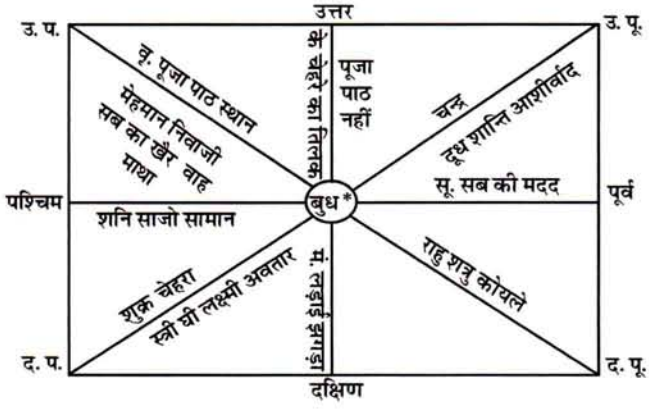

गंदगी की आवाज, सबको अपने दायरे में लेने वाला

मकान से टेवे की दुरुस्ती :- लाल किताब के मुताबिक जब खाना नं० 1 लग्न को देकर कुण्डली तैयार हो जाए तो मकान कुण्डली में तमाम ग्रहों की नकल कर लें। अब मकान कुण्डली में सब दिशाएँ स्थापित हैं। उदाहरणत: जन्म कुण्डली में सूर्य नं० 9 में हो तो मकान कुण्डली में सूर्य कुण्डली के मध्य में लिखा जाएगा, जिसकी दुरुस्ती के लिए उसके जद्दी मकान के मध्य में खुला सेहन या सूर्य की रोशनी पड़ती होगी। जन्म कुण्डली में शुक्र नं० 5 का होगा तो मकान कुण्डली में शुक्र पूर्व की दीवार का होगा, जो कच्ची मिट्टी की होगी या पशु (गाय) संबंध पूर्व दीवार के साथ होगा। इसी तरह सब ग्रहों की चीज़ होगी। एक बाप के कई बेटे मगर सब का जद्दी मकान एक है तो ज़रूरी नहीं कि हरेक टेवे से मकान कुण्डली बन सके या मिल सके।

उपाय :- बचाव सिर्फ यह है कि टेवे में मंदे ग्रह की चीज़ मकान में इस खाना नं० (मकान कुण्डली के हिसाब) कायम न होने दें, जिसमें कि वह जन्म कुण्डली में हो।

मकान की हालत मालूम होने से टेवा बनाने का ढंग :-

अपने मकान कुण्डली की शक्ल बनाएं। अब देखेंगे कि उस घर में कहाँ-कहाँ ग्रह बैठे है।

वृहस्पति =	***हवाई रास्ते दरवाज़े या सामान वृहस्पति;***
सूर्य =	रोशनी, धूप, राज हुकूमत, राज दरबार से स बन्धित चीज़ें;
चन्द्र =	चन्द्र की जानदार या बेजान चीज़ें;
शुक्र =	कच्ची दीवार या गाय या दूसरी शुक्र की चीज़ें;
मंगल =	खाने-पीने की चीज़ें;
बुध =	बुध की जानदार या बेजान चीज़ें;
शनि =	लकड़ियों की जगह वरना सामान शनि जिस जगह हो चाहे जानदार या बेजान;
राहु =	मकान की नाली या गंदा पानी, अगर यह नहीं तो धुआँ निकलने की जगह;
केतु =	रोशनदान अगर ज्यादा तरफ हों तो सबसे कम सं या जिस कमरे में हो उस जगह केतु होगा।

अगर जानदार बेजान दोनों चीज़ें मौजूद हों तो जानदार चीज़ों की जगह को बुनियाद रखें। जिस ग्रह की कोई चीज़ न हों वो ग्रह अपने पक्के घर का होगा। ऊपर के ढंग पर जब मकान कुण्डली बन जाये तो आम कुण्डली में नकल कर लें।

सारे परिवार की इकट्ठी कुण्डली :-

सूर्य जहाँ कि टेवे वाले की अपनी कुण्डली में हो कुर्रा हवाई (Atmosphere) एक महीने में जो दिन जितनी बार आए उसी खाना नं० में लें, जैसे एक महीने में सोमवार चार बार आए तो चन्द्र नं० 4 का होगा। लीप के साल में राहु, केतु अपने-अपने घर में यानि राहु नं० 6 में और केतु नं० 12 होगा। बाकी सालों में राहु नं० 12 और केतु नं० 6 होगा। जब कोई ग्रहचाल काम न दे तो बुनियादी रुकावट देखने के लिए यह कुण्डली काम देगी आम योग में नहीं। यह कुण्डली तभी प्रयोग करेंगे जब कोई और चीज़ न हो। सारे परिवार का हाल देखने के लिए इस टेबल को देखें। जहाँ कि बाबे (दादा) की कुण्डली में वृहस्पति लिखा हो उसी घर में टेवे वाले की कुण्डली में वृहस्पति लिखें, इसी तरह सब संबंधी के ग्रह रखेंगे। जो न हों या मर गए हों उन संबंधियों के संबंधित ग्रह टेवे वाले के अपने ही टेवे के अनुसार लेंगे। (एक साथ असर सात पुश्त तक का होगा। तीन ऊपर तीन ही नीचे मध्य में खुद टेवे वाला)।

वृहस्पति- दादा, चन्द्र- माता, शुक्र- स्त्री, मंगल- बड़ा भाई, बुध- बहन,
शनि- अपनी आयु का मगर संबंध में फर्क, राहु- ससुराल, केतु- लड़का,

अ यास कुण्डली :-

ग्रह ताकत के लिए सूर्य 9/9, वृहस्पति 6/9 आदि (बुध के हाल वाली होगी) और मकान कुण्डली के कोनों के हिसाब से जन्म कुण्डली का खाना निश्चित होगा।

फरमान नं० 13 :- वर्षफल

भाग्य का हाल साल बार देखने के लिए यह ज़रूरी बात है। जब जन्म वक्त, दिन, मास पक्की उम्र गुजरी मालूम न हो तो सामुद्रिक में दी हुई घटना की नींव पर बनाया हुआ वर्षफल अधिक ठीक होगा। घटनाओं का अर्थ खुशी या ग़मी की घटनाओं से हो। जैसे शादी का मास, दिन और साल किसी अपने खून के संबंधी की जन्म और मौत। नर ग्रहों, स्त्री ग्रहों या नपुंसक ग्रहों से संबंधित असर से किसी चीज़ की पक्की घटना। जन्म दिन बल्कि वार (नाम) मनुष्य किस ग्रह का है, वाला ग्रह या उसका पैतृक मकान जद्दी या अपना बनाया किस ग्रह का है (वाला ग्रह) जन्म कुण्डली में लग्न के खाने का ग्रह और लग्न खाली हो तो जन्म राशि के घर का स्वामी ग्रह यानि जो भी ठीक और पक्की घटना मिल सके, लेंगे।

उदाहरणतः किसी की शादी की घटना का पूरा पता मिल गया हो (अगर शादी कई बार हुई हो तो पहली शादी का दिन लें)। जो उसकी 17 साल की उम्र में हुई यानि 17 साल से शुक्र शुरू हो गया। अगर शादी का साल, महीना, दिन मालूम न हो और उस शादी की औरत का मरण दिन मालूम हो तो उसे शुक्र के समाप्त होने का साल लेंगे। हरेक ग्रह की दी हुई आम मियाद में शुक्र का समय तीन साल दिया है। 17 साल की आयु में शादी हुई तो उसका शुक्र का ग्रह 17 साल से शुरू हो गया मान कर तीन साल 19 साल की उम्र के आखिर तक रहा। अगर 17 साल की उम्र में स्त्री मरी तो 17 वें साल औरत के मरने के दिन शुक्र खत्म हुआ या औरत की मौत के दिन से तीन साल पहले चल कर मरने के दिन तक शुक्र का दौरा था। वर्षफल बनाने के लिए ग्रहों का चक्कर, यानि कौन ग्रह किस ग्रह के पहले या बाद अपना असर देगा, ढंग से दिया हुआ है। यानि वृहस्पति, सूर्य, चन्द्र आदि केतु तक ग्रहों की आम मियाद के सालों में गिनती और क्रम भी दिया है। सारे ही ग्रहों की कुल मियाद का योग 35 साल की उम्र का एक चक्र होगा जैसे किसी व्यक्ति का शुक्र आर भ हुआ 17 साल की उम्र में तो वर्ष का ग्रह होगा। निम्न क्रम से जितने साल तक ऊपर चलती या हो जाने वाली लिख दी है।

ग्रह	वृ०	सू०	चं०	शु०	मं०	बु०	श०	रा०	के०
वर्ष	6	2	1	3	6	2	6	6	3
	8–13	14–15	16–19	17–25	20–27	26–33	28–39	1–4 34–42	5–7 40–
	43–48	49–50	51–54	52–60	55–62	61–68	53–74	69–75–77	
	78–83	84–85	86	87–89	90–95	96–97	98–103	104–109	–110–112
	113–118	119–120							

पहचान कि वर्षफल ठीक है या नहीं :- उम्र के शुरू होने का पहला साल या अंक नं: 1 जिस खाने में हो वहां देखें कि सामने कौन से ग्रह का नाम है । ठीक हालत में अंक नं:1 के खाने वाला ग्रह इस कुण्डली के खाना नं: 9 या नं: 1 में होगा या वह व्यक्ति खुद उस ग्रह का होगा । जन्म दिन का ग्रह भी अंक नं: 1 के ग्रह का हो सकता है । इस जांच के लिए मंगल और शनि या सूर्य और बुध या सूर्य चंद्र एक ही गिने जायेगें । वरना दूसरा वर्षफल प्रयोग में लायेंगे ।अगर ऊपर कही हुई बातों से कोई भी ठीक न हो तो कोई और घटना लेकर वर्षफल बनायेंगे ।

12 साल तक बच्चे के भाग्य का कोई विश्वास नहीं और 70 साल के बाद अपनी किस्मत का कोई विश्वास नहीं । 35 साल में तमाम ग्रह चल कर एक चक्र पूरा करते हैं । हरेक ग्रह के असर के साल आदि सिर्फ उस व्यक्ति की आयु के हिसाब से दिये हैं जो व्यक्ति कि लाल किताब के हर ग्रह के ठीक स्थापित मियाद के अंदर-अंदर पैदा हुआ हो । नीचं दी हुई सारणी बताती है कि सामुद्रिक के हिसाब से आयु हर ग्रह की मुकर्रर है, वह ग्रह के कब जाहिर होगी। हरेक आम सांसारिक मनुष्य का हर ग्रहा चक्कर इस विद्या के हिसाब से होगा ।

सारी आयु पर प्रभाव (आम वर्षफल)

प्रभाव ग्रह	पहला चक्र	दूसरा चक्र	तीसरा चक्र	चौथा चक्र
शनि	1–6	36–41	71–76	106–111
राहु	7–12	42–47	77–82	112–117
केतु	13–15	48–50	83–85	118–120
वृहस्पति	16–21	51–56	86–91	
सूर्य	22–23	57–58	92–93	
चंद्र	24	59	94	
शुक्र	25–27	60–62	95–97	
मंगल	28–33	63–68	98–103	
बुध	34–35	69–70	104–105	

हर ग्रह के आम साधारण असर का समय :-

हर ग्रह के संबंधित जानदार चीजों पर उसका आम साधारण असर देखने के लिए टेवे वाले की उम्र के साल को उस अंक नं: पर भाग दें जिस खाना में कि वह ग्रह जन्म कुण्डली में बैठा हो । बचने वाले अंक के खानों नं: में यह ग्रह उस उम्र के साल में अपना असर करेंगे । खाना नं: 1 में बैठे हुए ग्रह की हालत में उम्र के हिस्से को 12 पर, खाना नं: 2 के लिए 11, नं: 3 की हालत में 10 पर भाग दें । बाकी सब घरों के ग्रहों के लिए अपने अपने खाना नं: में बैठे हुए अंकों पर भाग दें । सिफर बाकी बचने या बाकी बचे हुए वाला घर खाली होने की हालत में संबंधित ग्रह जन्म कुण्डली वाले घर में ही असर कर रहा गिना जाएगा । उदाहरणत: किसी की आयु का 25वां साल शुरू है और चंद्र टेवे में नं: 3 में है, 25 को तीन पर भाग दिया तो बाकी बचा 1 यानि इस टेवे का चंद्र जो नं: 3 का टेवे में था आयु के 25वें साल वहीं असर दे रहा होगा जो वर्षफल के हिसाब चंद्र खाना नं: 1 में दिया है । इसी तरह सब ग्रहों का हाल होगा ।

हर काम के लिए जन्म कुण्डली के खास खास खाने भी निश्चित है या कुण्डली के 12 ही खानों का जिन-जिन चीजों या

कामों से संबंध है वह सदा के लिए स्थित है(देखें पक्का घर नं: 1 से 12) । अब अगर संतान का हाल 25वें साल देखना हो तो देखें संतान के लिए कौन सा घर स्थित है यानि खाना नं: 5 खाली हो तो संतान के लिए केतु की हालत, जो भी वर्षफल के अनुसार होगी, लेंगे । इसलिए 25 को पांच पर भाग दिया बाकी बचा सिफर तो संतान का वही हाल लेंगे जो जन्म कुण्डली के मुताबिक खाना नं: 5 का हो । अगर 26वें साल देखना पड़े भी निश्चित तो संतान के संबंध में तो 26 को पांच से भाग दिया तो बाकी बचा 1 यानि वैसा ही हाल होगा जैसा कि टेवे में खाना नं: 1 का है ।

टेवे के 12 खानों में बैठे हुए ग्रहों की आपसी दृष्टि का दर्जा मुकर्रर है (देखें ग्रह दृष्टि) । उनकी आपसी दोस्ती दुश्मनी की मियादें भी मुकर्रर है । अत: जब कभी दो या दो से अधिक ग्रहों का असर उनकी दृष्टि या आपसी मुश्तरका होने के कारण मिल मिला कर इकट्ठा हो रहा हो तो उनके असर के समय और तासीर में अच्छी या बुरी हालत के दर्जे का फर्क जरूर होगा ।

खाना नं: 1 वैशाख, 2 ज्येष्ट आदि इस तरह 12 खानों की गिनती 12 महीनों में बनती है । इस तरह टेवे में जिन-जिन घरों में जो कोई भी ग्रह बैठा हो जब कभी भी उन घरों में जो कोई भी ग्रह बैठा हो जब कभी भी उन घरों में कोई वर्षफल के अनुसार आयेगा वो अपना असर उस खाना नं: के लिए निश्चित किए हुए महीने में दिखाएगा । जैसे टेवे में नं: 2 में कोई ग्रह बैठा हो तो उसका अर्थ है कि नं: 2 का असर ज्येष्ठ में होगा । जब वर्षफल के मुताबिक किसी भी साल(वहां खाना नं: 2 में बुध आ गया जो पिता के लिए अशुभ है)सिर्फ ज्येष्ठ के महीने में विशेष है ।

जन्म कुण्डली के अनुसार जो घर खाली होंगे उन घरों में वर्षफल के अनुसार जो ग्रह अपना मुकर्रर फल उस महीना नं: में देंगे जिस नं: में कि सूर्य वर्षफल के मुताबिक बैठा हो । जैसे यदि खाना नं:4 टेवे में खाली हो और वर्षफल के अनुसार मंगल नं: 4 में आ जाये और सूर्य नं: 8 में आ जाये तो मंगल नं: 4 का दिया हुआ फल जन्म दिन से 8 वें महीनें में जाहिर होगा।

उम्र के साल का शुरु यानि वर्ष का शुरु और आखिर देसी महीनों की तारीख के हिसाब से लेगें। (क्योंकि सूर्य की बदली पहली वैशाख से है) क्योंकि अंग्रेजी व देसी तारीखें आपस में नहीं मेल खाती। पक्का असूल (सूर्य की नींव) पर ज्योतिष चलता है। सूर्य को एकम के हिसाब से खाना नं० 1 में लाकर बाकी सब महीनों को भी उसी तरह बदल लें। हरेक ग्रह भी सिर्फ अकेला इसी तरह धुमाया जा सकता है। यानि जितने नं० के खाने में कोई ग्रह टेवे में बैठा हो, देखें कि जिस साल का हाल देखना है, वह उम्र का कौन सा साल है। उस उम्र के साल के अकं को उस नं० पर भाग दें जिससे कि वह ग्रह बैठा है। (टेवे में) बाकी जो बचे उस खाना नं० में उस साल (जितने साल की आयु का हाल देखा जा रहा है) वह ग्रह असर करता और बोल रहा होगा। सिफर बाकी बचने की हालत में उसी घर (टेवे में जस नं० पर है) में असर दे रहा होगा। उदाहरणत: किसी टेवे में है सूर्य नं० 11 में उम्र का 52 साल चल रहा है। 52 को 11 पर भाग दिया तो शेष बचा 8, अब 52 साल की उम्र में सूर्य नं० 8 में गिना जायेगा और बाकी ग्रह, जैसा कि वो टेवे में हो, रख कर सूर्य से संबंधित चीजों का असर देखा जायेगा। इसी तरह हरेक ग्रह का हाल देखते जायें। यह याल रहे कि जिस ग्रह से संबंधित चीजों का हाल देखना है सिर्फ उसी ग्रह को घुमायें। बाकी सब ग्रह उसी तरह टैवे के खानों में होगें। इस असूल पर तमाम ही ग्रहों को अकेला अकेला करके जो कुंडली बने तो उस साल की हालात का जवाब देगी।

जन्म कुण्डली में, जो चाहे ज्योतिष कुंडली के मुताबिक बना कर लगन को नं० 1 देकर बाकी खाने पूरे किये हों और चाहे सामुद्रिक शास्त्र से बनाई हो पूरा करके, आगे दी हुई लिस्ट के मुताबिक अमल करें।

सालाना हालात के लिए दिये हुआ वर्ष फल में :-

मासिक हालात के लिए सूर्य को चलावें	**हालात के लिए को चलावें**
रोजाना ===== मंगल =====	**डिग्री ===== चन्द्र =====**
घंटों ===== वृहस्पति =====	**हफ्तों ===== शुक्र =====**
मिनटों ===== शनि =====	**रातों ===== राहु =====**
सैकिंडों ===== बुध =====	**दिनों ===== केतु =====**
वर्ष की कुण्डली को घूमावें	

एक साला बच्चे के लिए भी यही असूल होगा।

उदाहरण जन्म कुण्डली

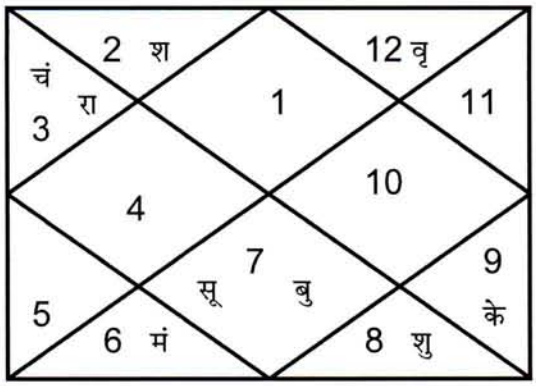

44वें साल का वर्षफल

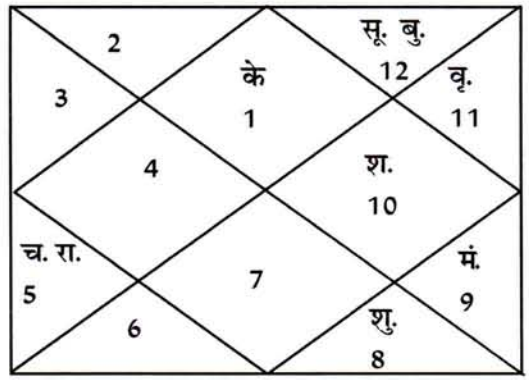

वर्षफल का असली असर उस मास में होगा जिस खाना नं० में उस साल सूर्य बैठा हो। (महीना जन्म दिन से गिने) एक साल के जिस खाने में सूर्य बैठा हो उस खाने को उम्र के महीने का अंक देकर सारी कुडली पूरी कर दें। महीने का शुरु जन्म वक्त से लेगें। सूर्य की तबदीली क्योंकि एक बैशाख से होती है अत: जन्म दिन देसी महीनों के हिसाब से ठीक गिना है। अंग्रजी के हिसाब से सूर्य के असर में फर्क हो सकता है। (जैसे खाना नं० 1 वैशाख-अप्रैल मई, नं० 2 ज्येष्ठ मई- जून आदि)।

उदाहरण:-

जातक जिसकी जन्म कुण्डली दी गई है उसका 11-5-1941 की शाम 5 बजकर 43 मिनट के बाद 44 वां साल शुरु हुआ। जिसका 44 वां वर्षफल साथ में अगले पृष्ठ पर बना है। 11-9-1941 अगले 5-43 बजे के बाद पांचवा महीना शुरु, सूर्य बैठा होने उदाहरण 44 साल का वर्ष फल वाले घर को खाना नं० 5 दिया तो वर्ष फल कुंडली को मास कुंडली में बदला। इस प्रकार पांचवें महीने का 17 वां दिन पहिले दिन से 12 वें दिन तक इस मास कुंडली के जिस जगह मंगल बैठा हो उस घर को 1 से गिन कर 17 वें नं० यानि नं० 6 दिया तो दिन कुंडली बनी। पाचवें महीने के 17 वें दिन का 23 वां घंटा रोजाना कुंडली में वृ० वाले घर को 1 गिना कर 23 वां नं वृ० को दिया तो घंटा कुंडली बनी। 21 वें मिनट के लिए घंटों वाली कुडली से 21 वां मिनट शनि को चलाया गया तो मिन्ट कुंडली बनी। 28 वे सैकिंड के लिए मिनटों वाली कुंडली से अब बुध को चलाया गया तो सैंकेड कुंडली बनी। सैकिंडों वाली कुंडली से 53 डिग्री जब चन्द्र को चलाया गया तो बनी डिग्री कुंडली। 44 वां साल की कुंडली की रातों के हाल के लिए राहु को चलाया गया तो यानि उसे खाना नं० 2 या अपने मु यालय पर कर दिया तो रात्रि कुंडली बनी। राहु की तरह अब केतु खाना नं० 2 में दिन के लिए कर दिया तो दिन कुंडली बन गई।।

मास कुण्डली

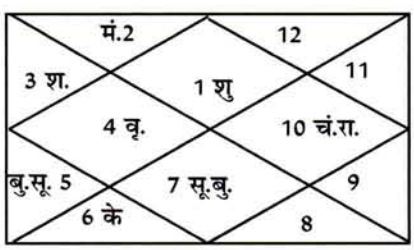

दिन कुण्डली

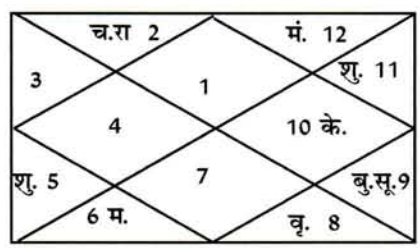

घण्टा कुण्डली

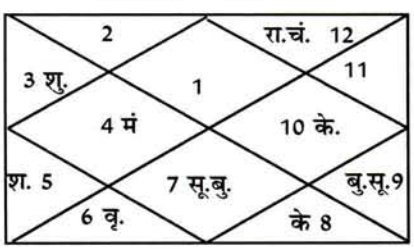

मिनट कुण्डली

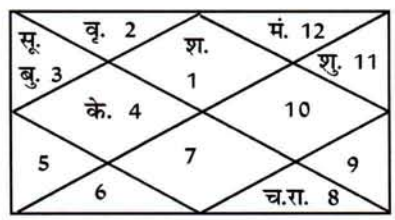

सैकिण्ड कुण्डली

डिग्री कुण्डली

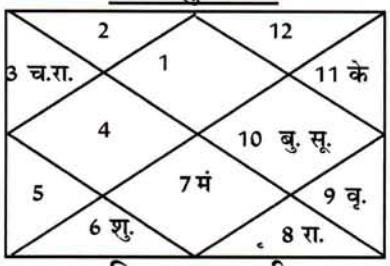

रात्रि कुण्डली

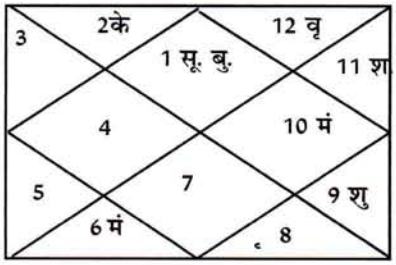

दिवस कुण्डली

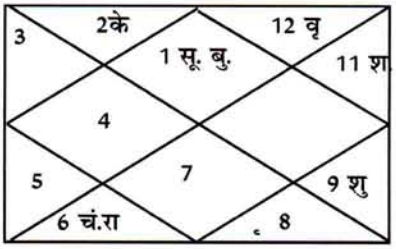

फरमान नं: 14 कुण्डली के प्रकार

शत्रु[1] बाहम घर 10 वें बैठे,
7 शनि हो सूर्य चौथे,
बुध छटे रवि 1-5-11,
खाली मुट्ठी[2] या बुध पापी[3],
11 शनि या साथ गुरु का,
पिछले जन्म का साधु होगा,
गुरु शुक्र हो टेवे मिलते,
प्रभाव जन्म न लेगें पिछला,
टेवा होता ग्रह अंधा हो।
आधा अंधा नहौराता हो।
टेवा बालिग ग्रह होता हो।
वहां, असर नाबालिग देता हो।
पाप चन्द्र 10 चौथे हो।
धर्मी टेवा सुख देवे जो।
चलता जन्म खुद अपना हो।
साल गुजरते12 जो।

1. बुध के साथ वृहस्पति, चन्द्र या मंगल
2. खाना 1-4-7-10 खाली।
3. पापी (राहु केतु शनि तीनों के लिए)

शुक्र के साथ वृहस्पति या सूर्य या चन्द्र या राहु हो।
शनि के साथ सूर्य या चन्द्र या मंगल हो।
केतु के साथ सूर्य या चन्द्र या मंगल हो।
राहु के साथ सूर्य या चन्द्र या मंगल या वृहस्पति हो।

अंधे ग्रहों के मंदे असर के समय केतु का उपाय या केतु (लड़का) केतु से संबंधित चीजों के द्वारा या संध्या के समय किये काम शुभ होगें। एक ही समय 10 अंधों को ौरायत खुराक देने से नं० 10 की ज़हर दूर होगी। नहौराता वाले टेवे में नेक ग्रहों के संबंधित काम रात के वक्त और मंदे ग्रहों के संबंधित काम दिन के वक्त करने मदद देगें। बालिग टेवे वाले की हालत में 12 साला उम्र के बाद पिछले जन्मों के धोखे धक्के का डर न होगा। धर्मी टेवे वाले हरेक के लिए मददगार और सुख देने वाला हुआ करता है। नाबालिग टेवे वाले को दूसरों की सहायता लेकर चलते रहना मदद देगा। क्योंकि मनुष्य का बच्चा तो नाबालिग से बालिग हो जायेगा मगर नाबालिग टेवा सारी उम्र नाबालिग टेवा गिना जायेगा।

टेवा पुरुष का प्रबल होगा या स्त्री का:-

पुरुष का टेवा स्त्री के टेवे को ढांप लेता है। मगर कई बार आपसी बेलिहाजी भी हुआ करती है। शादी से पहले स्त्री अपनी टेवे पर चलती रही शादी के वक्त् से पुरुष के टेवे का असर दोनों के भाग्य पर हावी होता रहा। अगर किसी कारण से पुरुष का साथ छूट गया, दो मर्दो की एक स्त्री बन गई, तो फिर वही स्त्री अपना टेवा किस्मत के मैदान में ले आई। इसी तरह जब तक बच्चा था तो माता पिता के भाग्य का असर अपने पिछले कर्मो का फल सहायक हुआ। शादी हुई स्त्री का टेवा राशि फल की तरह सहायक होता रहा। यदि किसी कारण स्त्री का साथ छूट गया और कोई और साथ हो या तो उसके अनुसार भाग्य चल

पड़ा। संक्षेप में स्त्री और पुरुष की जोड़ी का मिलना और उनके अनुसार भाग्य के मैदान में फर्क जरुर देगा। लेकिन कई बार बगैर टूटे हुए भी या बगैर मिले मिलाये भी भाग्य की दोरंगिया देखनें में आयेगी मगर कम और अगर देखने में आयेगी तो उस वक्त आयेगी जब ऐसी जोड़ी की खुराक में शनि की चीजों की लहरें या पितृ ऋण के समुद्र का तूफान ठांठे मार रहा होगा।

फरमान नं:- 15 फलादेश देखने का ढंग

एक ही ग्रह- रेखा को देखकर किया गया फैसला कोई फैसला नहीं होता, बल्कि वहम पैदा करने का कारण और धोखे में रख लेने वाला हुआ करता है। प्राचीन ज्योतिष के अनुसार बनी हुई जन्म कुण्डली को लेगें और उसके सभी अंको राशियों को मिटा कर मगर ग्रहों को उन्हीं में जैसे कि वह कुंडली में दिये है छोड़ कर अब पुरानी कुंडली को नं० से शुरु करके 12 की क्रम में अंक लेगें जिससे वह लाल किताब में फलादेश देखने के लिए कुंडली तैयार हो जायेगी। इक्टठे बैठे ग्रहों के लिए उन ग्रहों का अकेले अकेले और मुश्तरका हाल देखेगें। जुदा जुदा और मुश्तरका देखने का कारण यह है कि कई बार जुदे जुदे तो अच्छे नज़र नहीं आते हैं मगर इक्ट्ठे होने पर उल्ट नतीज़ा देगें। जैसे मंगल नं० 8 या बुध नं० 8 का जुदा जुदा का फलादेश बुरा लिखा है मगर मंगल बुध इक्ट्ठे नं० 8 में हो तो उत्तम है।

किताब में जो ग्रुप फलादेश दिया है उनसें जो बाकी बच जाये तो अलग अलग ग्रहों में दिया फलादेश देखे। अपनी ही मर्जी से फलादेश न बनायें जैसे। यदि छ: ग्रह इक्ट्ठे हो तो पहिले 6 का इक्ट्ठा फिर 5,4,3,2 आदि के ग्रुप बना कर फल देखें। फिर अकेले अकेले 6 ही ग्रहों का फल देखें।

फलादेश की बुनियाद का आम असूल:-

घर कुण्डली में घर की मालकीयत के हिसाब से जो कोई और घर होता है या यों कहें कि अगर कुण्डली के हर खाना नं० को एक मकान फर्ज कर लें तो उस मकान की जमीन तह जमीन में तो उस खाना के मालिक ग्रह, घर का स्वामी की तासीर होगी और इस ईमारत पर उस ग्रह का जो उस खाना के लिए पक्का घर मुकर्रर है, असर हो रहा होगा। इस तरह उन दो ग्रहों की आपसी दोस्ती दुश्मनी उस खाना नं० के फलादेश में फर्क डालती है। अगर दोनों मित्र तो ठीक, अगर शत्रु तो घर बरबाद। इसके इलावा तीसरा संबंधी और भी बन जाता है यानि वह ग्रह जो उस खाना नं० का पहले कहे हुए कारणों से तो कोई संबंध हीं रखता मगर ग्रह चाल के कारण के हिसाब से वहां आ निकलता है। अब यह आया हुआ ग्रह खुद अपनी मित्रता शत्रुता से इन दोनो ग्रहों के फलादेश में फर्क डाल देगा। उदाहरण: खाना नं० 11 में घर की मालकियत के बतौर शनि का संबंध है और वो पक्का घर वृहस्पत का है। अब अगर उस खाना नं० 11 में राहु आ बैठे तो असर में तबदीली इस प्रकार होगी। तह जमीन का स्वामी शनि है और यह घर 11 संसार का आर भ, मनुष्य की आय, संसार में आना सब को स्त्रोत है जिसकी ईमारत पर वृहस्पति का कब्जा है। और उस खाना नं० 11 को वृहस्पत ने धर्म अदालत के लिए मुकर्रर कर दिया है। या यों भी कह सकते हैं कि खाना नं० 11 की जमीन शनि की होने के कारण लोहे या पत्थर या सफेद संगमरमर या और काई शनि की चीज़ की है, इस पर मकान जो बना है वह वृहस्पति की वजह से खूब चमक रहा है। मगर राहु का राज्य हो जाने से जो राहु शनि का ऐजेंट सिर्फ वदी का संबंध है राहु के कारण इस मकान में ऐसा भूंचाल आया कि सोने का रंग (वृहस्पति) नीला हो गया और वह मकान कहां गया यह भी पता न चला। वृहस्पति नष्ट हुआ राहु का मंदा धुआं हर ओर भर गया। अत: राहु नं० 11 में लिख है कि वृ० कायम करना (सोना पहनना) पीला धागा पहनना जरुरी है क्योंकि राहु की कृपा से वृ० नष्ट हो चुका होगा, इस असूल पर सभी ग्रहों का फलादेश विषय की असलीयत को समझा देगा। हर जगह समय अनुसार हरेक ग्रह का फलादेश सही सही ढंग से समझ लेगा।

****

वर्ष फल चार्ट

आयु	/घर	/ घर/	/घर/	/घर/	/घर/	/घर/	/घर /	/घर/	/ घर/	/घ/र/	/घर/	/घर
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1	1	9	10	3	5	2	11	7	6	12	4	8
2	4	1	12	9	3	7	5	6	2	8	10	11
3	9	4	1	2	8	3	10	5	7	11	12	6
4	3	8	4	1	10	9	6	11	5	7	2	12
5	11	3	8	4	1	5	9	2	12	6	7	10
6	5	12	3	8	4	11	2	9	1	10	6	7
7	7	6	9	5	12	4	1	10	11	2	8	3
8	2	7	6	12	9	10	3	1	8	5	11	4
9	12	2	7	6	11	1	8	4	10	3	5	9
10	10	11	2	7	6	12	4	8	3	1	9	5
11	8	5	11	10	7	6	12	3	9	4	1	2
12	6	10	5	11	2	8	7	12	4	9	3	1
13	1	5	10	8	11	6	7	2	12	3	9	4
14	4	1	3	2	5	7	8	11	6	12	10	9
15	9	4	1	6	8	5	2	7	11	10	12	3
16	3	9	4	1	12	8	6	5	2	7	11	10
17	11	3	9	4	1	10	5	6	7	8	2	12
18	5	11	6	9	4	1	12	8	10	2	3	7
19	7	10	11	3	9	4	1	12	8	5	6	2
20	2	7	5	12	3	9	10	1	4	6	8	11
21	12	2	8	5	10	3	9	4	1	11	7	6
22	10	12	2	7	6	11	3	9	5	1	4	8
23	8	6	12	10	7	2	11	3	9	4	1	5
24	6	8	7	11	2	12	4	10	3	9	5	1
25	1	6	10	3	2	8	7	4	11	5	12	9
26	4	1	3	8	6	7	2	11	12	9	5	10
27	9	4	1	5	10	11	12	7	6	8	2	3
28	3	9	4	1	11	5	6	8	7	2	10	12
29	11	3	9	4	1	6	8	2	10	12	7	5
30	5	11	8	9	4	1	3	12	2	10	6	7
31	7	5	11	12	9	4	1	10	8	6	3	2
32	2	7	5	11	3	12	10	6	4	1	9	8
33	12	2	6	10	8	3	9	1	5	7	4	11
34	10	12	2	7	5	9	11	3	1	4	8	6
35	8	10	12	6	7	2	4	5	9	3	11	1
36	6	8	7	2	12	10	5	9	3	11	1	4

37	1	3	10	6	9	12	7	5	11	2	4	8
38	4	1	3	8	6	5	2	7	12	10	11	9
39	9	4	1	12	8	2	10	11	6	3	5	7
40	3	9	4	1	11	8	6	12	2	5	7	10
41	11	7	9	4	1	6	8	2	10	12	3	5
42	5	11	8	9	12	1	3	4	7	6	10	2
43	7	5	11	2	3	4	1	10	8	9	12	6
44	2	10	5	3	4	9	12	8	1	7	6	11
45	12	2	6	5	10	7	9	1	3	11	8	4
46	10	12	2	7	5	3	11	6	4	8	9	1
47	8	6	12	10	7	11	4	9	5	1	2	3
48	6	8	7	11	2	10	5	3	9	4	1	12
49	1	7	10	6	12	2	8	4	11	9	3	5
50	4	1	8	3	6	12	5	11	2	7	10	9
51	9	4	1	2	8	3	12	6	7	10	5	11
52	3	9	4	1	11	7	2	12	5	8	6	10
53	11	10	7	4	1	6	3	9	12	5	8	2
54	5	11	3	9	4	1	6	2	10	12	7	8
55	7	5	11	8	3	9	1	10	6	4	2	12
56	2	3	5	11	9	4	10	1	8	6	12	7
57	12	2	6	5	10	8	9	7	4	11	1	3
58	10	12	2	7	5	11	4	8	3	1	9	6
59	8	6	12	10	7	5	11	3	9	2	4	1
60	6	8	9	12	2	10	7	5	1	3	11	4
61	1	11	10	6	12	2	4	7	8	9	5	3
62	4	1	6	8	3	12	2	10	9	5	7	11
63	9	4	1	2	8	6	12	11	7	3	10	5
64	3	9	4	1	6	8	7	12	5	2	11	10
65	11	2	9	4	1	5	8	3	10	12	6	7
66	5	10	3	9	2	1	6	8	11	7	12	4
67	7	5	11	3	10	4	1	9	12	6	8	2
68	2	3	5	11	9	7	10	1	6	8	4	12
69	12	8	7	5	11	3	9	4	1	10	2	6
70	10	12	2	7	5	11	3	6	4	1	9	8
71	8	6	12	10	7	9	11	5	2	4	3	1
72	6	7	8	12	4	10	5	2	3	1	11	9
73	1	4	10	6	12	11	7	8	2	5	9	3
74	4	2	3	8	6	12	1	11	7	10	5	9
75	9	10	1	3	8	6	2	7	5	4	12	11
76	3	9	6	1	2	8	5	12	11	7	10	4
77	11	3	9	4	1	2	8	10	12	6	7	5

78	5	11	4	9	7	1	6	2	10	12	3	8
79	7	5	11	2	9	4	12	6	3	1	8	10
80	2	8	5	11	4	7	10	3	1	9	6	12
81	12	1	7	5	11	10	9	4	8	3	2	6
82	10	12	2	7	5	3	4	9	6	8	11	1
83	8	6	12	10	3	5	11	1	9	2	4	7
84	6	7	8	12	10	9	3	5	4	11	1	2
85	1	3	10	6	12	2	8	11	5	4	9	7
86	4	1	8	3	6	12	11	2	7	9	10	5
87	9	4	1	7	3	8	12	5	2	6	11	10
88	3	9	4	1	8	10	2	7	12	5	6	11
89	11	10	9	4	1	6	7	12	3	8	5	2
90	5	11	6	9	4	1	3	8	10	2	7	12
91	7	5	11	2	10	4	6	9	8	3	12	1
92	2	7	5	11	9	3	10	4	1	12	8	6
93	12	8	7	5	2	11	9	1	6	10	3	4
94	10	12	2	8	11	5	4	6	9	7	1	3
95	8	6	12	10	5	7	1	3	4	11	2	9
96	6	2	3	12	7	9	5	10	11	1	4	8
97	1	9	10	6	12	2	7	5	3	4	8	11
98	4	1	6	8	10	12	11	2	9	7	3	5
99	9	4	1	2	6	8	12	11	5	3	10	7
100	3	10	8	1	5	7	6	12	2	9	11	4
101	11	3	9	4	1	6	8	10	7	5	12	2
102	5	11	3	9	4	1	2	6	8	12	7	10
103	7	5	11	3	9	4	1	8	12	10	2	6
104	2	7	5	11	3	9	10	1	6	8	4	12
105	12	2	4	5	11	3	9	7	10	6	1	8
106	10	12	2	7	8	5	3	9	4	11	6	1
107	8	6	12	10	7	11	4	3	1	2	5	9
108	6	8	7	12	2	10	5	4	11	1	9	3
109	1	9	10	6	12	2	7	11	5	3	4	8
110	4	1	6	8	10	12	3	5	7	2	11	9
111	9	4	1	2	5	8	12	10	6	7	3	11
112	3	10	8	9	11	7	4	1	2	12	6	5
113	11	3	9	4	1	6	2	7	10	5	8	12
104	5	11	3	1	4	10	6	8	12	9	7	2
115	7	5	11	3	9	4	1	12	8	10	2	6
115	2	7	5	11	3	9	10	6	4	8	12	1
117	12	2	4	5	6	1	8	9	3	11	10	7
118	10	12	2	7	8	11	9	3	1	6	5	4
119	8	6	12	10	7	5	11	2	9	4	1	3
120	6	8	7	12	2	3	5	4	11	1	9	10

वृहस्पति